The Epistles of John and Jude
(Hindi Edition)

A Devotional Look at the New Testament
Letters of John and Jude

F. Wayne Mac Leod

Light To My Path Book Distribution
Sydney Mines, NS, CANADA B1V 1Y5
www.ltmp.ca/store

The Epistles of John and Jude (Hindi Edition)

Copyright © 2013 by F. Wayne Mac Leod

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means without written permission of the author.

All Scripture quotations, unless otherwise specified, are taken from the New International Version of the Bible (Copyright © 1973, 1978, 1984 International Bible Society. Used with permission of Zondervan Bible Publishers, All rights reserved.)

Scripture quotations marked “NKJV”” are taken from the New King James Version®, Copyright © 1982 by Thomas Nelson Inc. Used by permission. All rights reserved.

Scriptures marked KJV are from the King James Version of the Bible

Special thanks to the proof readers and reviewers without whom this book would be much harder to read.

विषय सूची

प्राक्कथन 5

यूहन्ना की पत्रियां

1. जीवन का वचन 9
1 यूह. 1:1-4

2. संगति के लिये पहली रुकावट, पाप 15
1 यूह. 1:5-2:6

3. संगति के लिये दूसरी रुकावट: टूटे संबंध 21
1 यूह. 2:7-14

4. संगति के लिये तीसरी रुकावट: संसार से प्रेम करना 27
1 यूह. 2:15-17

5. संगति के लिये चौथी रुकावट: पुत्र का इंकार 33
1 यूह. 2:18-27

6. सत्य विश्वास की प्रथम जांच: धार्मिकता 39
1 यूह. 2:28-3:10

7. सत्य विश्वास की दूसरी जांच: प्रेम 45
1 यूह. 3:11-18

8. सत्य विश्वास की तीसरी जांच: नवीन हृदय 51
1 यूह. 3:19-24

9. सत्य विश्वास की चौथी जांच: आत्मा 57
1 यूह. 4:1-6

10. परमेश्वर का प्रेम मुझ में 63

1 यूह. 4:7-21

11. पुत्र पर विश्वास 69

1 यूह. 5:1-12

12. पाप, जिसका परिणाम मृत्यु 77

1 यूह 5:13-21

13. प्रेम में चलो 85

2 यूह. 1-6

14. शिक्षा में बने रहो 91

2 यूह. 7-13

15. गयुस 97

3 यूह. 1-14

यहूदा

16. विश्वास के लिये स्पर्धा 105

यहूदा 1-7

17. अधर्मियों पर हाय 113

यहूदा 8-16

18. अपने को संभालो 121

यहूदा 17-25

प्राक्कथन

यूहन्ना की पहली पत्री लिखी गई थी ताकि हम जानें कि अनन्त जीवन हमारा है। इस में प्रेरित यूहन्ना हमसे उन रुकावटों की बात करता है जो विश्वासी व प्रभु के मध्य आ सकती हैं। यूहन्ना हमें कुछ जांचों की शृंखला में ले जाता है इस निर्धारण के लिये कि हम सत्य विश्वासी हैं या नहीं। वह विश्वास को उसके आधारभूत अवयवों तक उबालता है और हमें चुनौती देता है कि हम अपने जीवनों में गहराई देखें कि क्या विश्वास सत्य है। यूहन्ना की दूसरी व तीसरी पत्रियां व्यक्तिगत हैं जिनको उन विश्वासियों को लिखा गया जो जीवन के विशेष संघर्षों से गुज़र रहे थे ताकि उन्हें प्रोत्साहन व आशीष मिले। जबकि 1 यूह. हमें सिखाता है कि हम प्रभु में अपने भाई बहनों के साथ किस प्रकार संगति में रहें। यूहन्ना इसकी व्यावहारिकता को 2 यूह. व 3 यूह. में दिखाता है।

यूहदा की पत्री एक विशेष समस्या के लिये लिखी गई जो झूठे शिक्षकों के संबंध में थी, जो कलीसिया में आ गये थे, और विश्वासी होने का दावा करते थे। ये लोग कलीसिया में विश्वासियों को भटका और भरमा रहे थे। यहूदा अपने पाठकों को परामर्श देता है कि विश्वास के लिये स्पर्धा करें और सलाह देता है कि मसीही जीवन कैसे जियें, इस संसार में जो झूठी मसीहत से भरा है।

इस टिप्पणी का उद्देश्य यह नहीं कि इसे एक ही बार में पढ़ दिया जाये। हर उस पद को प्रत्येक अध्याय के पढ़ने के लिये समय निकालें,

टिप्पणी को पढ़ने से पहले। प्रभु को आप से बातें करने दें। कोई भी पाप या कमी है उसका अंगीकार करें। किसी भी प्रोत्साहन के लिये उसका धन्यवाद करें। इस टिप्पणी का तात्पर्य परमेश्वर के वचन का स्थान लेना नहीं है। इसका उद्देश्य है समझ प्रदान करना तथा स्पष्टता तथा अपने वर्तमान जीवन पर लागू करना। मेरी प्रार्थना यह है कि परमेश्वर की आत्मा इन वचनों को पाठक में जीवन्त करे ताकि उनके संदेश फिर हमारे युग में सुने जायें। इस अध्ययन में परमेश्वर आपको आशीष दे।

एफ. वेन मैक लियोड

यूहन्ना की पत्रियां

1

जीवन का वचन

पढ़ें 1 यूहन्ना 1:1-4

यह सही है कि प्रेरित यूहन्ना 1 यूहन्ना को जीवन के वचन के परिचय के साथ आरम्भ करता है। अपने दो और लेखों को भी वह इसी प्रकार आरम्भ करता है। अपने सुसमाचार में प्रस्तुती करता है कि वचन जो 'देहधारी हुआ' (यूह. 1:1-4) और प्रकाशितवाक्य के प्रथम अध्याय में वह बताता है उसके विषय जो खड़ा है 'सात दीपदानों' के मध्य (प्रका. वा. 1:9-20), यह सब प्रभु यीशु के विषय है। संक्षेप में आइये देखें कि इस पत्री में जीवन के वचन के विषय यूहन्ना क्या कहता है।

यह वचन आदि में था

अपने सुसमाचार में यूहन्ना बताता है जगत की सृष्टि वचन के द्वारा हुई (यूह. 1:1-3)। यीशु, वचन के रूप में सदा से अस्तित्व में है। वह परमेश्वर है। हमारा जीवन व अस्तित्व उसके ही कारण है। उसमें जीवन की सामर्थ है। वह सृष्टिकर्त्ता है। हम उसकी सृष्टि हैं। वह आदि में था जब सब वस्तुएं अस्तित्व में आईं। वह अनन्त परमेश्वर है, बिना आरम्भ व अन्त के।

इस वचन को सुना, देखा, ध्यान से देखा व स्पर्श किया गया

यद्यपि वह पवित्र परमेश्वर है, प्रभु यीशु पतित सृष्टि के साथ रहने आया। परमेश्वर आत्मा है और भौलिक शरीर द्वारा सीमित नहीं, जैसे हम हैं। जीवन के वचन ने परन्तु हमारी सीमाओं को लिया। प्रेरित यूहन्ना उन

कुछ ही विशेषाधिकार वालों में से एक था जिसने उसे चलते फिरते, इस पृथ्वी पर, सुना व देखा। यूहन्ना ने इस जीवन के वचन को स्पर्श किया अपने हाथों से। यहां ध्यान दें यूहन्ना ने जीवन के वचन को 'ध्यान से देखा' तथा देखा (पद 1)। यहां जिस यूनानी शब्द का प्रयोग किया गया है 'ध्यान से देखा' के लिये वह शब्द 'देखा' से भिन्न है। 'ध्यान से देखना' अर्थ देता हैं 'विचार करने का'। यह शब्द उसके लिये प्रयोग किया जाता है जो किसी प्रदर्शन को दे रहा हो। इसका अर्थ है ध्यानपूर्वक जांच! यहां यूहन्ना जो हमें समझा रहा है कि उसके मन में कोई भ्रम नहीं, प्रभु यीशु के व्यक्तित्व के बारे में। उसने ध्यानपूर्वक उसको जांचा और जाना कि वह सत्य है। इस पत्री के प्रथम तीन पदों में, यूहन्ना प्रभु यीशु के विषय अपनी निश्चयता को कम से कम सात बार बताता है।

'हमने देखा' (पद 1)
'हमने अपनी आंखों से देखा' (पद 1)
'हमने ध्यान से देखा' (पद 1)
'हमने हाथों से स्पर्श किया' (पद 1)
'जीवन प्रकट हुआ' (पद 2)
'हमने उसके जीवन को देखा' (पद 2)
'हम बताते हैं कि हमने सुना व देखा है' (पद 3)

बात को समझना कठिन है। यूहन्ना चाहता है कि हम समझें कि जिस बात की वह प्रस्तुती कर रहा है ठोस सत्य है।

वचन अनन्त जीवन का स्रोत है

वह जिसका वर्णन यहां प्रेरित कर रहा है अनन्त जीवन का स्रोत है। सुसमाचार में यूहन्ना इसको इस प्रकार रखता है, 'उसमें जीवन था और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति था।' (1:4) वचन आया कि हमें जीवन दे। यूहन्ना यहां भौतिक जीवन की बात नहीं कर रहा, जो हमारे पास पहले से ही था (यद्यपि यह भी उसी के कारण है)। वह यहां अनन्त जीवन, आत्मिक जीवन की बात कर रहा है। यह जीवन पिता के पास से जीवन

के वचन के व्यक्तित्व से आता है। यीशु आया कि हमें वह अनन्त जीवन दे।

अब हम उन कारणों पर आते हैं जिस के कारण प्रेरित यूहन्ना विवश हुआ कि प्रभु यीशु मसीह के विषय में लिखे। इस पत्री को लिखने के वह दो कारण बताता है: संगति तथा आनन्द। नीचे हम इन दोनों उद्देश्यों पर दृष्टि डालेंगे।

ताकि तुम भी हमारे साथ संगति कर सको (पद 3)

पहला, इस पत्री में एक प्रचारीय बल है। जब कि वह विश्वासियों को लिख रहा है ('मेरे प्रिय बालको' 2:1)। वह चेतन है कि वे सब नहीं जो स्वयं को मसीही कहते हैं सचमुच उद्धार पायेंगे। वह चाहता है कि जिन्होंने अभी तक अनन्त जीवन नहीं पाया बढ़कर उसको पकड़ लें। यूहन्ना का उद्देश्य यह भी है कि सच्चे विश्वासियों को उनके विश्वास में बढ़ाये तथा उत्साहित करे, उन्हें पुन: निश्चय देने के लिये मसीह के सत्य के विषय दावों के बारे में। वह चाहता है कि ये विश्वासी पकड़ें, बड़े निश्चय के साथ, प्रभु यीशु के विषय सत्य को। जब कि उसके पाठक प्रभु यीशु के व्यक्तित्व के विषय विश्वास में निर्मित होते हैं, तो वे यूहन्ना के साथ गहरी संगति में प्रवेश करें, जब कि वे और पूर्णता के साथ आपस में मिलकर परमेश्वर के कार्य में भाग लें।

यूहन्ना की तीन पत्रियों पर एक झलक (1 यूह. 2 यूह. 3 यूह.) हमें दिखायेगी कि प्रेरित यूहन्ना अति चिन्तित था, संगति के प्रश्न के बारे में। वह अपनी दूसरी व तीसरी पत्रियां लिखता है व्यक्तियों को प्रोत्साहन देने के लिये कि कलीसिया में एकता स्थापित करने के लिये लोग एक दूसरे के साथ प्रेम करने तथा परमेश्वर को समर्पित हों। यहां 1:3 में हम इस एकता के आधार को देखते हैं प्रभु यीशु के कार्य व व्यक्तित्व में। हमारी संगति पिता व उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ है। हम शायद विश्वास व व्यवहार के हर मामले में सहमत न हों, तौभी मसीह में अपने भाई बहनों के साथ एक हो सकते हैं, परन्तु यदि हमने प्रभु यीशु को अपना उद्धारकर्त्ता

व प्रभु स्वीकार कर लिया है, तो हम उसी आत्मिक परिवार के हैं। वह बंधन किसी भी छोटे अन्तर से अधिक मज़बूत है जो हम में हो, क्योंकि हमारी एकता का आधार शिक्षा या व्यवहार नहीं परन्तु प्रभु यीशु है।

हम एक दूसरे के साथ संगति रख सकते हैं क्योंकि हमारा एक ही उद्धारकर्त्ता है। हम इस उद्धारकर्त्ता के प्रति सामान्य इच्छा में एक हैं, इस उद्धारकर्त्ता के प्रति सामान्य वचनबद्धता के द्वारा हम एक हैं। हम अपनी सामान्य इच्छा में एक हैं, इस उद्धारकर्त्ता को प्रसन्न करने व प्रेम करने में। हम अपनी सामान्य समझ के द्वारा एक हैं कि उसने हमारे लिये क्या किया। हम अपनी सामान्य नियति में एक हैं। हमारे परिवार की नेव प्रभु यीशु का व्यक्तित्व व कार्य है। जितना अधिक हम प्रभु यीशु को जानेंगे व प्रेम करेंगे, उतना ही अधिक हमारी इच्छा होगी उनके साथ आत्मिक संबंध रखने की जो उसके हैं। इस पत्री के लिखने में यूहन्ना का प्रथम उद्देश्य था प्रभु यीशु के व्यक्तित्व व कार्य के चारों ओर महान संगति के लिये प्रोत्साहन दे।

कि तुम्हारा आनन्द पूरा हो (पद 4)

यूहन्ना एक और दूसरा कारण इस पत्री को लिखने का बताता है। यूहन्ना हमें प्रभु यीशु के विषय बताता है ताकि उसके पाठक आनन्द से भर जायें। यह आनन्द कहां से आता है? वह प्रभु यीशु के व्यक्तित्व व कार्य के उनके ज्ञान से आता है। मसीही जीवन एक आनन्दपूर्ण जीवन होता है। यूहन्ना चाहता है कि उसके पाठक उस आनन्द को प्राप्त करें। इसलिये वह उन्हें प्रभु यीशु की ओर इशारा देता है, जो उस आनन्द का स्त्रोत है।

यहां शब्द 'तुम्हारे' पर कुछ विवाद है। पद 42 कुछ महत्वपूर्ण यूनानी हस्तलिपियां 'तुम्हारे' के स्थान पर 'हमारा' रखता है। एक अनुवाद है 'हम यह लिखते हैं ताकि हमारा आनन्द पूरा हो।' यूहन्ना ने अभी हमें बताया कि उसने यह पत्री लिखी ताकि उसके पाठक अपने व प्रभु यीशु के साथ उस संगति में प्रवेश करें। सचमुच यह बड़े आनन्द की बात है जब हम लोगों को प्रभु यीशु की उद्धारीय संगति में आते देखते हैं। व्यक्ति के विषय हमें आनन्द होता है जो उनका प्रभु से परिचय कराता है और उस व्यक्ति के

संगति में प्रवेश करने पर। अन्ततः इस पत्री को लिखने का यूहन्ना का उद्देश्य है कि वह व उसके पाठक मिलकर मसीह को जानने के आनन्द के भागी हों।

प्रेरित गवाह है जो उसने देखा व सुना उसकी गवाही सामर्थी है, उसके प्रभु यीशु के साथ व्यक्तिगत अनुभव के कारण जो जीवन का वचन है। जब प्रभु इस पृथ्वी पर था तो अपनी आंखों देखी गवाही को बड़े निश्चय व जोश के साथ वह बताना चाहता है। वह अपने समस्त पाठकों को पूर्ण हृदय से प्रभु यीशु को देना चाहता है। प्रभु के विषय बात करने में उसको बड़ा आनन्द आता है। उसकी यह बड़ी इच्छा है कि उसके पाठक जीवन के वचन को जानें। हम इस जोश को जान पाते हैं जब वह इस ज्ञान को बताता है और प्रभु यीशु के व्यक्तित्व का परिचय अपने पाठकों को देता है।

विचार करने के लिये

- यूहन्ना के पास क्या प्रमाण है कि यीशु वह है जिसका वह दावा करता है?
- यूहन्ना के अनुसार मसीही होने के नाते हमारी एकता का आधार क्या है?
- यद्यपि हमने कभी प्रभु यीशु को न देखा न छुआ, तो क्या हम कह सकते हैं कि हमने अपनी आत्मिक आंखों से उसे देखा व छुआ है? समझायें।
- क्या यीशु को जानने में आप यूहन्ना के रोमांच में भागी हैं? क्या चीज़ आपको उसके विषय दूसरों को बताने से रोकती है?

प्रार्थना के लिये:

- प्रभु का धन्यवाद करें स्वर्ग से उतरने और हमारे लिये स्वयं को सत्य बनाने के लिये।

- प्रभु से मांगें कि हमारे समय में मसीह की देह को और अधिक एकता में लाये।
- एक और कलीसिया के साथ विश्वासी के लिये प्रार्थना करने में थोड़ा समय लगायें। प्रभु का धन्यवाद करें कि यद्यपि आप सदा सहमत नहीं होते कुछ मामलों में, परन्तु प्रभु यीशु में एक समान बंधन है।
- प्रभु से मांगें कि उसको जानने में आपको और अधिक रोमांच प्राप्त हो।

2

संगति के लिये प्रथम रुकावट
पाप

पढ़ें 1 यूहन्ना 1:5-2:6

मसीही विश्वास की एक बड़ी बात यह है कि मैं और आप अपने सृष्टिकर्त्ता के साथ निकट संबंध में प्रवेश कर सकते हैं। इस पत्री के पहले चार पदों में यूहन्ना हमें याद दिलाता है कि यद्यपि यीशु मसीह का अस्तित्व आदि से है; वह हमारे साथ पृथ्वी पर रहने आया। यूहन्ना बताता है कि कैसे उसको यह विशेषाधिकार प्राप्त हुआ कि प्रभु को शरीर में सुन, देख व स्पर्श कर सका। उसे आनन्द आता है सृष्टिकर्त्ता के साथ अपनी मित्रता के विषय बताने में। वह पत्री लिखता है अपने पाठकों को आमंत्रित करने के लिये कि परमेश्वर (पिता और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ) संगति में जुड़ जायें (1:3)।

जब कि परमेश्वर के साथ संगति संभव है, कुछ रुकावटें हैं जिनके विषय वह पाठकों को चेतावनी देना चाहता है। अगले कुछ मनन के समयों में हम इन रुकावटों की जांच करेंगे। यहां हम जांच करेंगे परमेश्वर के साथ संगति में रुकावटों की।

इस संदर्भ में यूहन्ना हमें याद दिलाता है कि 'परमेश्वर ज्योति है; और उसमें कोई अंधियारा नहीं' (पद 5)। यूहन्ना का अर्थ यहां क्या है? ज्योति प्रतिनिधित्व करती है पवित्रता व शुद्धता का। दूसरी ओर अंधेरा पाप व

बुराई का प्रतिनिधित्व करता है (देखें भजन. 119:105; यूह. 1:4-5; रोमि. 13:11-14)। यह कहने से कि परमेश्वर ज्योति है, यूहन्ना हमें बताता है कि परमेश्वर पूर्णतया पवित्र व शुद्ध है। जो भी वह करता है भला व सिद्ध होता है। उस पर कभी पाप का दोष नहीं लग सकता। परमेश्वर के लिये यह असम्भव है कि वह कुछ गलत करे। वह पूर्ण पवित्रता तथा सिद्धता का माप है। जब यूहन्ना कहता है कि 'परमेश्वर में कुछ अंधियारा नहीं', तो छोटी से छोटी भी उस संभावना से इंकार करता है कि परमेश्वर अपने अपरिवर्तनशील नियमों के विरुद्ध करे। यूहन्ना हमें बताता है कि परमेश्वर का चरित्र दोष रहित है। जो कुछ भी उसने कभी किया या करेगा सिद्ध व पवित्र होगा। उसमें बिल्कुल भी पाप का अंधेरा नहीं।

परमेश्वर की सम्पूर्णता के विषय यह कथन देकर, यूहन्ना तब इस शिक्षा की व्यावहारिकता की ओर बढ़ता है। यहां याद रखें कि यूहन्ना परमेश्वर के साथ संगति में रुकावटों की बात कर रहा है। क्योंकि परमेश्वर ज्योति है और उसमें अंधियारा 'बिल्कुल' नहीं, हमें भी ज्योति में चलना चाहिये यदि उसके साथ हमें उचित संगति रखनी है। दूसरे शब्दों में, हमें आज्ञाकारिता व पवित्रता से चलना है यदि हम परमेश्वर के साथ संगति रखना चाहते हैं।

यूहन्ना तो यहां तक कहता है कि यदि हम परमेश्वर के साथ संगति रखने का दावा करते हैं परन्तु 'सत्य पर नहीं चलते' (आदत से पाप में चलते हैं) तो हम झूठे हैं (पद 6)। परमेश्वर से अनन्त जीवन प्राप्त करना संभव नहीं यदि हमारा जीवन बुराई से पूर्ण है। परमेश्वर के साथ संगति तभी संभव है यदि आज्ञाकारिता व पवित्रता है। क्योंकि परमेश्वर शुद्ध है, वह उनके साथ संगति नहीं रख सकता जो अशुद्धता का आनन्द लेते हैं। परमेश्वर को पाप से घृणा है क्योंकि वह भली वस्तु की नाशक है (नीति. 15:9; यूह. 10:10)।

पद 7 हमें बताता है कि यदि हम ज्योति में चलें, तो हमारी संगति मसीह में हमारे भाई बहनों के साथ भी होगी। परमेश्वर के साथ तथा साथी

विश्वासियों के साथ संगति में सीधा संबंध है। जब हम परमेश्वर के विरुद्ध पाप करते हैं, तो न केवल हमें उसके साथ संगति की आवश्यकता है परन्तु उनके साथ भी जो उसके साथ ज्योति में चलते हैं। हमारी संगति मसीह के साथ होती है। जब हम मसीह के साथ गति को जोड़ते हैं तो उनके साथ भी जोड़ते हैं जो उसके हैं।

जो कुछ यूहन्ना कह रहा है उसको सुनने के बाद, हम इस परिणाम पर पहुंचते हैं कि हमें सिद्ध होना है ताकि परमेश्वर व उसके लोगों के साथ संगति कर सकें। यूहन्ना इसे स्पष्ट करता है कि ऐसा नहीं है। यह सत्य है कि हम सब पापी हैं (पद 10)। हम में से कोई भी पापरहित होने का दावा नहीं कर सकता। यदि हम पाप के दोषी हैं, तो परमेश्वर तथा मसीह से हमारे भाई बहनों के साथ संगति कैसे संभव हो सकती है? यूहन्ना कहता है, यह संभव है प्रभु यीशु मसीह के व्यक्तित्व व कार्य के द्वारा: 'यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने में विश्वासयोग्य व धर्मी है और हमें हर प्रकार के अधर्म से शुद्ध करता है' (पद 9)।

पापी होने के नाते हमारे प्रभु यीशु के लोहू के द्वारा हमें शुद्ध किया जा सकता है। परन्तु यहां ध्यान दें कि शुद्ध होने के लिये, हमें अपने पापों का अंगीकार करना होगा। जो अंधियारे में रहते हैं, वे हैं जिन्होंने अपने पापों का अंगीकार व पहचानना नहीं चुना। परमेश्वर व विश्वासियों के साथ निरन्तर संगति तभी संभव है यदि हमें प्रभु यीशु के लोहू से धोकर शुद्ध किया गया है। केवल उसी के लोहू द्वारा हमारे पाप का समस्त दोष दूर किया जा सकता है। सच्चे विश्वासी परमेश्वर के पवित्र नियमों के प्रति अपने बलवे के कार्यों से पश्चात्ताप के व्यवहार में जीते हैं।

अध्याय 2 में यूहन्ना बताता है कि उसने यह पत्री इसलिये लिखी कि उसके पाठक अपने पापों से फिर कर पवित्र व आज्ञाकारी जीवन जियें (पद 1)। यह ज्ञान कि परमेश्वर पवित्र परमेश्वर है हमें स्वयं पवित्र जीवन जीने के लिये बाध्य करे। कौन अपने मन से, सारी सृष्टि के सर्व सामर्थी व पवित्र सृष्टिकर्त्ता को दुख पहुंचाना चाहेगा? ऐसा करना मूर्खता होगा।

क्योंकि यदि हम पाप करें तो हमारा एक वकील है, 'वह जो पिता से हमारे पक्ष में बात करता है।' वह व्यक्ति प्रभु यीशु है। जब हम पाप करते हैं, हम एकदम उसके पास आते हैं। केवल वही हमें हमारे पापों से शुद्ध तथा हमें ज्योति के साथ संगति में पुन:स्थापित कर सकता है। वह क्षमा सबके लिये नि:शुल्क उपलब्ध है (पद 2)। किसी के पास दोषी रहने का कोई बहाना नहीं। यदि वे उसके पास आयें तो सब क्षमा पा सकते हैं।

हम कैसे जानते हैं कि हमारी संगति ज्योति के साथ है?

संगति का अर्थ है आज्ञाकारिता में रहना और पाप से फिरना। यदि हम उसके वचन के आज्ञाकारी नहीं तथा उसके लिये नहीं जीते तो हम नहीं कह सकते कि हम उसके साथ संगति में हैं। यूहन्ना यहां साफ बात करता है। यदि हम कहें कि हम ज्योति के साथ संगति में हैं परन्तु उसके वचन की आज्ञाकारिता में नहीं जीते, तो हम झूठ बोलते हैं। (पद 4)

दूसरी ओर यदि हम आज्ञाकारिता में जीते हैं, तो परमेश्वर का प्रेम सिद्ध होता है या हम में 'पूरा किया जाता है' (पद 5)। परमेश्वर का प्रेम हममें सिद्ध होने का क्या अर्थ है? परमेश्वर का प्रेम मसीह के व्यक्तित्व में हम पर प्रदर्शित किया जाता है जो हमें क्षमा करता है और पिता के साथ संगति देता है। जब वह प्रेम हमें पकड़ लेता है और हम में परिपक्व हो जाता है और हम में अपने कार्य को पूरा करता है, तो परिणाम होता है ऐसा जीवन जो पवित्रता व प्रभु की आज्ञाकारिता का हो। जब हम परमेश्वर के वचन की आज्ञाकारिता में होते हैं, तो हम जानते हैं कि परमेश्वर का कार्य हमारे जीवनों में हो रहा है। वह प्रेम परिपक्व हो रहा है तथा हमें उसके पुत्र यीशु मसीह के स्वरूप पर सिद्ध करता जाता है।

यदि हम मसीह के लिये जीने का दावा करते हैं, तो हम ऐसे चलते हैं जैसे मसीह परमेश्वर के सामने पवित्रता व शुद्धता में। यदि हम अंधेरे में चलेंगे तो हम ज्योति के साथ संगति नहीं रख सकते। जब हम पाप करते हैं, तो प्रभु यीशु के सामने उन पापों का अंगीकार करने के द्वारा ज्योति के साथ संगति को पुन:स्थापित किया जा सकता है?

विचार करने के लिये:

- क्या कोई पाप हैं जो आपको ज्योति के साथ संगति रखने से रोकते हैं? वे विशेष रूप से क्या हैं?
- पाप आपके परमेश्वर के साथ संबंधों को कैसे प्रभावित करता है? क्या सचमुच आप परमेश्वर के साथ संगति रख सकते हैं यदि आपका हृदय उसके साथ सही नहीं है? स्पष्ट करें।
- क्या परमेश्वर के साथ सही संबंध में रहना संभव है यदि मसीह में अपने भाई बहनों के साथ आपका संबंध सही नहीं?

प्रार्थना के लिये

- क्या परमेश्वर आप पर किसी विशिष्ट पाप को प्रगट कर रहा है जिसका अंगीकार करना आवश्यक है? क्षण भर रुकें और उस पाप का अंगीकार करें।
- प्रभु का धन्यवाद इस सत्य के लिये करें कि क्षमा व पुन:स्थापन प्रभु यीशु के द्वारा संभव है।
- परमेश्वर से मांगें कि वह आपको इस योग्य करे कि आप उसकी आज्ञाकारिता में चलें, दैनिक आधार पर। उसको धन्यवाद उस संगति के लिये करें जो वह आपके साथ रखना चाहता है।

3

संगति के लिये दूसरी रुकावट

टूटे संबंध

पढ़ें 1 यूहन्ना 2:7-14

यूहन्ना ने हमें बताया है कि मसीह के साथ संगति में पहली रुकावट पाप है। अब वह हमें आगे बताता है एक और रुकावट के विषय। दूसरी रुकावट है मसीह में भाई बहनों के साथ टूटे संबंध।

यहां यूहन्ना यह बताना आरम्भ करता है कि जो वह बता रहा है नया नहीं है। यह सदा से ही परमेश्वर की योजना में था कि हम दूसरों से प्रेम करें। पतन से पहले, यद्यपि आदम अदन की वाटिका में अपने सृष्टिकर्त्ता के साथ संगति में रहता था, परमेश्वर ने स्वयं कहा था कि आदम के लिये अकेला रहना अच्छा नहीं (उत्प. 2:18)। परमेश्वर ने एक स्त्री की सृष्टि की उसका साथी होने के लिये। लोगों को सामाजिक प्राणी बनाया गया। उनको साथी मनुष्यों की संगति की आवश्यकता थी। लोगों को दूसरों के बिना रहने के लिये स्वतंत्र नहीं बनाया गया था। वे दूसरे लोगों के साथ सामंजस्य में जी कर आनन्द पाते हैं।

जब कैन ने हाबिल की हत्या की, परमेश्वर अति क्रोधित हुआ (उत्प.)। उसने कैन को शाप दिया और उसे देश निकाला दे दिया। उसने उससे कहा कि जब वह भूमि पर परिश्रम करेगा तो वह उसे फल न देगी। वह अपने शेष जीवन में घुमक्कड़ रहेगा। परमेश्वर ने उसे इतना कड़ा दण्ड

क्यों दिया? क्या यह हमको यह दिखाने के लिये न था कि परमेश्वर कितना गम्भीर होता है उनके विषय जिनको उसने अपने स्वरूप पर बनाया।

नूह के समय में, परमेश्वर ने नूह को आज्ञा दी कि यदि कोई किसी की हत्या करे, तो दोषी व्यक्ति का लोहू बहाया जाये (उत्प. 9:6)। पुराने नियम में, हत्या का दण्ड मृत्यु था। सृष्टि के आरम्भ से ही यह परमेश्वर की इच्छा थी कि मानव जीवन का आदर व सम्मान किया जाये (उत्प. 2:24)। इन सिद्धान्तों की अनदेखी करने का अर्थ होगा कि परमेश्वर को लेखा देना होगा (लैव्य. 19:18)।

पुराने नियम में कई उदाहरण दिये गये हैं कि परमेश्वर अपनी संतान से उनके आपसी संबंधों में क्या चाहता है। लैव्यव्यवस्था 25:42-43 में परमेश्वर ने अपनी संतान को आज्ञा दी कि अपने साथी इस्राएली को कभी दासत्व में न बेचें। वह व्यक्ति जो अपने माता या पिता को शाप दे मारा जाए (लैव्य. 20:9)। परमेश्वर के लोगों को व्यवसाय में एक दूसरे के साथ ईमानदार होना है, सम्पत्ति का लालच न करें। परमेश्वर आशा करता था कि उसके लोग पड़ोसी की सम्पत्ति का आदर करें। यदि उनका बैल सड़क के किनारे गड्हे में गिर जाए, तो वे बैल को निकलवाने में सहायता करें।

जब कि यह सिद्धान्त कि एक दूसरे से आदर व प्रेम रखें यह मानवजाति की सृष्टि में जितना पुराना है, फिर भी इसके विषय कुछ अति नया व ताज़ा है (पद 8)। यहां यूहन्ना हमसे कहता है 'इसका सत्य तुम में और उसमें दिखाई दे।' दूसरों से प्रेम करने में यीशु ने नया विचार दिया। इस पृथ्वी पर अपने जीवन के द्वारा, उसने हमें नया व ताज़ा रूप इस पुरानी आज्ञा को दिया। उसने व्यावहारिक रूप में हमें सिखाया कि वह अपने पड़ोसी के लिये अपने प्राण देने को तैयार था। उसकी मृत्यु व पुनरुत्थान के कारण हमारे पाप क्षमा किये जा सकते हैं। हमारे क्षमा प्राप्त हृदयों में अब परमेश्वर वास कर सकता है। हमारे हृदयों में उसके प्रेम के साथ, हम ताज़गी से अनुभव पाते हैं कि पड़ोसी से प्रेम करने का अर्थ क्या होगा, वह जिसको हमने पहले कभी नहीं जाना।

यूहन्ना जानता है कि इस प्रेम का नया आभास उनमें है जिनको वह लिख रहा है। वह अपने पाठकों को बताता है कि उनके विषय उसे भरोसा है, 'पाप का अंधेरा दूर हो रहा है' (पद 8)। मसीह की ज्योति अब उनमें चमक रही है। जबकि ज्योति उनके हृदयों में चमकती है तो वे दूसरों के लिये एक नये प्रेम का अनुभव करेंगे। यूहन्ना तो यहां तक कहता है कि यदि वे ज्योति में रहने का दावा करते हैं परन्तु अपने भाई से घृणा करते हैं, तो अभी भी वे पाप व अंधेरे में हैं (पद 9), और इस प्रकार उनकी संगति ज्योति के साथ नहीं हो सकती।

प्रेरित हमें बताता है कि यदि हम अपने भाई से प्रेम रखें, तो ज्योति में चलते हैं और लड़खड़ाते नहीं। परन्तु दूसरी ओर यदि हम अपने भाई या बहन से प्रेम नहीं करते, तो अंधेरे में चलते हैं। हम उनके समान चलते हैं जो नहीं जानते कि कहां जा रहे हैं क्योंकि वे पाप के अंधेरे द्वारा अंधे हैं। अंधेरे में चलना कितनी भयंकर बात है। जब लोग अंधेरे में चलते हैं, तो बड़े खतरे मोल लेते हैं। रुकावटों में फंस जाने का मौका होता है, काफी अधिक होता है। वे अपने को दूसरे को हानि पहुंचाने का खतरा लेते हैं। उनके लिये भी ऐसा है जो अपने भाई बहनों से प्रेम नहीं करते। वह न केवल अपने को नुकसान पहुंचाते हैं परन्तु अपने चारों ओर के लोगों को भी। हमारे आत्मिक जीवन पर बुरा प्रभाव पड़ता है जब हम दूसरों से प्रेम करने से इंकार करते हैं मसीह के प्रेम के साथ। आइये उन कुछ प्रभावों को देखें।

पहला, जो दूसरों से प्रेम नहीं करते अपने को परमेश्वर से अलग करते हैं। यीशु हमें बताता है कि परमेश्वर हमारी आराधना को ग्रहण नहीं करेगा यदि हम अपने भाइयों से प्रेम नहीं करते। 'इसलिये यदि तू भेंटे चढ़ाने के लिये वेदी पर जाये और वहां तुझे याद आये कि तेरे भाई को तुझ से कुछ शिकायत है, तो अपनी भेंट को वेदी पर छोड़ और जाकर पहले अपने भाई से मेल कर ले, और तब आकर अपनी भेंट चढ़ा।' (मत्ती 5:23)

दूसरा, यीशु हमें यह भी बताता है कि परमेश्वर हमारे पापों को क्षमा नहीं करेगा, यदि हम प्रेमपूर्वक दूसरों को क्षमा नहीं करेंगे, उन बुराइयों के

लिये जो उन्होंने हमारे साथ की हैं 'क्योंकि यदि तुम उन लोगों को क्षमा करोगे जो तुम्हारे विरुद्ध पाप करते हैं, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा। परन्तु यदि तुम उनके अपराध क्षमा न करोगे तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हारे पापों को क्षमा न करेगा' (मत्ती 6:14)। इसका अर्थ यह नहीं कि वह हमें अपनी संतान के रूप में स्वीकार नहीं करता। यहां हमें देखना है कि हम अपने हृदयों में कड़वाहट नहीं रख सकते किसी के लिये और परमेश्वर के साथ सही हों हमें उसको उत्तर देना होगा किसी भी अपने भाई या बहन की क्षमा के लिये।

तीसरा, पतरस पतियों को याद दिलाता है कि यदि वे अपनी पत्नियों से प्रेम नहीं करते, तो परमेश्वर उनकी प्रार्थनाओं को नहीं सुनेगा। 'पतियों, वैसे ही तुम भी बुद्धिमानी से पत्नियों के साथ जीवन निर्वाह करो और स्त्री को निर्बल पात्र जानकर उसका आदर करो, यह समझ कर कि हम दोनों जीवन के वरदान के वारिस हैं, जिससे तुम्हारी प्रार्थनाएं रुक न जाएं' (1 पत. 3:7)।

अन्तिम, नीतिवचन का लेख बताता है कि यदि हम अपने भाई से प्रेम नहीं करते तो परमेश्वर अपनी आशीषों को हम पर से हटा लेगा, 'जो कंगाल की दोहाई पर ध्यान न दे, वह आप पुकारेगा और उसकी सुनी न जाएगी' (नीति. 21:13)।

जब हम इन सब बातों को एक साथ रखते हैं, तो देखते हैं कि अपने भाई या बहन से प्रेम न करना कितना खतरनाक हो सकता है। यदि हम दूसरों से प्रेम नहीं करते, तो परमेश्वर हमारी आराधना को ग्रहण नहीं करेगा; वह हमारे पापों को क्षमा नहीं करेगा, वह हमारी प्रार्थनाओं को नहीं सुनेगा। वह अपनी आशीषों को हमारे जीवन से हटा लेगा। यह गम्भीर बात है। हमारी संगति ज्योति के साथ नहीं हो सकती यदि हम ज्योति की संतान से स्वयं को दूर करेंगे।

प्रेरित यूहन्ना अपने पाठकों को इस निश्चय के साथ लिखता है कि वे उसकी सुनेंगे। वह पद 12-14 में उन्हें याद दिलाता है कि उन्हें क्षमा किया गया है और वे परमेश्वर को जानते हैं। उन्होंने दुष्ट पर जय पाई है, और

परमेश्वर का वचन उनमें वास करता है। एक विशेष भरोसे के साथ यूहन्ना उन्हें याद दिलाता है, उसी प्रकार जारी रहें जैसे आरम्भ किया था और प्रेम में एक दूसरे के साथ धीरजवन्त हो कहीं अंधियारा उन पर प्रबल न हो।

ज्योति के साथ संगति में दूसरी रुकावट मसीह में किसी भाई या बहन के साथ टूटा संबंध है। कितना सरल है कड़वाहट व घृणा की एक जड़ के लिये कि हमारे हृदय में उन्नत हो। यदि हम जल्दी ही उस जड़ को नहीं उखाड़ते, तो हमारे आत्मिक जीवनों के लिये उसके नाशक परिणाम होंगे। काश परमेश्वर हमें अनुग्रह दे कि एक दूसरे के साथ प्रेम से रहें।

विचार करने के लिये

- क्या आप ऐसी किसी वस्तु को जानते हैं जो आपके और मसीह में किसी भाई या बहन के मध्य खड़ी है? क्या होना चाहिये ताकि इसे ठीक किया जा सके?
- क्या आपको वह समय याद है जब आप मसीह में किसी भाई या बहन के साथ ठीक़ न थे? इसका आपके आत्मिक जीवन में क्या परिणाम था?
- कलीसिया में इससे क्या फ़र्क पड़ेगा यदि सदस्य मसीह के इस प्रेम का प्रदर्शन एक दूसरे के लिये करेंगे? आप किन परिणामों की आशा करेंगे?

प्रार्थना के लिये

- क्या कोई है जिससे प्रेम करने में आपको कठिनाई होती है? परमेश्वर से मांगें कि उसके प्रति वह आपको अधिक प्रेम दे।
- परमेश्वर का धन्यवाद करें कि उसने आपसे प्रेम किया जब आप इसके योग्य न थे।

- परमेश्वर उस किसी अहंकार को तोड़ने के लिये कहे जो आपकी कलीसिया में सदस्यों को एक दूसरे से प्रेम करने से रोकता है, जैसा परमेश्वर चाहता है।

- क्षण भर लें परमेश्वर का धन्यवाद करने के लिये और उस किसी के लिये प्रार्थना करें जिससे प्रेम करने में आपको कठिनाई होती है।

4

संगति के लिये तीसरी रुकावट

संसार से प्रेम करना

पढ़ें 1 यूहन्ना 2:15-17

हम ने प्रभु यीशु के साथ संगति में दो रुकावटों की जांच की। यूहन्ना ने हम पर यह स्पष्ट किया है! पाप और टूटे संबंध वे मुख्य रुकावटें है प्रभु यीशु के साथ हमारे चलने में। वह अब तीसरी रुकावट पर आता है- संसार से प्रेम करना।

यूहन्ना सीधी बात करता है, 'जो कोई संसार से प्रेम करता है, पिता का प्रेम उसमें नहीं है' (पद 15)। इससे यूहन्ना का क्या तात्पर्य है? क्या यही यूहन्ना नहीं था जिसने अपने सुसमाचार में हमें बताया, 'क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाये।' (यूह. 3:16) यदि परमेश्वर का प्रेम हम में वास करता है तो क्या हम भी जगत से प्रेम न करें, जैसे परमेश्वर करता है?

वह समझने के लिये जो यूहन्ना यहां हम से कह रहा है, हमें यूह. 3:16 व 1 यूह. 2:15 में अन्तर देखना होगा। 'जगत' के लिये यूनानी शब्द जो इन दो संदर्भों में प्रयोग हुआ है 'कॉसमॉस' है। इस शब्द के भिन्न अर्थ हैं। उसका पृथ्वी व आकश से भी तात्पर्य हो सकता है जो हमारे चारों ओर की भौतिक सृष्टि को दर्शाता है। इसका प्रयोग मानवजाति के विषय में भी

होता है। यही शब्द और भी अधिक प्रतिकात्मक या आत्मिक अर्थ भी रखता है। यह उन बातों का वर्णन करता है जो परमेश्वर के विरोध में हैं। इस अर्थ में, 'संसारिक' होना 'आत्मिक' होने के विपरीत है।

जब यूहन्ना हमें यूह. 3:16 में बताता है कि परमेश्वर ने जगत से प्रेम किया, तो शब्द 'कॉसमॉस' का प्रयोग वह मानवजाति के लिये कर रहा है। प्रेम में होकर यीशु मानवजाति के लिये अपना प्राण देने आया। यूहन्ना इसका वर्णन पहले ही 1 यूह. 2:2 में कर चुका है, 'वह हमारे पापों के लिये प्रायश्चित का बलिदान है; और न केवल हमारे परन्तु समस्त संसार के पापों के लिये।'

जब यूहन्ना हमें बताता है 1 यूह. 2:15 में कि हमें संसार से प्रेम नहीं करना तो वह लोगों की बात नहीं कर रहा। वह जगत की बात इस अर्थ में कर रहा है कि वे बातें जो परमेश्वर व उसके राज्य के विरोध में हैं। वह समस्त युगों के सामान्य दर्शन के विषय कह रहा है जो परमेश्वर व उसके वचन से इंकार करती हैं। वह उस अन्तहीन आनन्द, धन प्राप्ति की बात करता है जिसमें हम पकड़े गये हैं।

कितनी बार हम इस संसार की बातों में फंस जाते हैं। यह संसार हमें अपनी सम्पत्ति, सम्मान, प्रशंसा व आनन्द परमेश्वर की संगति के बदले देता है। अदन की वाटिका में शैतान ने हव्वा की परीक्षा वर्जित फल खाने के द्वारा परीक्षा करके की और अति बुद्धिमान होने के सम्मान द्वारा। मत्ती चार बताता है कि शैतान ने प्रभु की परीक्षा की कि 40 दिन के बाद रोटी खाने के आनन्द को ले। उसने उसे संसार का वैभव भी दिखाया तथा जगत में सम्मान व अधिकार, यदि वह झुककर उसे दण्डवत् करे। फिर उसने प्रभु को मनुष्यों की प्रशंसा दिखाई यदि वह मन्दिर के कंगूरे पर से कूद जाये। शैतान हमारी भी परीक्षा करता है। वह हमारे ध्यान को परमेश्वर से हटाकर संसार पर लगाना चाहता है। जल्दी से उसको देखना जो हमारे चारों ओर हो रहा है। यह दिखायेगा कि वह कितना सफल है। मैं ने हाल ही में एक बम्पर पर यह स्टिकर देखा, 'जो सबसे अधिक खिलौनों के साथ मरता है

जीतता है।' क्या यह संसार का दर्शन शास्त्र नहीं है? परमेश्वर की खोज के बदले हम अपनी प्राथमिकता संसार की वस्तुओं पर रखते हैं।

संसार की वस्तुओं के संबंध में, पौलुस 1 तिमु. 6:10 में कहता है, 'क्योंकि धन का लोभ सब प्रकार की बुराई की जड़ है।' कुछ लोग धन कमाने की धुन में विश्वास से डिग गये और स्वयं को भिन्न प्रकार के दुखों से छलनी कर लिया है। हां, धन का प्रेम व जगत की वस्तुओं का प्रेम हर उस बुराई की जड़ है जिसकी कल्पना की जा सकती है। लोग इन वस्तुओं की खोज में यौन अनैतिकता, हत्या, चोरी, बेईमानी में पड़े हैं। 1 तिमु. 6:10 के अनुसार कुछ तो अपने विश्वास से भटक गये, इन वस्तुओं के प्रेम के कारण। क्या हम ने इस भौतिक आकर्षण को अनुभव नहीं किया? हम अपनी सफलता या असफलता को इस जीवन में अपनी सम्पत्ति व व्यापार से मापते हैं। हम अपने मूल्य को उससे नापते हैं जो हमारे पास है। परन्तु अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति के साथ हम परमेश्वर के निकट नहीं होते। हम आत्मनिर्भर हो जाते हैं और परमेश्वर की अपनी आवश्यकता को नहीं पहचानते।

भौतिक सम्पत्ति के साथ, एक और परीक्षा जो यह संसार लेता है परमेश्वर की संगति के बदले, वह है लोगों की प्रशंसा। अपने सुसमाचार में (यूह. 12:42-43) यूहन्ना इस बात पर कहता है, 'उसी समय अगुवों में से भी बहुतों ने उस पर विश्वास किया। परन्तु फरीसियों के कारण वे अपने विश्वास का अंगीकार नहीं कर सकते थे उस भय से कि कहीं उन्हें आराधनालय में से न निकाल दिया जाये, क्योंकि वे मनुष्यों की प्रशंसा को परमेश्वर की प्रशंसा से अधिक चाहते थे।' यीशु के दिनों में भी, दूसरों से प्रशंसा पाने की पसन्द के कारण बहुत से विश्वासियों ने सार्वजनिक रूप से प्रभु यीशु का अंगीकार नहीं किया। उन्होंने उसका अंगीकार इसलिये नहीं किया क्योंकि दूसरे उनके विषय ऊंचे विचार रखें।

प्रशंसा का प्रेम हमारे जीवन की मसीह में गति में हमें रोकेगा। यीशु ने स्वेच्छा से अपने समय के लोगों व हमारे लिये अपमान व ठट्ठे को सहा। वह इससे नहीं शर्माया। तो क्या हम उसको अस्वीकार करेंगे इस

कारण कि दूसरे क्या कहेंगे? परमेश्वर का कितना काम रुक जाता है संसार में प्रशंसा पाने के प्रयत्न में?

दाऊद जो कि परमेश्वर के मन के अनुसार एक व्यक्ति था उसने सामायिक आनन्द के लिये परमेश्वर की ओर से मुंह मोड़ लिया। उसने बतशेबा से व्यभिचार किया, जो उसके एक सैनिक की पत्नी थी। उसको छिपाने के लिये, दाऊद ने हत्या का सहारा लिया (2 शमू. 11:1-25)।

3 यूहन्ना में, दियुत्रिफेस ने अपनी आवश्यकता के कारण प्रभु से मुंह मोड़ लिया क्योंकि दूसरों ने उसको महत्व नहीं दिया। वह कलीसिया में प्रथम होना चाहता था। 3 यूह. 9-10 पद में प्रेरित लिखता है, 'मैं ने मण्डली को कुछ लिखा था, पर दियुत्रिफेस जो उनमें बड़ा बनना चाहता है, हमें ग्रहण नहीं करता। सो जब मैं आऊंगा तो उसके कामों की जो वह कर रहा है सुधि दिलाऊंगा कि वह हमारे विषय में बुरी बुरी बातें बकता है और इस पर भी संतोष न करके आप ही भाइयों को ग्रहण नहीं करता; और उन्हें जो ग्रहण करना चाहते हैं, मना करता है और मण्डली से निकाल देता है।'

प्रथम होने की लालसा में दियुत्रिफेस लुतरेपन व निन्दा का शिकार बन गया। वह स्वयं उत्तम दिखने के लिये दूसरों का चरित्र हनन करता था। ऐसा करने में उसने अपने व परमेश्वर मध्य रेखा बना दी।

1 यूह. 2:16 में प्रेरित लोगों की उन लालसाओं को बताता है जिनसे वे संसारिकता के फन्दे में फंसते हैं। वह बताता है प्रथम 'शरीर की अभिलाषा'। वे शरीर के आनन्द को चाहते हैं। यह हो सकता है- यौन पाप, शराब, नशा या दूसरे साधनों से। वे संसारिक आनन्द की अभिलाषा रखते हैं।

दूसरे, वे जो जगत से प्रेम करते हैं 'आंखों की लालसा' से भरे होते हैं (पद 16)। यह भौतिकता का पाप ज्ञात पड़ता है। जो वे देखते हैं उसकी चाह करते हैं। वे बर्दाश्त नहीं कर पाते कि उनके पड़ोसी के पास नई कार या घर है। सबसे उत्तम उनके पास होना चाहिये।

तीसरे, जो जगत से प्रेम करते हैं वे 'जीवन के अहंकार' से भरे होते हैं तथा जो उनके पास है उस पर घमण्ड की बातें करते हैं। संसार से प्रेम रखने

वाले पद लोलुप होते हैं। वे अपनी उपलब्धियों का बखान करते हैं तथा धन का, वे इन बातों में परमेश्वर को नहीं, अर्थ व महत्व को ढूंढते हैं।

यूहन्ना हमें बताता है जगत दे सकता है, सबसे श्रेष्ठ, थोड़े समय के लिये। केवल वे वस्तुएं थोड़े समय की हैं, परन्तु वस्तुओं का प्रेम हमें प्रभु से दूर कर सकता है।

यहां हमें याद दिलाया गया है प्रभु यीशु के साथ संगति में तीसरी रुकावट संसार का प्रेम है। क्या आप इस फंदे में फंसे? आपके प्राण को जगत में कभी संतुष्टि नहीं मिलेगी। दरअसल संसार का प्रेम आपको मसीह से दूर रखेगा। केवल परमेश्वर में आनन्द की भरपूरी है।

विचार करने के लिये

- क्या जगत की वस्तुओं के प्रेम द्वारा आपकी परीक्षा हुई? विशेष रूप से क्या चीज़ आपकी परीक्षा करती है?
- क्या चीज़ जगत को आकर्षक बनाती है, विश्वासी तक को?
- उन अच्छी वस्तुओं का आनन्द लेना जो परमेश्वर ने हमें दी हैं तथा जगत की वस्तुओं के प्रेम में फंस जाने में क्या अन्तर है?

प्रार्थना के लिये

- परमेश्वर से मांगें कि आपको जगत के प्रेम से स्वतंत्र करे।
- क्या आप ऐसे कुछ लोगों को जानते हैं जो जगत की वस्तुओं का पीछा करने से परमेश्वर से दूर हुए किया हैं? क्षण भर परमेश्वर से उनके छुटकारे के लिये प्रार्थना करें।
- उन अद्भुत आशीषों के लिये परमेश्वर का धन्यवाद करें जो उसने आपको दी हैं। परमेश्वर से कहें कि आपको अन्तर दिखाये उस आनन्द में जो उसने दिया है और उसकी आशीषों के प्रेम में इस हद तक कि उनको उससे भी अधिक महत्व देने के मध्य?

5

संगति के लिये चौथी रुकावट
पुत्र का इंकार

पढ़ें 1 यूहन्ना 2:18-27

यूहन्ना हमें ज्योति के साथ संगति रखने में रुकावटों के विषय बता रहा है। पाप, टूटे संबंध तथा संसार का प्रेम हमें उस आनन्द के अनुभव से दूर रखते हैं जो उद्धारकर्त्ता के साथ हमारी संगति को रोकते हैं। युगों से संगति में, इन रुकावटों ने, असंख्य लोगों को प्रभु यीशु से दूर किया है। पद 18-27 में यूहन्ना हमें सिखाता है चौथी रुकावट के विषय- यीशु का इंकार करने की रुकावट।

प्रेरित हमें याद दिलाता है, सर्वप्रथम, कि हम अन्त समय में हैं। अन्त समय का एक चिन्ह है मसीह विरोधी का आना। यूहन्ना विस्तार से प्रका. वा. में मसीह विरोधी के विषय समझाता है। प्रका. वा. 13 में यूहन्ना उस पशु का वर्णन करता है जो समुद्र से निकला। यह पशु अपना अधिकार शैतान से प्राप्त करता है, जिसको बड़ा अजगर कहा गया है। शैतान के अधिकार से मसीह विरोधी कुछ समय के लिये संसार में अधिकार पायेगा। वह प्रभु के नाम की निन्दा करता है। वह पवित्र लोगों के साथ युद्ध करता है। उसको सभी लोगों, जातियों, भाषाओं व गोत्रों पर अधिकार मिला है। यूहन्ना बताता है कि वह देखना चाहते हैं जगत के सब निवासी उसके समाने दण्डवत करें (पशु के)। केवल वे जिनके नाम जीवन की पुस्तक में लिखे हैं मसीही विरोधी को दण्डवत् करने से इंकार करेंगे।

इस बड़े पशु की सहायता के लिये एक और पशु है जो बहुत से चमत्कार करता है। केवल जो एक छाप को अपने माथे या दहिने हाथ पर लिये हुए है- लेन देन कर सकते हैं। छाप, पशु के अधिकार के सामने समर्पण का चिन्ह है। यह समय इतिहास में संसार के, एक ऐसे समय के रूप में जाना जाता है जबकि पवित्र लोगों को संयम, धीरज व विश्वासयोग्यता से काम लेना है। मसीह विरोधी की पहचान के लिये बहुत से अन्दाजे लगाये गये हैं। उसको उन शक्तियों का प्रतिनिधि समझा जाता है जो यीशु के प्रभुत्व को नहीं मानते और स्वयं को परमेश्वर से ऊंचा बनाते हैं।

यूहन्ना हमें याद दिलाता है कि जब कि प्रका. वा. में बताये गये मसीह विरोधी की हम प्रतीक्षा कर रहे हैं तो बहुत से मसीह विरोधी पहले ही आ चुके हैं। वह बताता है कि यह एक विशिष्ट चिन्ह है कि अन्त निकट है। यूहन्ना का क्या अर्थ है जब वह कहता है कि बहुत से मसीह विरोधी हैं? ये मसीह विरोधी कौन हैं? आइये तीन बातें जानें जो इस संदर्भ में वह कहता है।

प्रथम, यूहन्ना बताता है कि ये मसीह विरोधी, 'हम में से निकले हैं, परन्तु हम में से नहीं थे' (पद 19)। यह सत्य कि ये लोग उनमें से निकले इस विश्वास को लाता है कि ये वे स्त्री पुरुष थे जिन्होंने किसी प्रकार धार्मिक विश्वास वचन बनाया। एक समय वे कलीसिया की संगति में थे। कोई भी कारण जिसका इस पद में वर्णन नहीं, ये संगति से निकल गये। यह सत्य कि उन्होंने त्याग दिया, दिखाता है कि पहली बार वे उसमें के थे ही नहीं। यहां अर्थ है कि यदि वे सच्चे विश्वासी होते तो सत्य को संभालते। उनको सत्य का ज्ञान था परन्तु वे उससे फिर गये।

इस पर सोचना ही भयंकर है। आपको ऐसे बहुत से लोग मिले होंगे। किसी कारण उन्होंने कलीसिया की संगति छोड़ दी और यहूदा के समान, उसके सबसे कट्टर शत्रु बन गये। उनके हृदय सत्य के प्रति कठोर हो गये। वे आगे को चर्च से संबंध रखना नहीं चाहते थे। शायद कलीसिया में उनको चोट लगी। शायद उन्होंने विश्वासियों के जीवन में कुछ अस्थिरताएं देखीं।

हमें यह नहीं बताया गया कि वे लोग क्यों चले गये, परन्तु उन्होंने परमेश्वर व उसके कार्य से बलवा किया। वे शैतान के हाथ के उपकरण बन गये ताकि मसीह के नाम की निन्दा करें।

हम पद 20 व 21 पर अभी लौटेंगे। पद 22 बताता है इन मसीह विरोधियों के प्रति दूसरी बात- वे पिता व पुत्र का इंकार करते हैं। शायद वे हमारे समूह या सेमिनरियों में हैं। शायद वे हमारी कलीसियाओं में हैं। उन की विशेषता है कि वे इंकार करते हैं प्रभु यीशु ही मसीह है। 'मसीह' का अर्थ है 'अभिषिक्त'। जब हम इस शब्द का प्रयोग करते हैं तो हम कहते हैं कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, वह जिसका अभिषेक किया गया हमारे पापों के हेतु बलिदान के लिये। यूहन्ना बताता है कि कोई भी जो प्रभु यीशु को ग्रहण नहीं करता मसीह के रूप में वह झूठा तथा मसीह विरोधी है। हम यीशु का इंकार कर सकते हैं कि वह मसीह नहीं है, उसके बिना उद्धार को बढ़ावा देकर।

कोई भी सच्चा मसीही कभी नहीं कह सकता कि यीशु मसीह नहीं था। इससे इंकार करना कि यीशु वह अभिषिक्त था जो हमें हमारे पापों से बचाने आया उस उद्धार से इंकार करता है जो वह देने आया। परमेश्वर के साथ कोई संगति नहीं हो सकती जब तक हम प्रभु यीशु को मसीह ग्रहण नहीं करते। हमारा उद्धार दृढ़ता से इस बात पर निर्भर करता है कि मसीह यीशु जगत में पापियों को बचाने आया। वे मसीह विरोधी जिनका ज़िक्र यूहन्ना करता है कुछ और सुसमाचार प्रचार करते हैं।

तीसरे, ये मसीह विरोधी प्रयत्न करते हैं कि हमें यीशु व उसके कार्यों के सत्य से भटका दें (पद 26)। आजकल बहुत से समूह व सम्प्रदाय हैं जो यह ही कह रहे हैं। वे घर घर जाते हैं और लोगों को ऐसे विश्वास में फंसाते हैं जो यीशु के मसीह और परमेश्वर का पुत्र होने से इंकार करते हैं ये लोग मसीह विरोधी हैं। उनमें से बहुत से बड़े भ्रामक रूप में आते हैं। वह लोगों को मसीह से अलग करने में सफल होते हैं। वे प्रभु यीशु को नहीं जानते। उसको जानना यह जानना है कि वह परमेश्वर है। उसको

जानना उसके सामने घुटने टेकना और उसका प्रभुत्व मानना है। ये लोग शैतान के हाथ में उपकरण हैं, जो लोगों को मसीह से फेरते हैं। ऐसे मसीह विरोधी यूहन्ना के समय कलीसिया में थे; वे हमारे दिनों में भी हैं।

अपने पाठकों को इनके विषय चेतावनी देते हुए जो इंकार करते हैं कि यीशु ही मसीह है, यूहन्ना आगे सच्चे विश्वासी के विषय कुछ कहता है। सच्चे विश्वासी का अभिषेक उस पवित्र की ओर से होता है और सत्य को वह जानता है (पद 20)। अपने सुसमाचार में भी यूहन्ना यही बात कहता है 'तब यीशु ने उन यहूदियों से जिन्होंने उनकी प्रतीति की थी कहा, यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे और सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।' (यूह. 8:31-32)

इस बारे में कोई प्रश्न नहीं हो सकता जो यीशु यहां कह रहा है। सच्चा शिष्य सत्य को जानता है। यूह. 16:13 में यीशु ने अपने शिष्यों को बताया कि जब आत्मा उन पर आयेगा, तो सत्य में उनकी अगुवाई करेगा। यदि परमेश्वर का आत्मा हम में वास करता है, तो प्रभु यीशु के व्यक्तित्व के विषय हमारा विशिष्ट विश्वास होगा। पौलुस 1 कुरि. 12:3 में कहता है कि केवल परमेश्वर के आत्मा द्वारा ही हम यीशु को प्रभु कहते हैं, 'इसलिये मैं तुम्हें चितौनी देता हूं कि जो कोई परमेश्वर की आत्मा की अगुवाई में बोलता है वह नहीं कहता कि यीशु श्रापित है, और न ही कोई पवित्रात्मा के बिना यह कह सकता है कि यीशु प्रभु है।' यूहन्ना लिखता है कि निश्चित रूप से उसके पाठक यीशु के विषय, सत्य को जानें, क्योंकि परमेश्वर का आत्मा उसमें वास करता है।

पद 27 पर ध्यान दें कि पवित्रात्मा, मसीह से जो अभिषेक आपने पाया, यीशु की गवाही देता है। यह कहता है कि विश्वासियों को आवश्यकता नहीं कि उनको सिखाये कि यीशु प्रभु है। परन्तु प्रभु ने कलीसिया को वचन के शिक्षक व प्रचारक दिये हैं। (इफि. 4:11-12) इन लोगों की सत्य के शिक्षण में कहीं महत्वपूर्ण भूमिका है। यूहन्ना हमें यहां बता रहा है कि कुछ शिक्षाएं हैं जिनको विश्वासी अन्तर्ज्ञान से जानता है। कुछ बातें परमेश्वर का

आत्मा स्पष्ट रूप से विश्वासी को दिखाता है। इनमें से एक शिक्षा यह है कि कुछ शिक्षाएं हैं जिनको विश्वासी अन्तर्ज्ञान से जानता है। कुछ बातें परमेश्वर का आत्मा स्पष्ट रूप से विश्वास द्वारा दिखाता है। इनमें से एक शिक्षा यह है कि प्रभु यीशु मसीह है, परमेश्वर का पुत्र।

प्रेरित पौलुस विश्वासियों को बन्दी बनाने के लिये दमिश्क जा रहा था जो अंगीकार करते थे कि यीशु परमेश्वर है (प्रेरि. 9:12)। वह उन्हें यरूशलेम ले जाना चाहता था जहां उनको सताया या मारा डाला जाये। मार्ग में उसे प्रभु यीशु मिला। एक ही क्षण में उसका परिवर्तन हो गया। जिस क्षण उसकी व्यक्तिगत मुलाकात प्रभु यीशु से हुई, तो उसने उसको मसीह जान लिया। आगे फिर कभी उसने शक न किया कि यीशु परमेश्वर का पुत्र था जो उसे उसके पाप से बचाने आया था। किसी व्यक्ति से उसने बैठकर मसीह के ईश्वरत्व के विषय शिक्षा नहीं ली। स्वयं परमेश्वर के आत्मा ने पौलुस को इस सत्य के प्रति कायल किया। यही यूहन्ना हमें यहां बता रहा है। सत्य विश्वासियों के रूप में, ज़रूरत नहीं कि कोई हमें बताये कि यीशु प्रभु है। इसको हम इसलिये जानते हैं क्योंकि परमेश्वर के आत्मा ने हम पर प्रगट किया।

यूहन्ना हमें बता रहा है कि हमें पूर्ण ध्यानपूर्वक अपनी इस समझ की रक्षा करनी है कि प्रभु यीशु मसीह कौन है। वह हमें बता रहा है कि हमें उस किसी से कोई मतलब नहीं जो कहता है कि यीशु मसीह नहीं है। उसके परमेश्वर का पुत्र होने से इंकार करना अपनी एकमात्र आशा से इंकार करना है। हम ज्योति में नहीं चल सकते यदि हम इंकार करें कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है।

विचार करने के लिये

- यदि यीशु मसीह न होता तो आज हम कहां होते?
- यीशु के विषय वर्तमान समय में क्या विचार हैं? लोगों को समझाने के लिये कि यीशु मसीह है हम क्या कर सकते हैं?

- यीशु की संगति में चलना क्यों कठिन है यदि हम उसके मसीह होने से इंकार करते हैं?
- क्या आप के समाज में कोई व्यक्ति या समूह है जो यीशु के मसीह होने से इंकार करते हैं?

प्रार्थना के लिये

- प्रभु का धन्यवाद करें कि वह उनको आशा देने आया जो पाप में डूबे थे।
- प्रभु का धन्यवाद पवित्रात्मा के लिये करें जो हमें निश्चय देता है कि यीशु कौन है।
- उसका धन्यवाद करें कि उसने यीशु को आप पर प्रगट किया।
- एक क्षण प्रभु यीशु से कहें कि स्वयं को एक मित्र या प्रियजन पर प्रगट करे जो उसे अभी अपना प्रभु व उद्धारकर्त्ता नहीं स्वीकारता।

6

सत्य विश्वास की प्रथम जांच
धार्मिकता

पढ़ें 1 यूहन्ना 2:28-3:10

प्रेरित यूहन्ना ने हमें उन चार रुकावटों की याद अभी दिलाई जो प्रभु यीशु के साथ संगति में आ सकती हैं। अब क्योंकि हम जानते हैं कि क्या चीज़ हमें प्रभु की संगति से रोकती है, हम अपना ध्यान एक और महत्वपूर्ण प्रश्न पर लगाते हैं। मैं कैसे जान सकता हूं कि मैं मसीह के साथ संगति में हूं? अगले कुछ अध्यायों में यूहन्ना हमें सत्य विश्वास की कई जांच बतायेगा। मैं आपको चुनौती देता हूं कि इनका ध्यानपूर्वक अध्ययन करें। सत्य विश्वास की प्रथम जांच धार्मिकता की जांच है।

यूहन्ना इस विभाग को पाठकों को चुनौती देकर आरम्भ करता है कि प्रभु यीशु में जारी रहें ताकि उसके आने पर वे शर्मिन्दा न हों (पद 28)। प्रेरित उन्हें फिर पद 29 में याद दिलाता है जो परमेश्वर से जन्मा है वह ठीक काम करेगा। हम शर्मिन्दा नहीं होंगे केवल तब जब सही काम करेंगे। यह सत्य विश्वासी का हृदय है।

यूहन्ना अध्याय 3 पर जाता है हमें हमारे प्रति परमेश्वर से महान प्रेम के विषय याद दिलाने (पद 1)। उसने हमें पाप व निराशा के संसार से बचाया। उसने हमें शैतान के जबड़े से निकाल लिया और हमें अपनी संतान बना लिया।

परमेश्वर की संतान होने के नाते हम अब वैसे नहीं हैं जैसे थे। हमें बदल दिया गया है। यह परिवर्तन इतना मौलिक है कि संसार अब हमें नहीं जानता (पद 1)। वे उसको नहीं पहचानते जो हमारे हृदयों में हो रहा है।

वह दिन आ रहा है जब प्रभु यीशु लौटेगा। जब वह आयेगा, तो हमें अपने साथ रखेगा। जो परिवर्तन हमने इस पृथ्वी पर अपने जीवनों में देखे हैं उनकी तुलना उससे नहीं की जा सकती जो हम स्वर्ग में होंगे। यूहन्ना पद 2 में कहता है कि हम प्रभु यीशु के समान हो जायेंगे। जब वह आयेगा तो हममें पाप की सामर्थ को पूर्णतया समाप्त कर देगा। शैतानी शक्तियां समाप्त हो जायेंगी। हमारा पुराना स्वभाव आगे को रुकावट न बनेगा। हम अपने प्रभु को अविभाजित हृदयों से प्रेम करेंगे। हम उसके समान होंगे, और हम उसे आमने सामने देखेंगे। वह कितना महिमापूर्ण दिन होगा।

प्रेरित यूहन्ना हमें पद 3 में याद दिलाता है कि जो आशावान हैं अपने को शुद्ध करेंगे। यदि हम प्रभु यीशु के प्रेम को समझेंगे और अनन्त जीवन की आशा रखेंगे, तो हम आज्ञा पालन करना चाहेंगे और बदले में उससे प्रेम करेंगे। यदि हम परमेश्वर से जन्मे हैं, तो उसका चरित्र व उसकी धार्मिकता हमारे जीवन में दिखाई देगी। हमारे हृदयों में एक स्वाभाविक विवशता होगी कि हम और अधिक अपने स्वामी के समान बन जायें।

यूहन्ना हमें बताता है कि पाप व्यवस्था का उल्लंघन है (पद 4) पापी के नाते हमारा स्वाभाविक झुकाव होगा परमेश्वर व उसकी व्यवस्था से फिरने का। यदि हम पर छोड़ दिया जाये तो हम परमेश्वर व उसके मार्गों की खोज नहीं करते। इससे पहले कि हमने मसीह को जाना, तो हमारे जीवनों में पाप के अनटूटे नमूने थे। पाप हम पर प्रबल होता था और हम पाप के दास थे। हमने सदा परमेश्वर से मुंह फेरा और केवल अपने लिये जीते थे, उसकी मांगों की अनदेखी करके। निरन्तर परमेश्वर की व्यवस्था को तोड़ने के दोषी हम हैं।

जब प्रभु यीशु इस पृथ्वी पर आया, तो पाप के अधिकार को तोड़ने के लिए आया जिसने परमेश्वर के साथ हमारे संबंध को तोड़ दिया था

(पद 5)। एक मात्र वही था जो हमें पाप पर जय दे सकता था। कोई उसको जीत न सकता था। केवल वही सिद्ध था। स्वतंत्र होने के लिये, अपने जीवनों में पाप के अधिकार से, वह हमारी एकमात्र आशा है।

पद 6 में यूहन्ना हमें बताता है कि जब प्रभु यीशु हमारे हृदयों में वास करने आया, उसने हमारे स्वभाव को बदल दिया। यदि वह हम में वास करता है, तो हम वैसा जीवन नहीं जीते जो केवल पाप से पहचाना जाये। 'जो उसमें वास करता है पाप नहीं करता।' पवित्रात्मा हमको सामर्थ देने आया कि वह जीवन जी सकें जिसकी परमेश्वर हम से मांग करता है। उसके वचन में इसका यह अर्थ नहीं कि हम कभी पाप के फंदे में नहीं पड़ेंगे। हम सब परीक्षा में पड़ते हैं। यहां ध्यान दें कि यूहन्ना हमें यह नहीं बताता कि सच्चा विश्वासी कभी पाप नहीं करता परन्तु यह कि सच्चा विश्वासी आदत से पाप नहीं करता। पवित्रात्मा द्वारा काम किया जाना और प्रभु यीशु के प्रति प्रेम सच्चे विश्वासी से उन पापों को दूर करना है जो उनके जीवन में दिखते हैं।

यूहन्ना हमें याद दिलाता है उस सामर्थ की जो अब विश्वासी के जीवन में वास करती है, 'प्रिय बालको, तुम परमेश्वर की ओर से हो और उन पर जयवन्त हुए हो (दुष्ट बल), क्योंकि जो तुम्हारे अन्दर है वह उससे बड़ा है जो संसार में है' (1 यूह. 4:4)। क्योंकि परमेश्वर का आत्मा अब हम में वास करता है, तो अब हमारे पास ढीठता के पापों पर जय पाने की सामर्थ है जो हमें परमेश्वर से दूर रखते हैं। सच्चे विश्वासी ऐसी सामर्थ का प्रमाण रखते हैं धर्मी जीवन जीने के लिये (सिद्ध जीवन नहीं), क्योंकि अब परमेश्वर का आत्मा उनमें रहता है।

यूहन्ना इस शक्ति की बात करता है और उसके सुसमाचार द्वारा योग्य करने की। वह विश्वासियों की तुलना दाखलता की डालियों से करता है। (यूह. 15) परमेश्वर की उपस्थिति उनमें प्रवाहित होती है और जीवन, शक्ति व फलवन्त होना लाती है। प्रेरित पौलुस भी विश्वासियों में इस सामर्थ की बात करता है। पौलुस फिलि. 2:13 में कहता है, 'क्योंकि

परमेश्वर ही है जिसने अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला।'

विश्वासियों के नाते हम वे बरतन हैं जिनके द्वारा परमेश्वर का सामर्थ प्रवाहित हो सकता है। वह हमारे हृदयों में जीवित व कार्यशील है। यह प्रमाणित हो जाता है जब हम अपने जीवनों के नियंत्रण को प्रभु यीशु को दे देते हैं। जब परमेश्वर की सामर्थ हम में काम करती है तो हमारे जीवन धार्मिकता व सेवा की नई इच्छा के होते हैं कि जो कुछ हम करें उससे प्रभु यीशु को आदर मिले।

यूहन्ना को यह स्पष्ट था कि सच्चे विश्वासी, जिनमें परमेश्वर की उपस्थिति रहती है, ढीठता के पाप में नहीं रहेंगे। यहां हमें फिर समझना होगा कि इसका अर्थ यह नहीं कि विश्वासी कभी पाप में नहीं पड़ते। 1 यूह. 1:10 में यूहन्ना बताता है 'यदि हम दावा करते हैं कि हमने पाप नहीं किया, तो हम उसको झूठा ठहराते हैं और हमारे जीवन में उसके वचन का कोई स्थान नहीं।'

हममें से प्रत्येक पाप में गिरता है। अपनी मृत्यु तक हम सबको पाप से मल्लयुद्ध करना है। यहां यूहन्ना हमें बता रहा है कि यद्यपि सच्चे मसीही पाप में पड़ते हैं परन्तु वे उसमें पड़े नहीं रहते। उस हृदय में जिसमें परमेश्वर रहता है अंगीकार न किया गया पाप नहीं रहता। ऐसे समय भी आते हैं जब पाप गुप्त स्थानों से हमारे पुराने स्वभाव के स्रोत से निकलेगा, परन्तु जब वह परमेश्वर की उपस्थिति के आमने सामने आता है, तो पराजित होता है। विश्वासियों के जीवन पाप पर जय के जीवन होने चाहिये, क्योंकि परमेश्वर उनमें वास करता है।

यदि पाप राज्य करता है और हमारे हृदय पर अधिकारी है, तो अपने से प्रश्न पूछना होगा; क्या मैं ने कभी अपने जीवन में परमेश्वर की सामर्थ का अनुभव किया है? यदि हमें अपने जीवनों में परमेश्वर की उपस्थिति का ज्ञान है, तो हमें पाप पर जय का अनुभव भी होगा।

यूहन्ना इस संदर्भ में इस परिणाम पर पहुंचता है और पद 7-8 में कुछ शक्तिशाली कथन कहता है, 'जो ठीक काम करता है धर्मी है... जो पाप करता है वह शैतान से है।' मसीह का जीवन पाप व शैतान पर जय का जीवन है। जब परमेश्वर का आत्मा हमारे जीवनों में वास करने आता है तो वह कुछ मौलिक परिवर्तन करता है। यदि हमने अपने जीवन का नियंत्रण परमेश्वर के हाथ में दे दिया है, तो हम पाप में नहीं रहेंगे। यदि परमेश्वर हम में वास करता है, तो बुराई पर निरन्तर जय को देखेंगे। जैसा उसने योना के जीवन में किया, परमेश्वर हमारा पीछा करेगा जब तक पाप व बलवा हमारे हृदयों से दूर नहीं किया जाता और हम उसके साथ सही नहीं होते।

मान्य है, सच्चे विश्वासी के नाते भी हमारे जीवन में पाप हैं जिनके साथ हमें कार्य करने में कठिनाई होती है। क्योंकि हम ढीठता के पापों से संघर्ष करते हैं परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि हम यीशु के नहीं। यहां मुद्दा है जानबूझ कर पाप करना। उचित मसीही यदि पाप जीवन में है तो अशांत रहता है। यदि हम मसीह के लिये जीते हैं, तो पाप पर प्रबल होने के लिये हर सम्भव प्रयत्न करते हैं। परन्तु यदि हम स्वयं को शांत पाते हैं अपने पाप में और बेशर्म होकर ढीठता से उनमें पड़े रहते हैं तो स्वयं से पूछना होगा कि क्या परमेश्वर का आत्मा हमारे हृदयों में वास करता है।

सच्चे विश्वासी की प्रथम जांच धार्मिकता की जांच है। जो प्रभु यीशु मसीह को जानते हैं, तो वे उसके सामर्थ व कार्यो का अनुभव अपने जीवन में पायेंगे। परमेश्वर के आत्मा की उपस्थिति तथा शक्ति पाप व बलवे को विश्वासी के हृदय से भगाकर उन्हें आज्ञाकारिता व विश्वासयोग्यता का जीवन देगी।

विचार करने के लिये

- विश्वासी के नाते अपने जीवन में आपका संघर्ष किस पाप से है?
- जब आप पाप में गिरते हैं तो आपको कैसा लगता है?
- क्या आपके जीवन में नई धार्मिकता का कोई प्रमाण है?

- प्रभु ने आपके जीवन में क्या परिवर्तन किये हैं जब से आप उसमें आये हैं?
- पाप में गिरने और पाप में फंसे रहने में क्या अन्तर है?

प्रार्थना के लिये

- परमेश्वर का धन्यवाद करें आपके जीवन में पवित्रात्मा को भेजने के लिये और पाप के प्रति कायल करने के लिये।
- परमेश्वर से कहें कि आज जिस विशेष पाप के साथ आपका संघर्षरत् हैं उस पर जय देने की विनती करें।
- एक क्षण के लिये अपने आपको अधिक पूर्णता के साथ प्रभु के आधीन उसके दास के रूप में करें। उससे मांगें कि आपको सेवकाई तथा पवित्रात्मा की वाणी के प्रति और भी जागरुक करे जो पाप के प्रति कायल करता है।

7

सत्य विश्वास की दूसरी जांच
प्रेम

पढ़ें 1 यूहन्ना 3:11-18

यूहन्ना की पहली पत्री के इस विभाग में जिस प्रश्न पर हम ध्यान दे रहे हैं वह यह है: मैं कैसे जान सकता हूं कि मैं प्रभु यीशु की संगति में चल रहा हूं? यूहन्ना कई जांच बताता है। गत मनन में हमने धार्मिकता की जांच को देखा। इस विभाग में हम दूसरी जांच को देखेंगे: प्रेम की जांच।

यूहन्ना दूसरी जांच से हमारा परिचय पद 10 में करता है। यहां वह कहता है जो 'अपने भाई से प्रेम नहीं करता' परमेश्वर की संतान नहीं है। यह महत्वपूर्ण है कि हम समझें कि भाई से प्रेम करने का क्या अर्थ है। प्रेम की गलतफहमी उस गर्मजोशी से हो जाती है जब हम किसी के साथ हैं और आनन्द उठा रहे हैं। यूहन्ना गर्मजोशी की बात नहीं करता, हर उसके साथ जिसके साथ हम मिलते हैं। वह हमें यह भी नहीं बता रहा कि सबके साथ रहना हमारे लिये आनन्द का कारण हो। कुछ लोग हैं जिनके साथ हमें कभी आनन्द आ ही नहीं सकता। यदि प्रेम गर्मजोशी का भाव नहीं, तो फिर क्या है?

'प्रेम' को समझाने के लिये प्रेरित यूहन्ना हमें प्रभु यीशु का उदाहरण देता है। 'हम इस प्रकार जानते हैं कि प्रेम क्या है।' यूहन्ना पद 16 को इस

प्रकार आरम्भ करता है। हम जानते हैं कि प्रेम क्या है क्योंकि यीशु ने अपना प्राण हमारे लिये दिया। यदि हम उस प्रकार प्रेम करना चाहते हैं जैसा परमेश्वर चाहता है कि हम प्रेम करें तो हमें मसीह से उदाहरण लेना होगा। प्रेम करने का अर्थ है दूसरे के लिये अपना प्राण देना।

कई तरीके हैं दूसरे के लिये अपना प्राण देने को। यूहन्ना पद 17 में एक उदाहरण देता है। मान लीजिये हमारे पास भौतिक सम्पत्ति है, और हम एक भाई को ज़रुरत में देखते हैं तो प्रेमपूर्ण कार्य क्या होगा? प्रेम करना यह होगा कि अपनी सम्मत्ति को उसके साथ उसकी पीड़ा को कम करने के लिये बांटें। 'अपने भाई के लिये' 'अपना प्राण देना' इस परिस्थिति में अपनी सम्पत्ति को उसके लिये बलिदान करना होगा, जैसे मसीह ने अपना जीवन हमारे लिये बलिदान कर दिया।

अपना प्राण देने का अर्थ है बलिदान करना। जो बलिदान यीशु ने दिया उसके जीवन का बलिदान था। शायद हमें शारीरिक रूप से मरने को कभी न कहा जाये परन्तु हमें यह अवश्य कहा जायेगा कि दूसरी प्रकार से मरें। कुछ को अपने अहंकार से मरना होगा। कुछ को अपने आराम से, कुछ को अपना समय व परिश्रम देना होगा। कुछ को भौतिक व आर्थिक बलिदान देना होगा। यूहन्ना यह कहता लगता है कि यदि हम दूसरों से प्रेम करते हैं तो हम अपना बलिदान देने को तैयार होंगे और उनके लिये अपनी सम्पत्ति भी। प्रेम केवल शब्द नहीं होते। प्रेम में कार्य की ज़रूरत होती है। प्रेम में समय व साधन के बलिदान की आवश्यकता होती है।

प्रेम को उपजाना होता है। यदि आप विवाहित हैं, तो आपको पता लग सकता है कि कितनी सरलता से प्रेम बासी हो सकता है। क्या आपको याद है जब पहली बार आपने अपने पति या पत्नी को देखना आरम्भ किया था? कुछ ऐसा नहीं था जो आप उनके लिये करने को तैयार न होते। आप अपनी शक्ति से भी अधिक जीवन को सुन्दर व संभव बनाने का प्रयत्न करते थे, जिसका अर्थ था, अपने बटुवे में गहरा हाथ डालना। उसका अर्थ कुछ देर रातें और कुछ भोर से पहले। उसमें आवश्यकता थी अपने समय व परिश्रम

के निवेश की। जैसे जैसे समय बीतता गया, बातें बदलने लगीं। अब आगे को आप वे बलिदान करने के लिये तैयार नहीं थे। अपने साथी को जहां तक संभव हो आराम देने के स्थान पर आप ने शायद अपने जीवन को सरल बनाने के लिये अपने साथी का प्रयोग किया होगा। आप का समय या परिश्रम स्वयं में निवेश होने लगा। आपका प्रेम धीमा पड़ने लगा और अब आप को आनन्द नहीं आता। 'अपने साथी के लिये अपना प्राण देना।'

पद 11 में यूहन्ना याद दिलाता है कि यह सदा से ही परमेश्वर की इच्छा रही है कि हम एक दूसरे से प्रेम करें- बलिदानीय रूप में। दूसरे के लिये अपना बलिदान देने को, इस विचार की जड़ सृष्टि में ही है। हव्वा की सृष्टि कैसे हुई? क्या वह आदम की पसली से नहीं हुई? आदम को हव्वा की सृष्टि के लिये एक पसली का बलिदान देना पड़ा। परमेश्वर को उसकी पसली की आवश्यकता क्यों हुई? वह आदम के समान उसे मिट्टी से बना सकता था। मेरे विचार से परमेश्वर आदम को एक सबक सिखा रहा था। वह उसे इसी बलिदानीय प्रेम के नियम को समझा रहा था। हव्वा के जन्म के लिये, आदम की ओर से बलिदान की आवश्यकता थी। अपने को बलिदान करने में, हम दूसरे को जीवन देते हैं। यह अर्थ है प्रेम करने का।

आदम व हव्वा के द्वारा पाप मानवजाति में फैला और लोगों की परमेश्वर से प्रेम करने की योग्यता समाप्त हो गई, जैसे परमेश्वर प्रेम करता है। पद 12 में हमें याद दिलाया गया है कैन व हाबिल के विषय। कैन ने अपने भाई की हत्या की, जब परमेश्वर ने हाबिल की भेंट को स्वीकारा परन्तु कैन की ग्रहण न की। कैन की आराधना ग्राह्य न हुई क्योंकि वह परमेश्वर के पास विश्वास के साथ नहीं आया (इब्रा. 11:4)। कैन परमेश्वर की संतान न थी क्योंकि वह 'दुष्ट से था' कैन का असली स्वभाव उसकी ईर्ष्या व घृणा में दिखाई दिया, अपने धर्मी भाई के प्रति। कैन की वेदी पर अपने अहंकार को न छोड़ने की इच्छा और परमेश्वर की आराधना व विश्वास न करने ने उसको अपने भाई की हत्या करने तक पहुंचाया।

अपने आप से इंकार करने का सिद्धांत अति लोकप्रिय नहीं है। यूहन्ना पद 13 में बताता है कि संसार अपना प्राण देने के उस सिद्धान्त को नहीं समझ सकता। यह सिद्धान्त हमारे समाज के स्वभाव के विरुद्ध है। प्रेरित हमें चेतावनी देता है कि हमें अचम्भा नहीं होना चाहिये यदि संसार सोचे कि हम पागल हैं और हमें अस्वीकार करे, क्योंकि हम उनके समान नहीं हैं। यह लोगों का स्वाभाविक झुकाव नहीं है कि स्वयं को दूसरों के लिये बलिदान करें। सच्चा विश्वासी अपने भाई से घृणा नहीं करता, 'जो अपने भाई से घृणा करता है वह हत्यारा है' (पद 15)। इस पद के अनुसार, हमें शाब्दिक रूप से हत्यारा होने के लिये किसी की हत्या करने की आवश्यकता नहीं। परमेश्वर के सामने हत्यारा होने के लिये हमें केवल यह करना है कि दूसरों के प्रति घृणा अपने हृदय में रखते हुए जियें। हम परमेश्वर के साथ संगति में नहीं रह सकते यदि घृणा को बढ़ावा देते हैं। यदि हम प्रेम नहीं करते तो हम मृत्यु में रहते हैं (पद 14)। दूसरे शब्दों में, जो प्रेम नहीं करते वे परमेश्वर के न्याय व दण्ड के आधीन हैं।

यूहन्ना इस विभाग का सारांश हमें याद दिलाकर करता है कि 'हम जानते हैं कि हम मृत्यु से निकलकर जीवन में पहुंच चुके हैं, क्योंकि हम अपने भाइयों से प्रेम करते हैं' (पद 14)। जब परमेश्वर विश्वासी के हृदय में रहता है, तो उस हृदय में प्रेम होता है। घृणा, कड़वाहट व ईर्ष्या उस हृदय से दूर हो जाते हैं जिसमें परमेश्वर वास करता है। जब परमेश्वर हमारे हृदयों में रहता व राज्य करता है तो उसका प्रेम हमारे भाइयों व बहनों के लिये स्पष्ट दिखता है।

सच्चे विश्वास की दूसरी जांच, प्रेम की जांच है। हम जान सकते हैं कि हम परमेश्वर के साथ संगति में हैं, उसकी संतान के रूप में, यदि हम मसीह के आत्म-बलिदान का अपने हृदयों में दूसरों के लिये अनुभव करते हैं। यह प्रेम वह प्रेम नहीं जिसको हम पहले से जानते थे। यह हमारा प्रेम नहीं। हम कभी भी इस प्रकार स्वाभाविक रीति से प्रेम नहीं कर सकते थे। यह नया है। यह सत्य है। यह परमेश्वर हमारे अन्दर है।

विचार करने लिये

- जब आप प्रभु यीशु को जान लेते हैं तो अपने चारों ओर के लोगों के प्रति आपके संबंधों में क्या अन्तर आता है? क्या आप उन्हें अधिक प्रेम करते हैं?
- आपके मानवीय प्रेम और उस प्रेम में जो यीशु आपके हृदय में रखता है क्या अन्तर हैं?
- क्या ऐसे लोग हैं जिनसे प्रेम करने में आपको संघर्ष करना पड़ता है? क्या परमेश्वर इन लोगों से प्रेम करता है? आप उसको अपने द्वारा कैसे प्रेम करने देंगे?

प्रार्थना के लिये।

- क्या आपके जीवन में कोई है जिससे प्रेम करना कठिन है? प्रभु यीशु से मांगें कि वह उनसे प्रेम करने में आपकी सहायता करे।
- नये हृदय के लिये प्रभु का धन्यवाद करें जो उसने आपको दिया है। उसका धन्यवाद करें कि कैसे उसने घृणा के अंधेरे को आप से दूर किया है और उसके बदले ज्योति व गर्मजोशी के अपने प्रेम से भर दिया है।
- कुछ क्षण प्रार्थना करें कि हमारे समय की कलीसिया इस आत्म-बलिदान के प्रेम का नवीनीकरण एक दूसरे के प्रति अनुभव करें।

8

सत्य विश्वास की तीसरी जांच
नवीन हृदय

पढ़ें 1 यूहन्ना 3:19-24

यूहन्ना की पहली पत्री बहुत ही व्यावहारिक है। यूहन्ना हमारे विश्वास के आधारों के विषय चिन्तित है। हम जांच कर रहे हैं इस प्रश्न की: हम कैसे जान सकते हैं कि मैं ज्योति की संगति में परमेश्वर की संतान के रूप में चल रहा हूं? प्रेरित सत्य विश्वास की दो जांच दे चुका है। अब यूहन्ना तीसरी जांच देता है नये किये गये हृदय की जांच।

यह प्रश्न कि हम परमेश्वर की सचमुच संतान हैं और ज्योति में चलते हैं वह प्रश्न है जो हम सब को स्वयं से पूछना चाहिये। यदि आप किसी भी प्रकार मेरे समान हैं तो अपने जीवन में कई बार आप अपने पापी जीवन से पूरी तरह झटका खायेंगे। ऐसे समय होते हैं जब हम अपने हृदयों की दशा को देखते हैं और पहचानते हैं कि परमेश्वर से हम कितनी दूर हैं। लगता है जितना निकट प्रभु के हम जायेंगे, उतना ही पापी महसूस करेंगे। किसी ने मसीही जीवन की तुलना उस व्यक्ति से की जो अंधेरी वर्षा की संध्या जंगल से गुज़र रहा हो। वह स्पष्ट नहीं देख पाता अपने मित्र के घर के मार्ग को जो जंगल के उस पार है। चलते हुए वह ठोकर खाता है, एक पुराने पेड़ की जड़ से और कीचड़ में गिर पड़ता है। वह उठता है, गन्दगी को दूर करता है और अपने रास्ते चलता है। जल्दी ही उसे मित्र के आंगन

की बत्ती दिखाई देती है जो पेड़ों में से दूर नज़र आती है। जब वह बत्ती के पास पहुंचता है तो अपने वस्त्र को देखता है और जानता है कि कितना गन्दा है। कई मिनट गुज़र जाते हैं और वह मित्र के घर के और निकट आता है। वह फिर स्वयं पर दृष्टि डालता है और गन्दगी को देखता है जो पहले नहीं दिखाई दी थी। जितना ज्योति के निकट जाता है उतनी ही गन्दगी और दिखती है। यही हमारे प्रभु के साथ संबंधों में होता है! जितना अधिक निकट उसकी पवित्रता के प्रकाश में हम जाते हैं, उतना ही गन्दा और अधिक पापी हम स्वयं को देखते हैं।

हमारे जीवन में कुछ समय होते हैं, यूहन्ना पद 20 में कहता है कि जब हमारे हृदय हम पर दोष लगाते हैं। कई बार अपने हृदय की गहराई में हम झांकते हैं और पाप के कालेपन को देखते हैं। कुछ समय होते हैं जब प्रभु की उपस्थिति स्पष्ट नहीं दिखती। प्रभु बहुत दूर नज़र आता है। ऐसे समयों में हम उसकी उपस्थिति में अपने हृदय में चैन कैसे पा सकते हैं (पद 19)? एक पापी हृदय की सत्यता में, हम कैसे जान सकते हैं कि हम सत्य के हैं? पद 20 बताता है कि हम जान सकते हैं कि हम अभी उसकी संतान हैं क्योंकि परमेश्वर हमारे 'पापी हृदयों' से बड़ा है और वह सब कुछ जानता है। आइये विस्तार से देखें कि यूहन्ना यहां क्या कहना चाहता है।

हृदय के विषय हम क्या कहते रहे हैं? हम कहते रहे हैं कि हृदय का यह स्वभाव है कि परमेश्वर से फिरे। यिर्मयाह नबी बताता है, 'हृदय सब वस्तुओं से अधिक चंचल है, उसका इलाज नहीं। उसे कौन समझ सकता है?' (1 यिर्म. 17:9)

एक और वचन हमें बताता है कि नूह के दिनों में 'परमेश्वर ने देखा कि मनुष्य की बुराई बहुत बढ़ गई है, और उसके मन में जो उत्पन्न होता है वह बुरा ही होता है।' (उत. 6:5) बाइबल हमारे हृदय का यह विवरण देती है। हमें शायद पसन्द न आये कि बाइबल क्या कहती है, परन्तु हम जानते हैं यह सत्य है।

मैं स्वयं से कई बार यह प्रश्न करता हूं; मैं क्या करूंगा यदि मुझे स्वाभाविक रीति से करने को अकेले छोड़ दिया जाये? यदि पालन पोषण, नियम या अपना सम्मान बनाये रखने की इच्छा के बंधन न होते, तो मैं क्या करता? यदि मेरे हृदय में परमेश्वर का अनादर करने का डर न होता, तो मैं आज कहां होता? मैं कहां होता यदि मैं अपनी पतित इच्छाओं को अपने जीवन पर राज्य करने देता? मैं कहां होता यदि मैं अपने पापी हृदय को बताने देता कि मैं कौन सा मार्ग लूं? ऐसे समय होते हैं जब इन प्रश्नों का उत्तर देने में मुझे डर लगता है। जब मैं इन प्रश्नों पर ध्यान देता हूं तो अपने हृदय के कालेपन को पहचानना पड़ता है। इन अनिश्चियताओं के मध्य मैं कैसे जान सकता हूं कि मैं परमेश्वर की संतान हूं? जब मेरा अपना हृदय मुझे दोषी ठहराता है, तो मैं यीशु का होने का कैसे दावा कर सकता हूं?

यूहन्ना मुझे याद दिलाता है कि जब मेरा हृदय मुझे दोष देता है, तो मुझे याद करना है कि परमेश्वर मेरे पाप से अधिक सामर्थी है। क्योंकि मैं प्रभु यीशु का हूं और वह मुझ में वास करता है। मैं बुरी इच्छा पर जय का अनुभव करता हूं। जब से यीशु मेरे हृदय में आया है, तो मुझे मेरे बुरे हृदय के दासत्व से छुटकारा मिला। मैं अपने जीवन में एक नई शक्ति का अनुभव करता हूं। मैं पाप पर जय का अनुभव पाता हूं। मैं देख रहा हूं कि मसीह का प्रेम स्वाभाविक घृणा व कड़वाहट पर जय पा गया, जो मुझ पर राज्य करता था। हां, परमेश्वर मेरे पापी हृदय से बड़ा है। जब शत्रु मुझ पर दोष लगाता है और मेरे बुरे हृदय के पापी होने की ओर इशारा करता है, मैं उसे बता सकता हूं कि यद्यपि यह मेरा स्वभाव है, पर अब मैं उसका गुलाम नहीं। परमेश्वर मुझे नया जीवन जीने की सामर्थ देता है। जब आपका हृदय आपको दोषी ठहराये, तो उसकी ओर ताकें जो आपके हृदय से बड़ा है।

दूसरे यूहन्ना पद 20 में मुझे याद दिलाता है कि परमेश्वर सब कुछ जानता है। परमेश्वर हमारे हृदयों को जानता है। वह जानता है कि हम कितने पापी हैं। वह हमारी योग्यता व शक्ति की ज़रुरत को जानता है। वह उन बातों को जानता है जिनसे हमारा संघर्ष है। वह उन क्षेत्रों को जानता

है जहां हमें जय की आवश्यकता है। वह हमारे हृदयों को हमसे बेहतर जानता है। न केवल परमेश्वर वह सब कुछ जानता है जो मेरे हृदय में होता है, वह यह भी जानता है कि उसके लिये क्या करना है। वह हमारे पाप से अधिक बड़ा है।

परमेश्वर हमें और हमारी ज़रूरत को जानता है। हमारे जीवन के उन गुप्त पापों को जानता है जिन पर जय पानी है। और वह जानता है कैसे उन पर जय पायें। कोई चोट नहीं जिसका इलाज वह नहीं जानता। कोई पाप नहीं जिस पर जय पाना वह नहीं जानता। अभी उसके पास हमारे हृदय की आवश्यकता का उत्तर है।

प्रेरित ने हमें बताया है कि परमेश्वर हमारे हृदय से अधिक सामर्थी है। उसने हमें यह भी याद दिलाया है कि परमेश्वर जानता है कि ज़ख्म कैसे ठीक होंगे और हमारे हृदय के पाप भी। यूहन्ना पद 22 में हमें बताता है कि परमेश्वर हमें वह सब देना चाहता है जो हम उससे मांगते हैं। यह कितनी अविश्वसनीय प्रतिज्ञा है। हमारे पास स्वयं परमेश्वर की प्रतिज्ञा है कि जब हमारा मल्लयुद्ध हमारे हृदयों से हो, हमें केवल यह करना है कि उसको पुकारें और वह उत्तर देगा। यह महत्वपूर्ण है कि इस कथन को हम उसके संदर्भ में देखें।

यूहन्ना हमें बताता है कि हम जो मांगें मिल सकता है, पर इस प्रतिज्ञा के साथ एक शर्त है। ध्यान दें वह हमें बताता है कि हम जो चाहे पा सकते हैं, 'क्योंकि हम उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं और वह जो उसे पसन्द है' (पद 22)। यह प्रतिज्ञा उनके लिये नहीं जो मसीह से अलग रहते हैं। आज्ञा उनके लिये है जिनके हृदय उनको दोषी नहीं ठहराते।

हमारे हृदय के लिये हमें दोष देना कैसे संभव है? यह केवल संभव है जब हम परमेश्वर को अपने हृदय में राज्य व हमारे पापी हृदयों पर प्रबल होने देते हैं। हमारे हृदय हम पर दोष नहीं लगा सकते यदि हम परमेश्वर की आज्ञाओं अनुसार जीते हैं और वह करते हैं जो उसे पसन्द है। यद्यपि मैं पाप में रहूं, मेरा हृदय मुझे दोष नहीं दे सकता जब मैं पाप को मसीह

की क्रूस के नीचे लाता हूँ। क्रूस में पूर्ण क्षमा व शुद्धिकरण है। यूहन्ना हमें क्षमा व शुद्धिकरण में जीने को कहता है।

इस संदर्भ में मैं और आप उसके नाम से कुछ भी मांगें और वह हमारे लिये करेगा। जब मैं उसको अनुमति देता हूं, जो मेरे हृदय से बड़ा है, कि मेरे जीवन का सर्वोच्च राजा हो तो मैं उस प्रतिज्ञा का दावा कर सकता हूं। जब मेरा हृदय प्रभु द्वारा जीत लिया गया और मैं पापी इच्छाओं के लिये मर गया तो मैं उसके नाम से कुछ भी मांगने का आनन्द पा सकता हूं। जब उसकी इच्छाएं मेरी हैं और उसकी आत्मा ने मुझ पर जय पाई है, तो मैं उससे कुछ भी मांग सकता हूं और वह मेरे लिये किया जायेगा।

हम कैसे जान सकते हैं कि हम प्रभु यीशु के साथ संगति में चलते हैं? यूहन्ना हमसे आन्तरिक जांच करने को कहता है। जब हम अपनी आत्माओं में गहराई से देखते हैं, तो क्या उसे देखते हैं जो हमारे हृदयों से अधिक सामर्थी है? क्या आत्मिक जय का प्रमाण है? क्या प्रमाण है कि हमारा पुराना धोखेबाज़ हृदय जीता गया है? क्या उसका जीवन अब मेरी नसों में धड़कता है? क्या अभी पापी मनुष्य का पुराना जीवन है या उसका नया जीवन हमारे हृदयों पर जय पा चुका है? हम जानते हैं हम मसीही हैं क्योंकि हमारी इच्छाएं व महत्वाकांक्षाएं बदल गई हैं। हमारा हृदय सचमुच जीत लिया गया है, और हमें नया हृदय मिल गया है?

विचार करने के लिये

- क्या आपके जीवन में प्रमाण है एक बदले व नये हृदय का? वह प्रमाण क्या है?
- क्या परमेश्वर ने आपके पाप क्षमा कर दिये? आप कैसे जानते हैं?
- आप के हृदय व जीवन में क्या विशिष्ट परिवर्तन हुए हैं जब से आपने प्रभु यीशु को जाना है?
- उसके नाम से कुछ भी मांगने पर पाने की शर्तें क्या हैं?

- परमेश्वर आपके हृदय से अधिक सामर्थी है, इस सत्य से आपको क्या तसल्ली मिलती है?

प्रार्थना के लिये

- परमेश्वर का धन्यवाद करें उस अद्भुत तरीके के लिये जिससे उसने आपको क्षमा प्रदान की है।
- परमेश्वर का धन्यवाद करें उस स्वच्छ हृदय के प्रमाण के लिये जो उसने आपको दिया है।
- परमेश्वर का धन्यवाद करें कि कोई पाप ऐसा नहीं जिस पर वह आपको जय न दे।
- कुछ क्षण के लिये एक मित्र या प्रिय जन के लिये प्रार्थना करें जिसने कभी इस परिवर्तित व नवीन हृदय का अनुभव नहीं किया।
- क्या आपके जीवन में कोई विशिष्ट पाप है जिस पर आपको जय पानी है? प्रभु यीशु से मांगें कि आप को पूर्ण जय दे।

9

सत्य विश्वास की चौथी जांच

आत्मा

पढ़ें 1 यूहन्ना 4:1-6

हम कैसे जान सकते हैं कि हम परमेश्वर की सत्य संतान के रूप में किस प्रकार ज्योति के साथ संगति में चलते हैं? यूहन्ना ने हमें धार्मिकता, प्रेम व हृदय की जांचें दीं। चौथी जांच आत्मा की है।

यूहन्ना हमें प्रत्येक आत्मा की जांच करने को कहता है यह निश्चय पाने के लिये कि वह परमेश्वर की ओर से है (पद 1)। यहां यूहन्ना किस की बात करता है जब 'आत्मा' कहता है? शब्द 'आत्मा' के वचन में कई अर्थ हैं। यह उस खास को बताता है जो हम सांस लेते हैं। आत्मिक आयाम में, यह पवित्रात्मा या दुष्टात्मा को बताता है। इसके आगे, मनुष्य के उस भाग को बताता है जो उसे सोचने व तर्क करने की योग्यता देता है। इससे भी आगे, मनुष्य का यह वह भाग है जो अलौकिक के साथ संगति कर सकता है।

हमारे अनुच्छेद में यूहन्ना छः आत्माओं की बात करता है:

1. परमेश्वर का आत्मा (पद 2)
2. आत्मा जो मसीह का अंगीकार करती है (पद 2)
3. वह आत्मा जो अंगीकार नहीं करती (पद 3)

4. मसीह विरोधी की आत्मा (पद 3)

5. सत्य का आत्मा (पद 6)

6. झूठ की आत्मा (पद 6)

यह समझने के लिये कि यूहन्ना किस विषय पर बात कर रहा है, हमें इन आत्माओं की जांच करनी है। 'परमेश्वर का आत्मा' (पद 2) पवित्रात्मा की बात करता लगता है। 'आत्मा जो मसीह का अंगीकार करती है' (पद 2) उस व्यक्ति का हृदय है जो प्रभु यीशु तथा उसके दावों के पक्ष में बात करता है। 'वह आत्मा जो मसीह का अंगीकार नहीं करती' (पद 2) उस व्यक्ति का हृदय है जो प्रभु यीशु को अस्वीकार करता है। 'मसीह विरोधी की आत्मा' (पद 3) शैतान द्वारा प्रेरणा प्राप्त हमारे युग की बात करता है जो मसीह व उसके दावों को अस्वीकारता है। 'सत्य का आत्मा' (पद 6) सत्य की शिक्षा जैसी परमेश्वर के आत्मा ने दी। 'झूठ की आत्मा' पद 6 में गलत शिक्षा को बताती है जैसा कि मसीह विरोधी या शैतान की आत्मा सिखाती है।

यह कहने के बाद, अब हम जांच करें कि यूहन्ना इन भिन्न आत्माओं के लिये क्या कहता है। वह हमें याद दिलाते हुए कहता है कि सब आत्माएं अच्छी नहीं। इसके स्पष्ट उदाहरण हैं 'मसीह विरोधी की आत्मा' और 'झूठ की आत्मा' यूहन्ना के दिनों में भी बहुत से झूठे नबी थे जो 'जगत में फैल गये हैं' (पद 1)। ये झूठे नबी शैतान के हाथ के उपकरण थे कि लोगों को परमेश्वर के वचन के सत्य से भटकायें।

यदि आपने कभी बाग लगाया तो आप घास फूस की समस्या को जानते होंगे। बाग में ये घास फूस सब्ज़ी व फलों को दबाती है। यह घास फूस सामान्यता तेज़ी से बढ़ती है और भूमि से भोजन को खींच लेती है। माली जानते हैं कि यदि अच्छी फसल चाहिये तो समय पर उन्हें उस खरपतवार को हटाना होगा। एक महत्वपूर्ण बात जो माली को मालूम होनी चाहिये यह है कि उसे सब्ज़ी और घास के पौधे में अन्तर ज्ञात हो। यहां यूहन्ना हमें बता रहा है कि यह संसार बाग के समान है। सत्य के पौधे उसी भूमि में आते हैं जहां अपराध व झूठ के पौधे उगते हैं। हम कैसे जानते हैं

कि परमेश्वर का क्या है तथा मसीह विरोधी का क्या है? यूहन्ना इस संदर्भ में हमें कुछ निर्देश देता है।

पहला, हरेक आत्मा जो मानती है कि 'यीशु मसीह परमेश्वर की ओर से शरीर में आया' (पद 2) कि यीशु मसीह 'शरीर में आया' को मानने का क्या अर्थ है? अति आधारभूत स्तर पर इसका अर्थ यह है कि हम विश्वास करते हैं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है जो हमारे मध्य रहा। वह हमारे पापों के लिये मरा, मृतकों में से जी उठा, और अब अपने पिता के साथ स्वर्ग में है।

परन्तु और भी बहुत कुछ है मानने के लिये कि यीशु मसीह शरीर में आया, इसकी तुलना में कि वह पृथ्वी पर चला फिरा। हमारे जीवनों के लिये भी कुछ व्यावहारिक अर्थ है। प्रभु यीशु हमें शैतान व पाप के फंदे से बचाने आया। वह आया क्योंकि हम पापी थे और परमेश्वर बिना अनन्त काल के दण्ड के भागी थे। वह शैतान का सिर कुचलने आया। यह मानना कि यीशु हमारी खातिर देहधारी हुआ हमारी ओर से प्रतिक्रिया मांगता है। प्रभु को मानना यह पहचानना है कि यदि वह मेरे लिये मरा तो कोई भी बलिदान मेरे लिये इससे बड़ा नहीं किया जा सकता। यीशु को मानना मेरा जीवन समर्पित करना व देना है उस अद्‌भुत बलिदान के बदले जो हमारे लिये दिया गया। क्या हमारे भीतर आत्मा आपको प्रभु यीशु के कार्य की गहरी सराहना में ले जाता है, हमारी ओर से? क्या यह हमको उत्साहित करता है कि अपना सब हम उसको समर्पित कर दें उसके अद्‌भुत बलिदान के कारण? यदि करता है, तो हमारे अन्दर जो आत्मा है वह परमेश्वर का आत्मा है, यदि नहीं तो वह मसीह विरोधी का आत्मा है (पद 3)।

आत्माओं को जांचने का दूसरा तरीका पद 4 में दिया है। यूहन्ना हमें बताता है कि हम जान सकते हैं कि हमारा आत्मा परमेश्वर की ओर से है यदि हम ने इस जगत की आत्मा पर जय पाई है। जैसा हम देख चुके हैं, यह संसार झूठ और गलत बातों से भरा है। मसीह विरोधी की आत्मा जीवन के हर पहलू में बसी है। विज्ञापन से टी. वी. तक तथा शिक्षा से मनोरंजन तक

मसीह विरोधी की आत्मा नज़र आती है। वह परमेश्वरहीन जीवन को बढ़ावा देती है। यह मनुष्य को सृष्टि के सिंहासन पर बैठाती है तथा दावा करती है कि वह ईश्वर है। मसीह विरोधी की आत्मा बुलाती है कि हम जितना अधिक से अधिक संभव हो जगत के आनन्द व सम्पत्ति को ले लें। वह हमें निमंत्रण देती है कि अपने ऊपर से रुकावटों को हटा कर जैसा चाहे करे। वह हमें बताती है कि परमेश्वर के नियम व्यर्थ रुकावट है परिपूर्णता का जीवन जीने के मार्ग में। और बहुत से इस फंदे में फंस गये।

हमारा स्वाभाविक झुकाव शत्रु की परीक्षाओं का शिकार हो जाता है। परन्तु एक शक्ति है जो विश्वासी के हृदय में रहती है जो मसीह विरोधी की आत्मा से बड़ी है। वह आत्मा जो विश्वासी के भीतर है उस आत्मा पर जय पाती है जो जगत में है-उसकी लालसाएं और उसकी परीक्षाएं। तब हम निश्चय पा सकते हैं कि जो आत्मा हमारे भीतर है परमेश्वर का आत्मा है। मत्ती के सुसमाचार में यीशु फरीसियों को याद दिलाता है कि ऐसा राज्य जो अपने में ही बंटा हो खड़ा नहीं रह सकता, 'हर वह राज्य जो अपने में बंटा है नाश हो जायेगा, और प्रत्येक नगर या कुल जो अपने में बंटा है खड़ा न रह सकेगा (यदि शैतान ही शैतान को निकालेगा, तो उसका राज्य कैसे खड़ा रह सकता है?)' (मत्ती 12:25)

इस जगत का आत्मा परमेश्वर के आत्मा से युद्ध करता है। यदि हम पाते हैं कि हमारे अन्दर जो आत्मा है इस संसार के प्रभावों को निकाल रहा है जिस में हम रहते हैं, तो यह मान सकते हैं कि जो आत्मा हमारे भीतर काम कर रहा है परमेश्वर का आत्मा है। वह हमें मसीह के स्वरूप पर बनाता व रूप देता है। जब पवित्रात्मा हमारे हृदयों में वास करता है, तो नई लालसाएं हमारे अन्दर राज्य करती हैं। संसार अपने आकर्षण को खो देता है। परमेश्वर की बातें नया अर्थ व महत्व हमारे जीवन में पाती हैं। जब हमारे भीतर आत्मा परमेश्वर की ओर से है तो हमें जगत की बातों पर जय प्राप्त होती है।

पद 6 में यूहन्ना आत्माओं को जांचने का तीसरा तरीका बताता है जो हम लोगों में पाते हैं। यदि लोग परमेश्वर की संतान हैं, तो वे सत्य को

समझेंगे तथा ग्रहण करेंगे, अच्छी शिक्षा देने वाले शिक्षक से। यूहन्ना कहता है कि जो परमेश्वर को जानता है हमारी सुनता है। परमेश्वर का आत्मा विश्वासी को इस योग्य करता है कि वह सत्य को पहचाने। जो परमेश्वर को नहीं जानते प्रेरिताई शिक्षा को ग्रहण नहीं कर सकते। उनके कान बन्द होते हैं और परमेश्वर का वचन उनके लिये कोई अर्थ नहीं रखता। वे बाइबल पढ़ते होंगे, परन्तु उसका उनके लिये कोई अर्थ नहीं होता। यहां तक कि जब सत्य उन्हें समझाया जाता है तो उसे नहीं समझ पाते। जो संसार के हैं वे संसार की बातों को ही समझते हैं।

जो परमेश्वर के हैं वे सत्य को ग्रहण करते हैं, जब उसको सुनते हैं। इससे पहले कि परमेश्वर का आत्मा हमारे हृदयों में वास करता था, हम सच्ची शिक्षा को पहचानते नहीं थे, सुनते या समझते नहीं थे। परन्तु अब हम जानते हैं कि परमेश्वर सत्य है। वह हमसे हमारी आत्मा में बात करता है। हमें आत्मिक बातों की समझ है जो पहले कभी नहीं थी। हम उसके वचन में होकर बोलते सुनना पसन्द करते हैं। वह हमारी अगुवाई करता है जब हमें जानना होता है कि किधर जाना है। वह हमसे शांति की बातें करता है जब हम निरुत्साह होते हैं। वह हमें कायल करता है जब हम गलत मार्ग पर चलते हैं। वह हमारे निकट आ जाता है किसी भी मित्र की तुलना में। हमें उसकी सुनने में आनन्द आता है। हम आज कह सकते हैं कि वह हमारा मित्र व परमेश्वर दोनों है। मूसा के समान, हम उसके साथ संगति करते हैं जैसे कि मित्र, मित्र के साथ।

हम कैसे सत्य के आत्मा और झूठ की आत्मा में अन्तर को पहचान सकते हैं? हम कैसे जान सकते हैं कि कौन सा आत्मा हमारे हृदय, हमारी कलीसिया या हमारे समाज में रहता है? हम उस आत्मा की जांच इन तीन प्रश्नों के प्रकाश में कर सकते हैं। पहला, क्या हमारा आत्मा मानता है कि यीशु शरीर में आया और इसलिये नम्रता से सब कुछ उसके आधीन करते हैं? दूसरे, क्या हमारे भीतर की आत्मा इस संसार में मसीह विरोधी की आत्मा पर जय पाती है? तीसरे, क्या हमारे भीतर की आत्मा, हमारे मनों को सत्य प्राप्त अधिक निकटता के संबंध में खोलती है? केवल इन प्रश्नों का

उत्तर देकर हमें निश्चय मिलता है कि हम में सचमुच परमेश्वर का आत्मा है।

हम जान सकते हैं कि हम ज्योति की संगति में चलते हैं, परमेश्वर की संतान के रूप में, उस आत्मा की जांच करके जो हम में वास करती है। यदि हमारे अन्दर की आत्मा परमेश्वर की आत्मा के अनुसार है, तब हम जानते हैं कि हमारी संगति ज्योति के साथ है और हम सत्य में चलते हैं।

विचार करने के लिये

- यहां यूहन्ना हमें क्या जांच बताता है यह निश्चय पाने के लिये कि हमारे भीतर जो आत्मा है वह सचमुच परमेश्वर का आत्मा है?
- क्षण भर के लिये अपने हृदय को जांचें। ये जांच आप पर क्या प्रगट करती है उस आत्मा के विषय जो आप में वास करता है?
- उसी जांच को अपनी कलीसिया पर लागू करें और वह इस समय किस में से गुज़र रही है। क्या वह जांच आप पर कुछ प्रगट करती है। आपकी कलीसिया के विषय?

प्रार्थना के लिये

- अपनी आत्मा को आपके भीतर रखने के लिये प्रभु का धन्यवाद करें।
- परमेश्वर से कहें कि आपको और अधिक पवित्रात्मा से भरे।
- उससे मांगें कि संसार के अधर्मी प्रभाव को आपके जीवन से दूर करे।
- क्षण भर अपनी कलीसिया के लिये प्रार्थना करें, कि मसीह विरोधी की आत्मा को उसमें से निकाले। यही प्रार्थना अपने समाज के लिये करें।

10

परमेश्वर का प्रेम मुझ में

पढ़ें 1 यूहन्ना 4:7-21

सत्य विश्वास का सबसे विशेष चिन्ह प्रेम है। यूहन्ना कई बार प्रेम की बात करता है और विश्वासी के जीवन में उसके महत्व के विषय। यूहन्ना अपने सुसमाचार में हमें याद दिलाता है कि दूसरे जानेंगे हमारे आपसी प्रेम के कारण कि हम विश्वासी हैं। (देखें यूहन्ना 13:35) आज के मनन में वह प्रेम के चिन्ह के महत्व की विस्तारपूर्वक जांच करता है।

यूहन्ना हमें याद दिलाता है इन पदों में कि परमेश्वर प्रेम है (देखें पद 8 व 16)। यह तर्क का आधार बनाता है। यूहन्ना यह नहीं कहता कि परमेश्वर केवल प्रेम है। परमेश्वर सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञानी व पवित्र है। परमेश्वर के और बहुत से गुण हैं। यूहन्ना क्यों इस संदर्भ में प्रेम के गुण पर बल देता है? क्या यह इसलिये कि मनुष्य व परमेश्वर के मध्य पवित्रता के कारण हमारे मध्य असीमित दूरी है। परमेश्वर अनन्त व असीमित है, जबकि हम समय व स्थान के प्राणी हैं। हमारी समझ बहुत सीमित है।

पापी मनुष्य के नाते, परमेश्वर के साथ हमारी एकमात्र कड़ी प्रेम है। यदि हम परमेश्वर के गुणों की सूची में से प्रेम को हटा दें तो हम स्थायी रूप पर परमेश्वर से दूर हो जायेंगे। उसकी पवित्रता व उसका न्याय हम पर भारी होगा और हम अनन्तकाल के लिये दण्डित होंगे। यह तो केवल

प्रेम के कारण है कि हम परमेश्वर के साथ संबंध रख सकते हैं। यह प्रेम के कारण है कि क्षमा संभव है।

आरम्भ से ही, यूहन्ना हमें बताना चाहता है कि परमेश्वर केवल प्रेम ही नहीं, परन्तु वह प्रेम का स्त्रोत भी है। जहां परमेश्वर होता है वहां प्रेम का राज्य होता है। जब परमेश्वर हमारे हृदयों में रहता है, तो हमारे जीवन प्रेम से भर जाते हैं। परमेश्वर का राज्य प्रेम का राज्य है क्योंकि वह प्रेम प्रेम का स्त्रोत है। यदि हम प्रेम नहीं करते, यह इसलिये कि हम अपने जीवनों में परमेश्वर की उपस्थिति को नहीं जानते। यूहन्ना हमें पद 12 में बताता है कि यद्यपि हम में से किसी ने परमेश्वर को कभी नहीं देखा, तो हम उसकी उपस्थिति को अपने हृदयों में उसके प्रेम के द्वारा जानते हैं। प्रेम परमेश्वर की हमारे जीवनों में उपस्थिति का प्रमाण है।

प्रश्न किया जा सकता है, क्या परमेश्वरहीन व्यक्ति दूसरों से प्रेम कर सकता है? इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये हमें समझना होगा कि यूहन्ना का 'प्रेम' से क्या अर्थ है। इसको समझाने के लिये यूहन्ना हमारा ध्यान प्रभु यीशु की ओर करता है। पद 19 में यूहन्ना बताता है कि हम परमेश्वर से प्रेम कर सकते हैं केवल इसलिये कि पहले उसने हमसे प्रेम किया। परमेश्वर ने वह प्रेम हमसे किस प्रकार दिखाया? पद 9 व 10 हमें बताते हैं कि परमेश्वर ने हमसे प्रेम दिखाया अपने पुत्र प्रभु यीशु मसीह को भेजकर कि वह हमारे पापों के लिये अपना प्राण दे। प्रभु यीशु को अपना प्राण हमारे लिये देने के लिये भेजकर परमेश्वर ने हमें दिखाया कि प्रेम करने का क्या अर्थ है। दूसरों से प्रेम करने का अर्थ है उनके लिये अपना प्राण देना। दूसरों से प्रेम करने का अर्थ है उनकी भलाई को स्वार्थी इच्छाओं से ऊपर रखना। सच्चा मसीही प्रेम मित्र व शत्रु में अन्तर नहीं करता। मसीह उनके लिये प्राण देने आया जो उससे घृणा करते थे। उसने अपना प्राण शत्रुओं को बचाने के लिये दिया।

आइये अपने प्रश्न पर लौटें। क्या परमेश्वरहीन स्त्री या पुरुष दूसरों से प्रेम कर सकता है? आइये मैं इस प्रश्न को व्यक्तिगत बनाऊं। जब मैं अपने हृदय को गहराई से देखता हूं, तो मुझे याद दिलाया जाता है कि दरअसल

में कितना आत्म-केन्द्रित हूं। कोई भी प्रेम जो मैं अपने हृदय में पाता हूं वह स्वाभाविक रीति से आत्म-केन्द्रित होगा। मैं प्रेम करूंगा ताकि मुझ से प्रेम किया जाये। मैं पाने के लिये देता हूं। मैं आदर करता हूं ताकि मेरा आदर किया जाये। मैं, स्वाभाविक है अपने शत्रुओं से प्रेम नहीं करूंगा। दूसरों के साथ मेरे संबंध एक अस्थिरता के होंगे। दूसरों के प्रति मेरा प्रेम सुविधा के अनुसार होगा। मैं उनसे प्रेम करूंगा, यदि वह मुझे ठीक लगेगा और मेरे लाभ का होगा।

जब मैं किसी और मनुष्य को दूसरे के प्रति नि:स्वार्थ प्रेम करते देखता हूं, तो मुझे विश्वास होता है कि मैं सचमुच परमेश्वर के हाथ को देख रहा हूं, क्योंकि मैं जानता हूं कि मानव स्वभाव बिगड़ा हुआ है। मेरा विश्वास है कि जब कभी विश्वासी (या अविश्वासी) नि:स्वार्थ प्रेम दिखाता है, तो परमेश्वर स्वयं उसको इस योग्य करता है। मेरे समाज में कोई भी नि:स्वार्थ प्रेम का प्रमाण, मेरा विश्वास है, इशारा है मेरे समाज में परमेश्वर की अनुग्रहकारी उपस्थिति का। मैं स्वयं से पूछता हूं, हम कहां होते यदि परमेश्वर हमारे देश से अपनी उपस्थिति को हटा देता। हम हत्याओं और गर्भपातों में वृद्धि को देखते। हम और अधिक अपने साथी मानवों का व उनकी सम्पत्ति का अपमान देखते। बालात्कार और यौन हिंसा बढ़ती। तलाक की गति ऊंची होती। विवाह पर ही प्रश्न उठने लगते। जोड़े एक साथ रहते बिना जीवनपर्यन्त एक दूसरे के साथ वचनबद्धता के द्वार खुले छोड़ते, यदि सब कुछ उनकी इच्छानुसार न होता। क्या हमारे समाज की दशा यह दिखाती है कि परमेश्वर अपनी उपस्थिति को हमसे अलग कर रहा है? परमेश्वर प्रेम का स्रोत है। जहां परमेश्वर अनुपस्थित होगा, वहां प्रेम नहीं होगा। अविश्वासी भी परमेश्वर के प्रेम का अनुभव व प्रदर्शन कर सकता है। किन्तु वे ऐसा तभी कर सकते हैं क्योंकि परमेश्वर की उपस्थिति उनके मध्य है। नहीं तो उनका प्रेम, काफी संभावना है, स्वार्थी व आत्म-केन्द्रित होता।

विश्वासी होने के नाते अपने लिये हम परमेश्वर के प्रेम का निश्चय रख सकते हैं क्योंकि उसने हमें पवित्रात्मा दिया है (पद 13)। परमेश्वर ने

हमें अपना पवित्रात्मा क्यों दिया है? पवित्रात्मा दिया गया कि वह प्रभु यीशु की ओर इशारा करे, जो हमारे प्रति परमेश्वर के प्रेम का दृश्य प्रदर्शन है। हम अपने लिये परमेश्वर के प्रेम को जान व मान सकते हैं क्यों पवित्रात्मा का काम हमारे जीवन में है (पद 13-16)। जब तक पवित्रात्मा का स्पर्श लोगों पर न हो वे कभी व्यक्तिगत रूप से अपने लिये परमेश्वर के प्रेम की महानता को नहीं समझ सकते। यह ही विश्वासी को अविश्वासी से भिन्न करता है। विश्वासियों ने पापियों के लिये परमेश्वर के प्रेम को समझा है। और उसकी प्राप्ति के लिये अपने हृदय को खोला है। यह पवित्रात्मा का कार्य है। यूहन्ना हमें याद दिलाता है कि हम प्रेम में जीते हैं, हम परमेश्वर में जीते हैं क्योंकि परमेश्वर प्रेम है।

यूहन्ना 17 व 18 पद में हमें बताता है कि यदि हमने सचमुच अपने लिये परमेश्वर के प्रेम को समझा व स्वीकारा है तो न्याय के दिन पर हमें बड़ा भरोसा होगा। हमें भरोसा हो सकता है, यूहन्ना कहता है, क्योंकि हम संसार में उसके समान हैं (पद 17)। किस तरीके से यह कहा जा सकता है कि इस संसार में मैं मसीह के समान हूं? जब मैंने प्रभु यीशु को ग्रहण किया, वह मेरे जीवन में राज्य करने आया। उसके प्रेम ने मेरा जीवन बदल दिया। मैं उसके प्रेम के राज्य का अपने हृदय में अनुभव करता हूं। अब मैं स्वयं को दूसरों से प्रेम करते देखता हूं जैसे मसीह ने उनसे प्रेम किया। जब मैं देखता हूं कि मेरा हृदय किस प्रकार मसीह के प्रेम से बदल गया तो मुझे बड़ा भरोसा होता है जब मैं न्याय दिवस की ओर देखता हूं। मैं जानता हूं मैं उसका हूं। मैं जानता हूं वह मुझ में रहता है।

यूहन्ना आगे हमें बताता है कि 'प्रेम ने भय को दूर रखा है' (पद 18)। मसीह के प्रेम ने हमारे सब पापों को क्षमा किया है: बीते, वर्तमान और भावी प्रेम में होकर उसने क्रूस पर प्राण देने में झिझक नहीं की। उसका प्रेम हमारे बड़े से बड़े पाप से बड़ा है। उसके प्रेम ने हमें परमेश्वर के सिंहासन तक पूरी पहुंच दी है। इससे अधिक करने को कुछ शेष ही नहीं रह गया। यह सब उसके प्रेम ने किया है। हमें उसकी सहमति नहीं चाहिये क्योंकि प्रेम में जैसे हम थे वैसा ही हमें ग्रहण किया गया। हम एक पवित्र धर्मी परमेश्वर

के पास पहुंच सकते हैं न किसी डर या हिचकिचाहट के, क्योंकि प्रेम में हमें ग्रहण किया गया है। क्या वह जो क्रूस पर हमारे लिये मर गया हमें अस्वीकार करेगा जबकि वह सिंहासन पर विराजमान है (प्रका. वा. 3:21)? उसका प्रेम बिना शर्त का प्रेम है। उसका प्रेम वह प्रेम है जो अनन्तकाल तक रहेगा। कुछ भी हमें उस प्रेम से अलग नहीं कर सकता। हम साहस के साथ उसके पास जा सकते हैं। वह हमें नहीं भगायेगा।

सारांश में, यूहन्ना हमें याद दिलाता है कि यदि अपने लिये हम परमेश्वर के प्रेम को पहचान गये हैं, तो हम भी अपने भाई बहनों से प्रेम करेंगे (पद 19-21)। यदि हम अपने भाइयों से प्रेम नहीं करते, तो हम परमेश्वर से प्रेम नहीं करते। यह ऐसा कुछ नहीं है कि हमें अपनी शक्ति को अर्जित करना पड़ेगा। हमारे हृदयों में मसीह के राज्य का स्वाभाविक परिणाम होगा- अपने भाई बहनों के लिये एक उफनता हुआ प्रेम।

क्या अपने जीवनों में हम इस प्रेम का अनुभव पा रहे हैं? क्या परमेश्वर के आत्मा ने हमें इस योग्य किया है कि अपने प्रति परमेश्वर के प्रेम को समझ व स्वीकार सकें? क्या हमारे जीवन इस प्रेम के द्वारा बदल गये? क्या हम सचमुच अपने हृदय में प्रेम के राज्य का अनुभव करते हैं? काश परमेश्वर का आत्मा हमें परमेश्वर के प्रेम का अनुभव दे। काश कि वह प्रेम हमारे प्राण में बस जाये और उफ़ने। काश वह हमारे हृदयों में उन सब के लिये भर जाये जिनसे हम मिलते हैं। इस प्रकार हम जानेंगे कि हम उसके हैं: परमेश्वर का प्रेम हम में राज्य करता है।

विचार करने के लिये

- प्रभु यीशु ने आपके जीवन में क्या परिवर्तन किया है उनके संबंध में जो आपके चारों ओर हैं और कि अब आपने उसको अपना प्रभु व उद्धारकर्त्ता स्वीकार किया है?
- क्या इस प्रेम का प्रमाण आपके हृदय में उनके प्रति है जो आपके चारों ओर हैं? इस प्रेम के प्रदर्शन को आपके हृदय में दूसरों के प्रति क्या चीज़ रोकती है?

प्रार्थना के लिये

- क्या आपके जीवन में ऐसे लोग हैं जिनसे प्रेम करने में आपको कठिनाई होती है? प्रभु से उनके प्रति प्रेम के अनुभव को मांगें।
- परमेश्वर का धन्यवाद करें उसके प्रेम के लिये जो आपके प्रति है बिना शर्त।
- प्रभु से मांगें कि वह आपको क्षमा करे इसके लिये कि आप अपने चारों ओर के लोगों को सदा क्षमा नहीं करते।

11

पुत्र पर विश्वास

पढ़ें 1 यूहन्ना 5:1-12

यहां यूहन्ना हमें बताता है कि यदि हम मसीह पर विश्वास करते हैं तो हम परमेश्वर से जन्मे हैं। परमेश्वर से जन्मने से हम क्या समझते हैं? हम सब का एक शारीरिक जन्म हुआ। इसको समझाने की आवश्यकता नहीं। परन्तु यूहन्ना हमें बता रहा है कि एक दूसरा जन्म भी है। यूहन्ना 1:12-13 में यूहन्ना हमें बताता है कि वे जो प्रभु यीशु को ग्रहण करते हैं उन्हें परमेश्वर की संतान होने का अधिकार दिया जाता है। यहां अर्थ यह है कि हर कोई परमेश्वर की संतान नहीं। हम प्रभु यीशु को ग्रहण करके परमेश्वर की संतान बनते हैं। बाद में यूह. 3 में यीशु बताता है निकुदेमुस एक मनुष्य को, कि उसके लिये परमेश्वर के राज्य को देखने के लिये नये सिरे से जन्म लेना ज़रूरी है। उसका शारीरिक जन्म काफी न था। सुनें, यीशु ने निकुदेमुस से यूह. 3:5-6 में क्या कहा 'मैं तुझ से सच सच कहता हूं, जब तक मनुष्य पानी व आत्मा से न जन्मे, कोई परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। जो शरीर से जन्मा है वह शारीरिक है, परन्तु जो आत्मा से जन्मा है आत्मा है।'

यीशु ने इस संदर्भ में यह स्पष्ट किया कि दो जन्म हैं। पहला जन्म पानी से जन्म, हमारे शारीरिक जन्म को बताता है और वह जल जो जन्म

के समय बह जाता है। दूसरे यीशु हमें बताता है कि एक आत्मिक जन्म भी है। इस प्रसंग में यीशु निकुदेमुस को बताता है कि यदि वह स्वर्ग जाना चाहता है, तो उसे आत्मिक जन्म का अनुभव होना चाहिये। शारीरिक जन्म भौतिक संसार में लाता है। आत्मिक जन्म हमें परमेश्वर की संतान बनाता है। स्वर्ग केवल उनके लिये है जिनका आत्मिक जन्म नये सिरे से हुआ है। हम कैसे जान सकते हैं कि हमें नये जन्म का अनुभव हुआ है? यूहन्ना 1 यूह. 5:1-5 में बताता है कि इस नये जन्म के कम से कम चार प्रदर्शन हैं। आइये उन्हें संक्षेप में देखें:

विश्वास, कि यीशु ही मसीह है (पद 1)

पहला इशारा कि हमने इस आत्मिक जन्म का अनुभव पाया है यह सत्य है कि हम विश्वास करते हैं कि यीशु ही मसीह है (पद 1)। 'मसीह' का अर्थ है 'अभिषिक्त'। जब हम विश्वास करते हैं कि यीशु ही मसीह है, तो विश्वास करते हैं कि वह ही है जिसको परमेश्वर ने हमारे पापों के बदले मरने भेजा। यह विश्वास करना कि यीशु ही मसीह है मसीह से जुड़ना है अपनी इस एकमात्र आशा के लिये कि पिता परमेश्वर द्वारा स्वीकारें जायें। इसका अर्थ यह हुआ कि हम आशा नहीं करते कि हम जो चाहें कर सकते हैं जो मसीह के काम को बढ़ाये, इस संभावना के लिये कि परमेश्वर हमें ग्रहण करेगा। उद्धार के लिये हमारी एकमात्र आशा प्रभु यीशु में है और हमारे लिये क्रूस पर उसके कार्य पर। वही एकमात्र परमेश्वर है जिसको हमारे उद्धार के प्रति भेजा गया और उसका कार्य पर्याप्त है।

उसकी संतान से प्रेम (पद 1)

दूसरे, यदि हमारा नया जन्म हुआ है, और सचमुच पिता से प्रेम करते हैं, तो उसकी संतान के लिये भी प्रेम का अनुभव करेंगे (पद 1)। यूहन्ना ने अपनी पत्री में इसको कई बार दोहराया है। क्योंकि परमेश्वर प्रेम है और हम में वास करता है, हम भी प्रेम करते हैं। विशेषकर अपने हृदयों में हम बड़ा प्रेम पाते हैं, परमेश्वर की संतानों के लिये। जब परमेश्वर का आत्मा हमारे हृदयों में वास करने आता है, तो वह कारण बनता है कि हम भी

उससे प्रेम करें जिससे परमेश्वर प्रेम करता है। यदि परमेश्वर का आत्मा हम में है, तो हम परमेश्वर की संतान से प्रेम करेंगे।

उसकी आज्ञाओं का पालन करना (पद 2-3)

तीसरे, यदि हम परमेश्वर की संतान हैं, तो उसकी आज्ञा का पालन करेंगे (पद 2-3)। आज्ञाकारिता का अर्थ है अपनी इच्छाओं के प्रति मरना। इसका अर्थ है अपना रुचियों व लालसाओं को प्रभु की खातिर एक ओर रखना। आज्ञाकारिता सच्चे विश्वासियों के लिये बोझ नहीं होता। हमें खुश होना चाहिये कि प्रभु की आज्ञाओं के सामने अपनी इच्छा को समर्पित करें। इससे हमें आनन्द प्राप्त होना चाहिये कि परमेश्वर की रुचि पूरी करने के लिये अपनी रुचि को छोड़ें।

संसार पर जय पाना (पद 4-5)

चौथा, यदि हम परमेश्वर से जन्में हैं तो जगत पर जय पायेंगे। यूहन्ना ने अपनी पत्री में इस पर बल दिया है। अध्याय 3 में वह बताता है कि जो मसीह में जीता है पाप नहीं करेगा (1 यूह. 3:10)। यूह. 4:4 में वह हमें याद दिलाता है कि वह जो हम में वास करता है उससे बड़ा है जो इस संसार में है। यदि हम सचमुच परमेश्वर से जन्में हैं, तो पाप पर जय में जियेंगे तथा संसार पर भी। पाप का अंधेरा हमारे हृदयों में मसीह की ज्योति द्वारा भगाया जायेगा।

पद 4 हमें बताता है कि जगत पर यह जय विश्वास द्वारा मिलती है। पद 5 के अनुसार यह विश्वास प्रभु यीशु के व्यक्तित्व में हो जो परमेश्वर का पुत्र है। दूसरे शब्दों में, हम स्वयं जय प्राप्त नहीं कर सकते। कितनी बार अपनी सामर्थ में हम मसीही जीवन जीना चाहते हैं? शायद हमने स्वयं को वचनबद्ध किया है, प्रार्थना में अधिक समय बिताने में। शायद हमने स्वयं से कहा कि अमुक पाप को हम अपने जीवन से दूर करेंगे। कुछ समय तो सब ठीक चलता ज्ञात होता है, परन्तु हमारी जय लघुकालिक थी। हमारे आत्मिक इंजन की गैस खत्म हो गई। उतनी ही दूर अपनी शक्ति से हम चल सकते हैं। यहां यूहन्ना कहता है कि यदि हम जगत पर जय पाना चाहते हैं, तो जय केवल प्रभु यीशु पर विश्वास द्वारा मिल सकती है। केवल

वह ही जगत पर जय पा सकता है। संभवतः हम स्वयं नहीं कर सकते। केवल वह ही हमें आवश्यक शक्ति देता है। विश्वास द्वारा यह करने के लिये हम उस पर भरोसा कर सकते हैं।

पद 6-11 हमें प्रभु यीशु के व्यक्तित्व के विषय बताता है, जिसके द्वारा हम जगत पर जय पा सकते हैं। वे हमें याद दिलाते हैं कि यीशु 'जल व लोहू' से आया। इसको समझना सरल नहीं। शब्द 'आया' का अर्थ है अपने को दिखाना या प्रगट होना। लगता है यूहन्ना कह रहा है यीशु ने स्वयं को जगत पर जल व लोहू द्वारा प्रगट किया। हम 'जल' व 'लोहू' शब्दों को इस प्रसंग में कैसे समझें?

शब्द 'जल' के अर्थ को लेकर टीकाकारों में कुछ उलझन है। कुछ कहते हैं जल के बपतिस्मा द्वारा यीशु ने स्वयं को जगत पर अपने बपतिस्में द्वारा प्रगट किया। अपने बपतिस्मे के बाद यूहन्ना बपतिस्मादाता द्वारा मसीह ने अपनी सार्वजनिक सेवकाई को आरम्भ किया, यहां परमेश्वर का आत्मा उस पर उतरा। उस दिन उपस्थित जनों ने पिता की वाणी को सुना कि मसीह उसका प्रिय पुत्र है। मसीह का बपतिस्मा एक सार्वजनिक घोषणा जगत के लिये थी कि वह सचमुच परमेश्वर का पुत्र था।

दूसरे टीकाकार इस शब्द 'जल' में मसीह के शारीरिक जन्म को देखते हैं। यूह. 3:5 हमें बताता है कि हमें जल व आत्मा से जन्म लेता है। जन्म के समय 'जल' बहता है और शिशु का जन्म होता है। यदि इस पद की व्याख्या यह है, तो यीशु परमेश्वर के पुत्र ने स्वयं को शारीरिक जन्म द्वारा प्रगट किया। उसने देह को लिया, मरियम के गर्भ में रखा गया, और हमारे मध्य शारीरिक जन्म लिया।

यूहन्ना हमें याद दिलाता है कि मसीह ने स्वयं को हम पर प्रकट किया न केवल मानव देह लेकर (जल द्वारा) बल्कि 'लोहू' द्वारा भी। अधिकतर टीकाकार सहमत हैं कि 'लोहू' मसीह की क्रूस पर हमारे पापों के लिये मृत्यु को दिखाता है। यद्यपि शरीर में हमने मसीह को कभी नहीं देखा, उसने स्वयं को हम पर प्रकट किया है क्रूस के द्वारा। मसीह की मृत्यु ने परमेश्वर को

अधिक लोगों पर प्रगट किया, मसीह के जन्म की तुलना में। असंख्य पुरुष व स्त्री सब जातियों से परमेश्वर से मिले, मसीह की क्रूस के द्वारा। यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, एक बार, कि जब वह ऊंचे पर उठाया जायेगा (क्रूस पर) तो सब लोगों को अपनी ओर खींच लेगा (यूह. 12:32)।

हमारे विश्वास के लिये प्रभु यीशु मसीह का कार्य केन्द्रीय है। हमारी आशा ठोस तरीके से क्रूस पर पूरे किये कार्य पर है। हम कैसे निश्चय जानें कि मसीह का कार्य हमारी आवश्यकता के लिये पर्याप्त है? यूहन्ना हमें याद दिलाता है तीन गवाहों की, प्रभु यीशु के व्यक्तित्व व कार्य के विषय। आइये इन तीन गवाहों पर संक्षिप्त ध्यान दें।

पद 7 व 8 में यूहन्ना इन गवाहों को बताता है, 'आत्मा, जय व लोहू।' आत्मा से लगता है यूहन्ना का अर्थ पवित्रात्मा से है जिसने उसे परिपूर्ण कर दिया तथा परमेश्वर के सामर्थ का प्रदर्शन उसके जीवन में महान रुचि का विषय हो गया जिसने कार्यों के द्वारा प्रभु यीशु के व्यक्तित्व व कार्य की गवाही दी। परन्तु वही पवित्रात्मा हमारे हृदयों को भी भरता है और पुनः निश्चय देता है कि प्रभु यीशु के दावे सच्चे हैं। वे जिनमें परमेश्वर का आत्मा बसता है जानते हैं कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है जो उनको पाप से बचाने आया।

प्रभु यीशु के व्यक्तित्व व कार्य का दूसरा गवाह 'जल' है। हम पहले ही बता चुके हैं कि जल हमारे प्रभु के शारीरिक जन्म को बताता है। जो कोई गम्भीरता से हमारे प्रभु के जीवन की जांच करता है जानेगा कि उसके दावे सच्चे हैं। हम उसे कभी पाप में गिरते नहीं देखते। हम पिता परमेश्वर के चरित्र को देखते हैं जो हम पर प्रगट करता है प्रभु यीशु के व्यक्तित्व द्वारा। हम पिता के प्रेम व पवित्रता के प्रदर्शन को प्रभु के इस पृथ्वी पर शारीरिक जीवन में देखते हैं। उसकी करूणा, निष्पाप जीवन, निस्वार्थ प्रेम सब कुछ दिखाता है कि वह वो सब है जो उसने कहा वह है।

जो 'जल' का बपतिस्मा से संबंध जोड़ते हैं, तो यह भी प्रभु यीशु के कार्य व व्यक्तित्व की गवाही देता है। जिस दिन यीशु का बपतिस्मा हुआ,

तो उसके चारों ओर खड़े लोगों ने स्वर्ग से एक वाणी सुनी कि वह परमेश्वर का पुत्र था। एक कबूतर के रूप में उन्होंने पवित्रात्मा को उस पर उतरते देखा। यह निश्चय स्पष्ट था यीशु वही था जो उसने कहा कि वह है और कि उसका कार्य पिता का कार्य था।

प्रभु यीशु के कार्य व व्यक्तित्व का तीसरा गवाह 'लोहू' है। इस से हम क्रूस पर उसकी मृत्यु को समझते हैं, हमारे पापों के लिये। इस मृत्यु ने पुराने नियम की भविष्यवाणियों को पूर्णतया पूरा किया। उस मृत्यु को परमेश्वर ने मान्यता दी, उसके पुनरुत्थान द्वारा, उसकी मृत्यु के द्वारा असंख्य लोगों के बदले। ये संसार के गवाह पूर्णतया सहमति में हैं। और अधिक किस प्रमाण की आवश्यकता है?

मसीह के दावों की सत्यता का एक और गवाह है यदि हम विश्वासी हैं, तो यह गवाही हमारे मनों में है। हमारे भीतर परमेश्वर का आत्मा मसीह के दावों के सत्य को निश्चय देता है। वह आन्तरिक निश्चय परमेश्वर के अतिरिक्त कुछ नहीं जो हमारे हृदयों में निश्चय देता है कि सचमुच यीशु मसीह वह सब है जिसका उसने दावा किया। यद्यपि अपने साथी मनुष्यों की गवाही पर हम शक कर सकते हैं। हम स्वयं परमेश्वर की गवाही पर शक नहीं कर सकते।

यूहन्ना हमें बताता है कि मसीह के दावों से इंकार नहीं किया जा सकता। ऐसा करने के लिये तो परमेश्वर को झूठा कहना पड़ेगा। जब प्रभु यीशु दावा करता है परमेश्वर का पुत्र होने का और हम उसका विश्वास नहीं करते, तो हम उसे झूठा ठहराते हैं। अनन्त जीवन केवल प्रभु यीशु में मिल सकता है। उसका व उसके दावों से इंकार करना जीवन से ही इंकार करना है। जो कोई मसीह का इंकार करता है परमेश्वर के राज्य का अधिकारी नहीं हो सकता।

सारांश में, यूहन्ना अपने पाठकों को बता रहा है कि जो परमेश्वर से जन्में हैं वे प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं। यह विश्वास आधारित है न केवल मसीह के दावों की ध्यानपूर्वक जांच पर परन्तु अपने जीवन के

व्यावहारिक अनुभवों पर भी। वे लोग जिनमें उसका प्रेम उमण्डता है वे जगत पर जय पाते हैं और उसकी परीक्षाओं पर उसके सामर्थ के उनके जीवनों में काम करने के द्वारा। वे मसीह के जीवन व मृत्यु में प्रमाण देखते हैं कि वह वही है जिसका उसने दावा किया। उन लोगों को आत्मा द्वारा दिया गया गहरा विश्वास है कि यीशु ही मसीह है। अपने अनन्त जीवन की एकमात्र आशा के रूप में वे उसे पकड़ते हैं। कोई शक नहीं कि यीशु वह सब है जो उसने कहा। यदि हम यीशु पर विश्वास नहीं करते और न उसके दावों पर, तो यूहन्ना कहता है कि हमारे यह मानने का कोई आधार नहीं रह जाता कि हम परमेश्वर की संतान हैं। हर कोई जो परमेश्वर से जन्मा है विश्वास करता है कि यीशु मसीह है।

विचार करने के लिये

- आपके जीवन में क्या क्या प्रमाण हैं कि आपने नये जन्म का अनुभव पाया है?
- इस अध्याय में प्रभु यीशु के व्यक्तित्व व कार्य के प्रमाण जो यूहन्ना ने दिये हैं, उन की जांच करें। क्या प्रभु यीशु तथा वह क्या करने आया था उसके विषय में कोई शक रह सकता है?
- क्या किसी व्यक्ति के लिये प्रभु यीशु के दावों पर विश्वास न करना संभव है और फिर भी वह मसीही हो?

प्रार्थना के लिये

- परमेश्वर का धन्यवाद करें उस निश्चय के लिये जो वह हमें अपने पुत्र के व्यक्तित्व व कार्य के बारे में देता है।
- उससे मांगें कि वह इन सत्यों को आपके मित्रों व प्रियजनों के सामने स्पष्ट करे जिन्होंने अभी तक उसको मसीह ग्रहण नहीं किया।
- उसके व उसके दावों के विषय आपके हृदयों में किसी भी शक को मिटाने के लिये प्रार्थना करें।

12

पाप, जिसका परिणाम मृत्यु

पढ़ें 1 यूहन्ना 5:13-21

हम 1 यूहन्ना के अन्त में पहुंच गये हैं। यहां पद 13 में प्रेरित हमें याद दिलाता है इस पत्री के उद्देश्य को। उसने अपनी पत्री लिखी ताकि हम जानें कि हम में अनन्त जीवन है। इस प्रथम पत्री में, यूहन्ना ने समझाया है कि सच्चा विश्वासी होने का क्या अर्थ है। उसने हमें जांचों की एक शृंखला दी इस निर्धारण के लिये कि हमारा विश्वास सच्चा है या नहीं। उसकी पत्री हमें विवश करती है कि गहराई से अपनी आत्मा में झांकें। वह कारण है हमारे इस प्रश्न को पूछने का क्या मैं सचमुच एक मसीही हूँ? मुझे भरोसा है कि हमने आपको आपके विश्वास में निश्चय दिया है।

इस सारांश में यूहन्ना हमें एक प्रतिज्ञा देता है। वह हमें बताता है कि हम भरोसे के साथ परमेश्वर के पास जा सकते हैं। हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ भी मांग सकते हैं और वह हमारी सुनेगा। हमें निश्चय हो सकता है कि यदि परमेश्वर ने हमारे हृदय पर बोझ रखा है उसको जानने का, तो वह हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर देगा जब हम उसको पुकारेंगे। हम निश्चय जानें कि जब हम प्रभु से कहेंगे कि हमारे पापों पर जय दे, तो वह हमारी प्रार्थना को सुनकर उत्तर देगा।

आइये हम उसके पास हियाव से जायें और उसकी प्रतिज्ञा पर दावा करें। यदि हम जानते हैं कि जो हम मांग रहे हैं वह उसकी इच्छा के

अनुसार है तो हम निश्चय जान सकते हैं कि उसने हमारी सुन ली है। और यदि जानते हैं कि उसने हमारी सुन ली है तो यह भी जानते हैं कि वह हमारी प्रार्थना का उत्तर देगा। हमारा काम है उसकी प्रतीक्षा करना और स्वयं को उसकी अगुवाई में समर्पित करना।

परमेश्वर की हमारी प्रार्थनाओं को सुनने की प्रतिज्ञा मसीह में हमारे भाई बहनों के लिये प्रार्थना पर भी लागू होती है। (पद 16) जब हम दूसरों को ऐसे पाप करते देखते हैं जिनका दण्ड मृत्यु नहीं तो हम प्रार्थना करें कि परमेश्वर उन्हें जीवन दे। हमें परमेश्वर से विनती करनी है कि उन्हें पाप व मृत्यु की बेड़ियों से स्वतंत्र करे। हमें परमेश्वर से प्रार्थना करनी है कि उनके आत्मिक जीवनों को पुनः स्थापित करे, ताकि वे फिर से अपने उद्धार के आनन्द को जान सकें।

यूहन्ना कहता है कि परमेश्वर हमारे भाई बहनों के छुटकारे की प्रार्थना को सुनेगा। प्रार्थना में बहुत शक्ति है। अपने भाई बहनों की आत्मिक स्थिति को किस प्रकार निरन्तर प्रार्थना का विषय हमें बनाना है। कलीसिया के रूप में हमें अपनी प्रार्थनाओं को इकट्ठा करना है, साथी विश्वासियों के लिये जो पाप में गिर गये हैं। परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है कि वह हमारी सुनेगा और भटके हुए को पुनः स्थापित करेगा।

परन्तु ध्यान दें कि यूहन्ना हमें बताता है कि 'ऐसा पाप भी है जो मृत्यु को ले जाता है' (पद 16)। वह कहता है कि हम निश्चयता के साथ प्रार्थना नहीं कर सकते कि परमेश्वर उस व्यक्ति को छुड़ायेगा जिसने ऐसा पाप किया है। यह पाप क्या है? सुनें कि परमेश्वर ने अपने नबी यिर्मयाह से क्या कहा, यिर्म. 14:11-12 में, 'इस प्रजा की भलाई के लिये प्रार्थना मत कर। चाहे वे उपवास भी करें, तौभी मैं इनकी दोहाई नहीं सुनूंगा, और चाहे वे होमबलि और अन्नबलि चढ़ायें, तौभी मैं उनसे प्रसन्न न होऊंगा, मैं तलवार, महंगी और मरी के द्वारा इनका अन्त कर दूंगा।'

प्रभु ने यही बात यिर्म. 7:16 में कही, 'इस प्रजा के लिये तू प्रार्थना मत कर, न इन लोगों के लिये ऊंचे स्वर से पुकार, न मुझ से विनती कर,

क्योंकि मैं तेरी दोहाई नहीं सुनूंगा।' (7:16)। प्रभु यहां इस्राएलियों की बात कर रहा है। वे परमेश्वर से फिर गये थे। उन्होंने भविष्यवक्ताओं की सुनने से इंकार कर दिया था। परमेश्वर ने उन्हें हर अवसर दिया कि सुनें व पश्चात्ताप करें, परन्तु उन्होंने इंकार किया। अब परमेश्वर ने उनको दण्ड सुना दिया। उन्हें अपने पापों के कारण मरना होगा। उनके लिये प्रार्थना करने का कोई लाभ नहीं क्योंकि परमेश्वर दण्ड सुना चुका।

नये नियम में, कई उदाहरण हैं उस पाप के जो 'मृत्यु तक ले जाता है।' प्रेरि. 5 में हनन्याह व सफीरा ने झूठ बोला उस पैसे के विषय पवित्रात्मा से जो सम्पत्ति बेचने से उन्हें मिला और जिसे वे दान में देना चाहते थे। पाप के कारण प्रभु ने उन्हें मृत्यु दण्ड दिया। जिस बात में वे फंसे वह जानबूझ कर प्रभु की अनाज्ञाकारिता थी। यद्यपि वे जानते थे कि ठीक क्या है, उन्होंने परमेश्वर से विद्रोह करना चाहा। उन्होंने पश्चात्ताप न किया, और परमेश्वर ने शारीरिक मृत्यु द्वारा दण्ड दिया।

1 कुरि. 11:30 में हम पढ़ते हैं कि कुछ लोग थे जो प्रभु की मेज़ पर आते थे, अयोग्यता के साथ, स्वाभाविक था कि वे अपने पापों का अंगीकार करना नहीं चाहते थे और तौभी प्रभु के नाम में प्रभु भोज में आते थे। पौलुस ने कलीसिया को याद दिलाया कि इस कारण बहुत से कोरिन्थ की कलीसिया में बीमार थे और कुछ तो मर गये।

पौलुस ने 1 कुरि. 5:5 में बताया कि उनमें एक व्यक्ति था जो यौन पाप में चलता था। पौलुस ने कलीसिया से कहा कि उन्हें उस व्यक्ति को कलीसिया से निकाल देना चाहिये और शैतान को दे देना चाहिये कि शरीर मर जाये पर आत्मा बच जाये।

क्या होता है जब एक विश्वासी शैतान के हाथ में दे दिया जाता है? देखें अय्यूब के साथ क्या हुआ। शैतान ने उसका सब कुछ ले लिया। उसने उसको बहुत पीड़ा दी। अय्यूब का परिवार व मित्र मिट गये। अन्त में वह एक राख के ढेर पर बैठा ठीकरे से अपने फोड़ों को खुजाता था। यदि परमेश्वर की अपने सेवक के लिये और ही योजना न होती, शैतान उसको

मार डालता। उसे शैतान को देने का क्या परिणाम हुआ? अय्यूब ने स्वयं बताया, 'मेरे कानों ने तेरे विषय सुना था पर अब मेरी आंखों ने देख लिया है।' (अय. 42:5) यद्यपि इस घटनाक्रम से अय्यूब और भी परमेश्वर की निकटता में आ गया।

ऐसी ही बात बाबुल के महान राजा नबूकदनेस्सर के जीवन में घटी। वह एक अति अहंकारी, बड़ा बोल बोलने वाला राजा था। परमेश्वर ने उसे शैतान के हाथ में दे दिया। उसका दिमाग खराब हो गया और वह जंगल में जानवरों के साथ रहने लगा। शैतान को दिये जाने से क्या हुआ? नबूकदनेस्सर हमें बताता है:

'उन दिनों के बीतने पर, मुझ नबूकदनेस्सर ने अपनी आंखें स्वर्ग की ओर उठाई, और मेरी बुद्धि फिर ज्यों की त्यों हो गई; तब मैंने परमप्रधान को धन्य कहा, और जो सदा जीवित है उसकी स्तुति और महिमा यह कहकर करने लगा: उसकी प्रभुता सदा की है, और उसका राज्य पीढ़ी से पीढ़ी तक बना रहने वाला है। पृथ्वी के सब रहनेवाले उसके सामने तुच्छ गिने जाते हैं, और वह स्वर्ग की सेना और पृथ्वी के रहनेवालों के बीच अपनी ही इच्छा के अनुसार काम करता है; और कोई उसको रोक कर उससे यह नहीं कह सकता कि तूने यह क्या किया है? उसी समय मेरी बुद्धि फिर ज्यों की त्यों हो गई; और मेरे राज्य की महिमा के लिये मेरा प्रताप और मुकुट फिर मुझ पर फिर आ गया। और मेरे मन्त्री और प्रधान लोग मुझ से भेंट करने के लिये आने लगे, और मैं अपने राज्य में स्थिर हो गया, और मेरी और अधिक प्रशंसा होने लगी। अब मैं नबूकदनेस्सर स्वर्ग के राजा को सराहता हूं, और उसकी महिमा और स्तुति करता हूं क्योंकि उसके सब काम सच्चे, और उसके सब व्यवहार न्याय के हैं; और जो लोग घमण्ड से चलते हैं, उन्हें वह नीचा कर सकता है।' (दान. 4:34-37)

यूहन्ना इस प्रसंग में हमें यह बता रहा है कि ऐसे समय भी होते हैं जब व्यक्ति के हृदय की कठोरता के कारण, प्रभु कठोरता से दण्ड देता है। बहुत हैं जो अपने पापों के कारण मर जाते हैं। कुछ हैं जो प्रभु के पास लौट आते हैं और उसके नाम की निन्दा करना बन्द कर देते हैं, जब उनको किसी

प्रकार का रोग या कमज़ोरी लग जाती है। ऐसी दशाओं में परमेश्वर जो कर रहा है उसके विरुद्ध प्रार्थना करना परमेश्वर की योजना के विरुद्ध प्रार्थना करना है, उस व्यक्ति का नवीनीकरण करने के लिये।

उसके पाप के कारण, व्यक्ति की मृत्यु से क्या प्राप्त होता है। हनन्याह व सफ़ीरा के मामले में पूरी कलीसिया पर प्रभु का भय छा गया (प्रेरि. 5:5)। परमेश्वर के दण्ड का इस प्रकार दृश्य देखना। समस्त कलीसिया परमेश्वर के भय व पश्चात्ताप में आ जाती है। दोषी व्यक्ति की मृत्यु दोषियों को और गहरे में गिरने से रोकती है। विद्रोह में और दूसरों को अपने साथ ले जाने से। कुछ पाप दूर होता है और कलीसिया उन्नत होती है।

यूहन्ना हमें बताता है कि वे लोग जो परमेश्वर के हैं पाप में जारी नहीं रहते, परमेश्वर उनको सुरक्षित रखता है ताकि दुष्ट उनको हानि न पहुंचा सके (पद 18)। इसका अर्थ यह नहीं कि शत्रु हमें छू नहीं सकता। हम पहले ही उदाहरण देख चुके हैं कि किस प्रकार शत्रु का प्रयोग परमेश्वर के लिये हो सकता है उसकी संतान के जीवनों में उसकी महिमा प्रप्ति के लिये। हमें जो समझना है वह यह है कि जबकि शैतान हमें निगलना चाहता है, वह हमारा कुछ नहीं कर सकता उसके अतिरिक्त जिसकी अनुमति परमेश्वर देता है। सबसे शक्तिशाली शत्रु सच्चे विश्वासी को प्रभु यीशु से फेर सकता है। चाहे शैतान उनके मन व शरीरों को निगल जाये, वह उनकी आत्मा को नहीं छू सकता।

यूहन्ना हमें याद दिलाता है कि परमेश्वर का पुत्र हमें समझ देने आया ताकि 'हम उसे जानें कि वह सच्चा है' (पद 20)। परमेश्वर के विषय सत्य प्रभु यीशु के कार्य व व्यक्तित्व में मिलता है। वे जो उस पाप के दोषी हैं जिसका दण्ड मृत्यु होता है वे दो अपराधों का दोषी होते हैं या तो वे पाप में बने रहते हैं परमेश्वर की चेतावनियों के होते या वे सत्य यीशु मसीह के दावों के सत्यों से मुंह फेर लेते हैं।

यहां यूहन्ना हमें यह बताता लगता है कि जब कि विश्वासी के लिये यह सामान्य अनुभव है धार्मिकता व सत्य में रहे, ऐसे भी हैं जो इन

सिद्धान्तों से मुंह फेर लेते हैं। विश्वासी के लिये यह संभव है कि सत्य से भटक जाये। विश्वासी के हृदय के लिये यह संभव है कि इतना कठोर हो जाये कि आगे को स्वामी की वाणी न सुने जब उन्हें लौटने को कहे। ये व्यक्ति यूहन्ना 15 की दाखलता की डालियों जैसे हैं जो फल नहीं लातीं। उन्हें काटा और आग में डाला जाता है। यहां हम यह नहीं कह रहे कि उनका उद्धार समाप्त हो जाता है। परन्तु हम कह रहे हैं कि वे ऐसे पाप करते हैं जिनके कारण प्रभु उनके शारीरिक जीवन को समाप्त कर देता है। उन्हें काट डाला जाता है ताकि निन्दा करना बन्द करें। वे काट डाले जाते हैं ताकि आगे को बलवा न करें। यह परमेश्वर की ओर से अनुग्रह का एक कार्य है। ऐसे समय होते हैं जब रोग बल्कि बीमारी बलवा करते रहने से उत्पन्न होते हैं। ऐसे समय होते हैं जब परमेश्वर अनुशासित करता है शारीरिक मृत्यु द्वारा कलीसिया की शुद्धता को बनाये रखने के लिये।

पाप में जारी रहना बड़ी गम्भीरता है। इब्रानियों का लेख इसको इस प्रकार बताता है, सच्चाई की पहचान प्राप्त करने के बाद यदि हम जानबूझकर पाप करते रहें तो पापों के लिये फिर कोई बलिदान बाकी नहीं।' (इब्रा. 10:26)। मैं सोचता हूं यह पाप जो मृत्यु तक ले जाता है जानबूझकर, परमेश्वर से निरन्तर विद्रोह करने का पाप है। यह उनका पाप है जो सच्चाई की राह को जानते हैं परन्तु उससे फिर जाते हैं। यह वह पाप है जिसके लिये पतरस हमें 2 पत. 2:20-22 में चेतावनी देता है:

'और जब वे प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह की पहचान के द्वारा संसार की नाना प्रकार की अशुद्धता से बच निकले और जब उनमें फंस कर हार गये तो उनकी पिछली दशा पहली से बुरी हो गई है। क्योंकि धर्म के मार्ग को न जानना ही उनके लिये इससे भला होता कि उसे जानकर उस पवित्र आज्ञा से फिर जाते जो उन्हें सौंपी गई थी। उन पर यह कहावत ठीक बैठती है कि कुत्ता अपनी छांट की ओर और धोई हुई सुअरनी कीचड़ में लोटने के लिये फिर चली जाती है।'

यद्यपि परमेश्वर अपने को बचाता है, कोई जानबूझकर परमेश्वर से विद्रोह में नहीं जी सकता कि यह भी आशा करे कि परमेश्वर दण्ड नहीं

देगा। जो सत्य को जानते हैं और फिर भी उससे विद्रोह करते हैं उन्हें परमेश्वर को अधिक हियाव देना होगा उनकी तुलना में जिनको सत्य का ज्ञान कभी हुआ ही नहीं। सत्य से अज्ञानता में कुछ काम करना एक बात है और सत्य को जानते हुए बलवा करना एक और बात है।

यूहन्ना अपनी पत्री को यह कहते हुए बन्द करता है कि हमें मूर्तियों से अलग रहना है (पद 21)। मूर्ति वह हर वस्तु है जो हमारे जीवनों में परमेश्वर के स्थान पर हो। कोई चीज़ परमेश्वर का स्थान नहीं ले सकती। हमारे जीवन पूर्णतया उसको समर्पित हों। हमारे हृदय जलन के साथ उसके और केवल उसके लिये सुरक्षित रहें। हमारे हृदय व मनों में उसका ही राज्य हो। शेष सब बातें हटाई जायें। वह सब कुछ हो। हमारी इच्छाओं व विचारों का वह केन्द्रिय ध्यान हो। यह ज्योति में जय के साथ चलने का रहस्य है।

विचार करने के लिये

- क्या आपने कभी परमेश्वर को पाप का दण्ड उसकी किसी संतान के जीवन में देते देखा है परीक्षा, त्रासदी या मृत्यु द्वारा?
- आप कैसे कह सकते हैं कि कोई व्यक्ति ऐसे पाप का अपराधी है जो मृत्यु को पहुंचाये?
- परमेश्वर को हमारी मृत्यु की अनुमति देना हमारे विद्रोह के कारण और उसके उद्धार को खो देने के प्रश्न में क्या अन्तर है? क्या यह संभव है कि परमेश्वर हमारी देहों को नाश कर दे और फिर भी हम उस से प्रेम करें?

प्रार्थना के लिये

- क्या आप ऐसे विश्वासी को जानते हैं जो जानबूझकर बलवा करके प्रभु से भटक गया है? कुछ क्षण प्रार्थना करें कि प्रभु उस व्यक्ति को फिर अपनी ओर फेरे।

- प्रभु से विनती करें कि आपको जानबूझकर उसके वचन से बलवा करने से रोके। प्रार्थना करें कि वह आपके हृदय को अपने सामने सदा कोमल रखे।

- प्रभु का धन्यवाद करें कि हमारे पास हमारी ज़रूरत की हर वस्तु है कि मसीह में एक जयवन्त जीवन जियें।

13

प्रेम में चलो

पढ़ें 2 यूहन्ना 1-6

अपनी इस दूसरी पत्री में यूहन्ना अपना परिचय 'प्राचीन' के रूप में देता है (पद 1)। वह अपनी किसी पत्री में अपना नाम देने की इच्छा नहीं रखता। स्वाभाविक है, वह इतना जाना माना है कि उसे अपना नाम लिखने की भी आवश्यकता नहीं। परन्तु यहां उसकी चिन्ता अपना नाम बताना नहीं है। इस दूसरी पत्री को वह प्राचीन के रूप में अधिकारिक क्षमता से लिखता है। पत्री में 'चुनी हुई महिला' को सम्बोधित किया गया है। इस महिला की असली पहचान हमें नहीं है। कुछ टीकाकार इसे असली महिला समझते हैं जिसका परिचय यूहन्ना प्रेरित से था। दूसरे टीकाकार समझते हैं कि यूहन्ना एक विशिष्ट कलीसिया को लिख रहा था और उसको चुनी हुई स्त्री कहता है। उसके बच्चों का ज़िक्र उसके सदस्यों के लिये है। संदर्भ से हम समझते हैं कि यूहन्ना विश्वासियों के एक समूह से बात कर रहा है। पद 4-6 में वह उनको एक दूसरे के साथ प्रेम में चलने की चुनौती दे रहा है। पद 7-11 में वह उन्हें कुछ निर्देश देता है कि अपने मध्य झूठे शिक्षकों से कैसे निबटें। इससे अर्थ निकल सकता है कि वह कलीसिया को लिख रहा है।

अपनी पहली चुनौती देने से पहले यूहन्ना अपने पाठकों को याद दिलाता है कि उनसे कितना प्रेम किया जाता है। वह उन्हें उनके प्रति अपने व्यक्तिगत

प्रेम की याद दिलाता है। उनके लिये उसका प्रेम 'सच्चाई में है।' (पद 11) सत्य में प्रेम करने का क्या अर्थ है? इसका सरल सा अर्थ हो सकता है कि यह सत्य विश्वासी के हृदय में रहता है। क्या यहां जिस सत्य के विषय कहा गया है वह मसीह के संदेश व व्यक्तित्व के विषय है? क्या यूहन्ना अपने पाठकों को बता रहा है कि वह अपने पाठकों को मसीह में प्रेम करता है? उसका प्रेम संसारिक प्रेम नहीं है; यह उनमें मसीह का प्रेम है।

न केवल इस विश्वासियों की मण्डली से यूहन्ना प्रेम करता है, उनको उस सब के द्वारा भी प्रेम किया जाता है 'जो सत्य को जानते हैं' (पद 1)। यूहन्ना कह रहा है कि सभी विश्वासी, जो प्रभु यीशु मसीह के सत्य को जानते हैं, प्रेम के बंधन से बंधे हैं। इस सत्य के कारण कि मसीह हम में वास करता है हम भाइयों से प्रेम करते हैं, जैसे वह हमसे प्रेम करता है। ध्यान दें कि यूहन्ना पद 2 में हमें बता रहा है कि यह सत्य हमारे साथ सदाकाल तक रहेगा। यीशु हमें कभी न छोड़ेगा। हमें उसकी निरन्तर उपस्थिति के लिये निश्चय होना चाहिये।

इस प्रसंग में यूहन्ना हमें और भी कुछ उत्साह के वचन कहता है। वह बताता है कि अनुग्रह, दया तथा पिता परमेश्वर का प्रेम हमारे प्रति ऐसा है जिसके योग्य हम नहीं हैं। उसकी दया, उसकी कृपा तथा संयम हमारे साथ है। शांति यह जानने का परिणाम है कि परमेश्वर तथा विश्वासियों के मध्य समस्त विरोध तोड़ दिया गया है और कि परमेश्वर अपनों की हर परिस्थितियों में चिन्ता करता है जो जीवन में उनके सामने आती हैं। यह अब विश्वासी के नाते हमारा है। ध्यान दें कि यूहन्ना हमें बताता है कि ये सब चीज़ें सत्य व प्रेम में हमारी हैं। अर्थात् वे हम तक पहुंची हैं यीशु मसीह के सत्य के द्वारा और हमारे प्रति उसके महान प्रेम के द्वारा।

विश्वासियों को उत्साहित करने के बाद, यूहन्ना अपनी पत्री की प्रथम चुनौती पर जाता है। वह अपने तरीके में अति सकारात्मक है। वह उन्हें बताता है कि इससे उन्हें बड़ा आनन्द प्राप्त होता है जानकर कि उसकी देह में कुछ विश्वासी 'सत्य में चलते हैं' (पद 4)। यूहन्ना इसको दूसरे तरीके से भी कह

सकता था। वह यह दुख प्रकट कर सकता था कि उसकी सभी संतान सत्य में नहीं चलते, शायद यह हमें यूहन्ना के विषय कुछ बताता है। वह बड़ा प्रेमी व करूणामय परमेश्वर है। वह भलाई पर केन्द्रित होता लगता है। परन्तु यह कहने में यूहन्ना उनकी वर्तमान परिस्थिति की अनदेखी नहीं करता। वह अपने पाठकों को याद दिलाता है कि उनको प्रेम में चलना है।

यहां ध्यान दें कि इन विश्वासियों को चुनौती देने में वह स्वयं को भी शामिल करता है। पद 5 में उसने शब्द 'हम' का प्रयोग किया। 'और प्रेम यह है कि हम उसकी आज्ञाओं का पालन करें।' प्रेरित बड़े करूणामय तरीके से अपने पाठकों को अभी याद दिलाता है कि परमेश्वर उनसे कितना प्रेम करता है। अब वह आगे उन्हें बताता है कि वे जिनको परमेश्वर द्वारा इतना प्रेम किया जाता है, बदले में उन्हें परमेश्वर से कितना प्रेम करने की आवश्यकता है। परमेश्वर के लिये यह प्रेम उनके जीवन में दो प्रकार से प्रस्तुती पायेगा।

पहला, यदि परमेश्वर का प्रेम उनमें है, तो वे एक दूसरे से प्रेम करेंगे। यूहन्ना ने अपनी पहली पत्री में कहा कि जो लोग कहते हैं कि वे परमेश्वर से प्रेम करते हैं, परन्तु दूसरों से प्रेम नहीं करते, वे झूठे हैं। यदि परमेश्वर उनके हृदयों में वास करता है, तो उनके हृदय अपने चारों ओर के लोगों के प्रति प्रेम से भरे रहेंगे। यूहन्ना चाहता है कि ये विश्वासी अपने इस प्रेम की समझ में बढ़ें। वह प्रेम की अधिक बड़ी प्रस्तुती को देखना चाहता है जो दूसरों के लिये उनके जीवन में हो।

दूसरे, यदि परमेश्वर का प्रेम उनमें है, तो वे आज्ञाओं का पालन करेंगे। यहां वह उन्हें बताता है कि वे परमेश्वर से प्रेम करते हैं तो उसकी आज्ञापालन भी करेंगे। परमेश्वर के वचन की अनाज्ञाकारिता केवल एक बात को सिद्ध करती है: परमेश्वर के प्रति प्रेम में कमी। लोग माप सकते हैं कि वे परमेश्वर से कितना प्रेम करते हैं इसके द्वारा कि वे उसके प्रति कितने आज्ञाकारी हैं। वे जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं आज्ञाकारिता की कीमत को नहीं आंकते। अपने उद्धारकर्त्ता व प्रभु का आज्ञा पालन करने के

लिये वे स्वेच्छा से अपना प्राण देंगे, अपनी सांसारिक वस्तुएं, सम्पत्ति, सम्मान तक और सब कुछ। यीशु उनके जीवन में प्रथम स्थान रखता है।

चुनी हुई स्त्री तथा उसकी संतान को यूहन्ना की चुनौती यह है कि वे प्रेम में चलें। स्वाभाविक है मण्डली के संदर्भ में संबंधों में कुछ समस्या थी। वे बता सकते थे कि वे प्रेम में चल रहे थे या नहीं यह माप कर कि वे एक दूसरे के साथ कितना प्रेम करते हैं और परमेश्वर के वचन के कितने आज्ञाकारी हैं। यही चुनौती हम से आज बात करती है। क्या ऐसा प्रेम हमारी कलीसियाओं का गुण है? क्या यह प्रेम अपनी प्रस्तुती करता है। आपस में एक दूसरे के साथ संबंधों में और परमेश्वर के वचन की हमारी आज्ञाकारिता में? जब हम एक क्षण भी सोचते हैं उस पर जो हमने इस प्रसंग में देखा है, तो आइये प्रभु को एक विशेष क्षेत्र की ओर इशारा करने दें, अपने जीवन में जिस पर ध्यान देना जरूरी है।

विचार करने के लिये

- क्या आप प्रेम में चल रहे हैं? क्या अपने जीवन में आप अपने भाई या बहन में प्रेम का प्रमाण देखते हैं?
- ध्यान दें कि इस पत्री में प्रेरित यूहन्ना कितना नम्र व्यक्ति है। आप कितने नम्र हैं? क्या आप इस प्रसंग में प्रेरित के व्यवहार से कुछ सीख सकते हैं।
- प्रभु यीशु की आज्ञाकारिता के लिये आप क्या मूल्य देने को तैयार हैं?
- आपकी आज्ञाकारिता किस प्रकार प्रदर्शित करती है कि आप परमेश्वर से कितना प्रेम करते हैं?

प्रार्थना के लिये

- क्या कोई है जिससे प्रेम करने में आपको परेशानी होती है? प्रभु से सहायता मांगें कि जैसे वह उनसे प्रेम करता है आप भी करें।

- प्रभु से वही नम्रता की आत्मा को मांगें जो उसने प्रेरित यूहन्ना को दी।
- प्रभु का धन्यवाद करें कि जब आप पाप में गिरते हैं तो वह आप पर कैसी कृपा करता है।
- परमेश्वर से मांगें कि वह आपकी सहायता करे कि आप उसकी व उसके वचन की गहरी आज्ञाकारिता में रहें।

14

शिक्षा में बने रहो

पढ़ें 2 यूहन्ना 7-13

दूसरी पत्री के पहले भाग में, यूहन्ना चुनी हुई स्त्री को प्रेम में चलने की चुनौती देता है। अब वह इस दूसरी चुनौती पर आता है। वह उसको याद दिलाकर आरम्भ करता है कि संसार में बहुत से भरमाने वाले हैं। स्वाभाविक है कि ये धोखेबाज़ मण्डली के सामंजस्य के लिये खतरा हैं। यूहन्ना बताता है कि धोखेबाज़ी को पहचाना जा सकता है क्योंकि वे नहीं मानते कि यीशु शरीर में आया। आइये इस कथन को अधिक विस्तार में देखें।

अपनी पहली पत्री में प्रेरित उनके विषय कहता है जो नहीं मानते कि यीशु शरीर में आया (देखें 1 यूह. 4:2-3)। इसका अर्थ क्या है? धरातल पर इसका अर्थ है पहचानना कि परमेश्वर के पुत्र के रूप में, यीशु ने मानव रूप लिया और पृथ्वी पर रहा। परन्तु बहुत ज़रूरी है इसका मानना 'यीशु का शरीर में आना' (पद 7)। शैतान मसीह की पृथ्वी पर मानवीय उपस्थिति के ऐतिहासिक तथ्य को मानता है। वह व्यक्ति जो सचमुच मसीह के 'शरीर में आने' को मानता है तो वह उसके आने के कारण को भी मानेगा। वह हमें हमारे पापों से बचाने आया। वह हमें शैतान व मृत्यु पर जय देने आया। यह विश्वास करना कि यीशु शरीर में आया यह अंगीकार करना है कि वही हमारी एकमात्र पाप व शैतान पर जय है। इस सब से आगे हमारी व्यक्तिगत

प्रतिक्रिया है इन ऐतिहासिक तथा धर्मज्ञान सत्यों के प्रति। जो पूर्णतया मसीह को मानते हैं और उसको स्वामी मान कर अपना जीवन देते हैं। मसीह के लिये कोई भी बलिदान चढ़ाना बड़ा नहीं है इसकी तुलना में वह जो उसने क्रूस पर किया। जो मानते हैं कि यीशु शरीर में आया वे उसे अपनी देह, मन व प्राण देते हैं। वे स्वयं को उसके प्रति वचनबद्ध करते हैं और उस बलिदान को ग्रहण करते हैं जो उनके पापों के बदले दिया गया। यूहन्ना अपने पाठकों से कहना चाहता है कि जो यीशु को नहीं मानते वे भरमानेवाले हैं। वह तो यहां तक कहता है कि ये लोग मसीह विरोधी हैं।

भरमानेवालों की एक और विशेषता होती है। पद 9 में यूहन्ना हमें बताता है कि 'जो कोई मसीह की शिक्षा में नहीं रहता, उसमें परमेश्वर नहीं।' यह कहना महत्वपूर्ण है कि सभी मसीह पर विश्वास नहीं रखेंगे। उनमें विभाजन होगा इस बात में कि बाइबल छोटे विषयों पर क्या सिखाती है। यहां यूहन्ना कह रहा है कि मसीह के कार्य व व्यक्तित्व के संबंध में कोई मतभेद नहीं हो सकता। सच्चे विश्वासी पहचानेंगे कि प्रभु यीशु परमेश्वर का पुत्र है जिसने मानवरूप धारण किया और हमारे मध्य रहा। उसने पृथ्वी पर सिद्ध जीवन जिया और सिद्ध बलिदान के रूप से प्राण दिये, हमारे पापों के बदले। उसने कब्र पर जय पाई और अब पिता के साथ स्वर्ग में राज्य करता है। वह उन सब को लेने आ रहा है कि उसके साथ सदा रहें जिन्होंने उसको ग्रहण किया। उसका कार्य ही अनन्त जीवन की एकमात्र आशा है। उनसे सावधान रहें जो इस शिक्षा से हटते हैं, वे भरमानेवाले हैं। मसीह की उनकी शिक्षा से हम भरमानेवालों को पहचानते हैं।

हमारा समस्त विश्वास प्रभु यीशु के व्यक्तित्व व कार्य पर आधारित है। यद्यपि कई शिक्षाएं हैं जो हम विश्वासियों में विभाजन कर सकती हैं, प्रभु यीशु के व्यक्तित्व व कार्य के बारे में, हम पूर्णतया सहमत हैं।

हमें यह बताकर कि हम भरमानेवालों को कैसे पहचानते हैं, यूहन्ना अब हमें सावधान करता है; जो भरमानेवाले कर सकते हैं। पद 8 में वह बताता है कि वे हमारे प्रतिफल को हमसे छिनवा सकते हैं। उनके लिये

प्रतिफल है जो अन्त तक विश्वासयोग्य रहेंगे। प्रका. वा. 2 व 3 कलीसियाओं के जयवन्तों को उनकी विश्वासयोग्यता के प्रतिफल की प्रतिज्ञा है। पौलुस 1 कुरि. 3:11-15 में इस प्रतिफल की बात करता है:

'क्योंकि उस नेव को छोड़ जो पड़ी है, और वह यीशु मसीह है: कोई दूसरी नेव नहीं डाल सकता। और यदि कोई इस नेव पर सोना या चान्दी या बहुमूल्य पत्थर या काठ या घास या फूस का रद्दा रखे तो हरेक का काम प्रगट हो जायेगा; क्योंकि वह दिन उसे बतायेगा इसलिये कि आग के साथ प्रगट होगा: और वह आग हरेक का काम परखेगी कि कैसा है। जिसका काम उस पर बना हुआ स्थिर रहेगा, वह मज़दूरी पायेगा। और यदि किसी का काम जल जायेगा तो वह हानि उठायेगा; पर वह आप बच जायेगा परन्तु जलते जलते।'

यहां पौलुस उस प्रतिफल की याद दिलाता है जो उनके लिये रखा है जो विश्वासयोग्यता के साथ प्रभु की सेवा करते हैं। परन्तु कुछ होंगे जिनके जीवन के काम परमेश्वर के दण्ड की आग से न बच पायेंगे। वे प्रतिफल की हानि को भुगतेंगे परन्तु बचाये जायेंगे, 'परन्तु आग से बच जायेगा, जलते जलते' (1 कुरि. 3:15)। हम इन प्रतिफलों को नहीं जाचें। यह कहना पर्याप्त होगा कि प्रतिफल को खोना उनके लिये भयानक बात होगा। वे इस प्रकार के स्वभाव के हैं कि कोई कहे, 'जब तक मेरे स्वर्ग में जाने की बात स्थिर है, तो मुझे चिन्ता नहीं कि प्रतिफल मिलता है कि नहीं।' यूहन्ना इस पत्री में चुनी हुई स्त्री से कह रहा है कि ये भरमानेवाले और झूठे शिक्षक स्त्री, पुरुषों को विश्वास से भटका सकते हैं कि इस प्रकार स्वर्ग में उनका प्रतिफल जाता रहे। यह शक्ति है उन लोगों के हाथ में जो दुष्ट भरमानेवाले हैं। वे व्यक्ति की आत्मिक गति को नष्ट कर सकते हैं। वे विश्वासियों को भटका सकते हैं और सत्य के मार्ग से उन्हें हटा सकते हैं।

इन भरमानेवालों का हम क्या करें? यूहन्ना हमें बताता है कि हमें न तो उनका स्वागत करना और न ही उनके दुष्ट कामों में शामिल होना है (पद 10-11)। ये लोग इतने खतरनाक होते हैं कि यूहन्ना अपने पाठकों

को सावधान करता है कि यदि वे उनके घरों में आयें, तो उनका स्वागत न किया जाये। इस पद की कम से कम तीन व्याख्या हैं।

पहली, कुछ हैं जो इस पद का अर्थ निकालते हैं कि यदि झूठे नबी आप के द्वार को खटखटायें, तो वचन द्वारा वर्जित है कि उनको घर में प्रवेश करने दें। अपने घरों में झूठे नबियों को अनुमति देने का अर्थ होगा कि परिवार के सत्य उस झूठी शिक्षा के आधीन होंगे। हम उन्हें अधिकार देते हैं कि अपनी झूठी शिक्षा को हमारी छत के नीचे फैलायें। यूहन्ना कहता है कि हमें ऐसा नहीं करना।

दूसरी, कुछ टीकाकार यहां उस साधन को देखते हैं जिसके द्वारा ये झूठे नबी स्वयं को सहारा देते हैं। झूठे नबी उन नगरों के अपने लोगों पर निर्भर करते हैं जिनमें वे भोजन व वस्त्र के लिये काम करते हैं। क्या यूहन्ना अपने पाठकों को बता रहा है कि वे इन झूठे नबियों को भोजन व सहारा न दें? ऐसा करने से हम उनको उनकी सेवकाई में प्रोत्साहन देते हैं। इसमें हम समझते हैं कि परमेश्वर नहीं चाहता कि उसके लोग उनके कामों में सहारा दें जो मसीह के विषय सत्य का प्रचार नहीं करते।

तीसरी, दूसरे टीकाकार हमें याद दिलाते हैं कि ये आरम्भिक दिनों की कलीसिया भिन्न लोगों के घरों में इकट्ठी होती थी। वे विश्वास करते हैं कि यूहन्ना यहां कह रहा है कि कलीसिया झूठे नबियों को अपनी मण्डलियों में न आने दे, कि वे झूठ का प्रचार करें।

यहां हमारे ध्यान देने लायक बात यह है कि यूहन्ना हमें आज्ञा दे रहा है कि झूठे नबियों के साथ हम सावधान रहें। वह निश्चित रूप से हमें प्रोत्साहित कर रहा है कि उनसे अलग हो जायें जो मसीह के विषय सत्य शिक्षा नहीं देते। वह हमें बता रहा है कि हम उनके कामों में उनको सहारा न दें। हम उनको अनुमति न दें कि वे हमारे घरों या कलीसियाओं में झूठ को फैलायें। हमें उनके लिये द्वार को बन्द करना है। और उन्हें प्रवेश नहीं करने देना कि वे हमारे भाई बहनों को गिरा दें और प्रभु भोज की विश्वासयोग्य सेवकाई के प्रतिफलों को उनसे खो देने दें।

अब यूहन्ना अपनी पत्री को समाप्त करता है अपने पाठकों को याद दिलाकर कि वह व्यक्तिगत रूप से उनसे मिलने आना चाहता है। वह निश्चय जानता है कि उसकी उपस्थिति उसके व उनके, दोनों के लिये बड़े आनन्द का कारण होगी। यह इशारा है कि वह उनसे कितना प्रेम करता है। न केवल यूहन्ना उनसे प्रेम करता है, परन्तु उस क्षेत्र के भाई बहन भी उसे प्रेम करते हैं जहां यूहन्ना वर्तमान समय में आराधना करता है। ये विश्वासी भी अपनी शुभकामनाएं भेजते हैं।

विचार करने के लिये

- क्या ऐसे झूठे शिक्षक आपके समाज में हैं? इस अध्याय में आपने जो सीखा उस पर आधारित कर, आप इनको क्यों झूठे शिक्षक समझते हैं?
- झूठे शिक्षकों से मित्रता करना उन्हें प्रभु में जीतने के लिये तथा उनको अपने घरों में आपके विश्वास को प्रभावित करने के लिये प्रवेश देने में क्या अन्तर है? आप इसे कैसे संतुलित करेंगे?
- आपको उन सावधानियों के विषय जो इन झूठे नबियों के विषय लेनी हैं कि वे आपको भरमा न सकें।

प्रार्थना के लिये

- क्या आप ऐसे लोगों को जानते हैं जो झूठी शिक्षा में पकड़े गये? कुछ क्षण प्रभु से उनके छुटकारे के लिये प्रार्थना करें।
- प्रभु से प्रार्थना करें कि शत्रु के चतुर आक्रमणों से हमें बचाये जो प्रभु यीशु के व्यक्तित्व व कार्य के संबंध में वचन की स्पष्ट शिक्षा में मिलावट करते हैं।
- अपनी कलीसिया में किसी झूठे शिक्षक के झूठ को उजागर करने के लिये परमेश्वर से प्रार्थना करें।

15

गयुस

पढ़ें 3 यूहन्ना 1-14

यूहन्ना की यह तीसरी पत्री एक व्यक्ति को लिखी गई जिसका नाम गयुस था। गयुस उन सब बातों का आदर्श उदाहरण था जो यूहन्ना अपनी पहली दो पत्रियों में सिखा रहा है।

गयुस प्रेरित यूहन्ना का प्रिय मित्र था। लगता है कि गयुस का स्वास्थ्य अच्छा न था। पद 2 में यूहन्ना उसकी प्रशंसा करता है। वह उसके स्वास्थ्य के लिये प्रार्थना करता है कि उसका शारीरिक स्वास्थ्य उसके आत्मिक स्वास्थ्य के समान अच्छा होगा। अपने दिनों में हम शारीरिक स्वास्थ्य पर देख रहे हैं कि बड़ा बल दिया जा रहा है। हम चिन्तित हैं कि हमारा वज़न बढ़ रहा है और शारीरिक रूप से हम कुरूप हो रहे हैं। परन्तु कितना बल हम अपने आत्मिक स्वास्थ्य पर देते हैं? गयुस का शारीरिक स्वास्थ्य खराब था, परन्तु आत्मिक रीति से वह बलवन्त था।

दूसरी बात गयुस के विषय कि निरन्तर विश्वासयोग्यता से 'सत्य में चलता है' (पद 3)। सत्य में चलने से संबंध है न केवल सत्य पर विश्वास करना। 'चलने' का अर्थ है उस सत्य पर चलना जिस पर हम विश्वास करते हैं। यह तो संभव है कि सत्य पर विश्वास करें और फिर उस पर न चलें। गयुस न केवल सत्य पर विश्वास करता है, परन्तु उसके अपने

व्यक्तिगत अनुभव में जीता है। जो वह प्रभु यीशु के विषय विश्वास करता है उसके दैनिक जीवन का भाग बन गया। यह उसके हर फैसले को प्रभावित करता है। इसका प्रभाव इस पर होता है कि उसका व्यवहार दूसरों के साथ कैसा है। यह उस पर प्रभावी होता है वह क्या कहता या करता है। परमेश्वर इससे कम हमसे आशा नहीं करता। मसीह का प्रेरित होने के नाते, यूहन्ना के हृदय में बड़ा आनन्द था; मसीह के सत्य के प्रति गयुस की वचनबद्धता को सुनकर।

गयुस को अपनी पत्री के केन्द्रिय संदेश की ओर यूहन्ना आगे बढ़ता है। वह गयुस की विश्वासयोग्यता के लिये गयुस की प्रशंसा करता है कि वह पवित्र लोगों का अतिथि सत्कार करता है। लगता है कि गयुस आगन्तुक मिशनरियों के लिये वह सब कर रहा था जो उस क्षेत्र से गुज़रते थे। पद 8 में यूहन्ना उसे प्रोत्साहित करता है कि सेवकाई में संयम बरते। परमेश्वर के कार्य को आगे बढ़ाने के लिये हर प्रकार के व्यक्ति की आवश्यकता होती है। कुछ हैं जो जाते हैं, कुछ हैं जो देते हैं। परमेश्वर ने गयुस को 'दानी' होने के लिये चुना। उसकी सहायता करना यात्री मिशनरियों के लिये अति महत्वपूर्ण था। इनमें से कुछ मिशनरियों ने यूहन्ना को बताया था कि गयुस का उनके लिये क्या महत्त्व था। पद 7 में यूहन्ना हमें बताता है कि परमेश्वर के ये सेवक उस 'नाम' (प्रभु यीशु) के लिये जाते थे। वे पूर्णतया गयुस जैसे विश्वासियों के सहारे पर निर्भर करते थे। यूहन्ना उसको अपने भले काम में जारी रहने को कहता है, 'ताकि हम सत्य के लिये मिलकर कार्य कर सकें' (पद 8)।

गयुस की कलीसिया में एक समस्या थी जो गयुस के लिये कभी कभी पवित्र जनों की पहुनाई को कठिन बनाती थी। उसकी कलीसिया में एक व्यक्ति है जो उसकी सेवकाई का विरोध करता है। उस व्यक्ति का नाम दियुत्रिफेस है। दियुत्रिफेस कलीसिया में 'पहला' होना पसन्द करता है (पद 9)। जो भी कोई उससे अधिक लोगों को आकर्षित करता है वह उसे पसन्द नहीं करता। उसका प्रेरितों या इन यात्री मिशनरियों से कोई संबंध नहीं रहता। वह प्रेरितों के लिये निन्दा फैलाता था और मसीही सेवकों के

लिये भी ताकि उनके सम्मान को ठेस पहुंचाये। वह प्रचारकों और शिक्षकों को वचन सुनाने के लिये अपने क्षेत्र में आने से प्रसन्न नहीं होता था। दियुत्रिफेस तो यहां तक करता था कि उन लोगों को कलीसिया से निकाल देता था जो इन आनेवाले प्रचारकों का स्वागत करते थे (पद 10)। वह एक नियंत्रण करने तथा गलत तरीके से काम करने वाला व्यक्ति था।

दियुत्रिफेस एक कड़वा व अहंकारी व्यक्ति था। वह सुसमाचार के काम में रूकावट था। वह केवल अपनी चिन्ता करता था। दियुत्रिफेस शैतान का उपकरण था ताकि उस कलीसिया में परमेश्वर के कार्य का नाश करे। यूहन्ना गयुस को कहता है कि वह व्यक्तिगत रूप से दियुत्रिफेस से मिलेगा। क्या दियुत्रिफेस कारण था इस बात का कि गयुस अतिथि सत्कार की सेवकाई में साहस खो रहा था? लगता है यूहन्ना यह पत्री भाई गयुस को उत्साहित करने के लिये लिख रहा था कि वह अपने भले काम में लगा रहे, दियुत्रिफेस के उसको रोकने के प्रयत्न के होते हुए भी।

क्या आप भी गयुस के समान निराश हैं? विरोध के कारण आप त्यागने को तैयार हैं? शायद आप अचम्भा करते हैं कि विरोध परमेश्वर की ओर से चिन्ह है कि आपको सेवकाई छोड़ कर कुछ और करना चाहिये। गयुस को लिखी यूहन्ना की पत्री शायद कई बार आपके लिये भी उत्साह का कारण हो सकती है। यूहन्ना के इस वचन के साथ पौलुस व पतरस के वचन भी जुड़े हैं: 'हम भले काम करने में हियाव न छोड़ें, क्योंकि यदि हम ढीले न हों, तो ठीक समय पर कटनी काटेंगे। इसलिये जहां तक अवसर मिले, हम सबके साथ भलाई करें, विशेष करके विश्वासी भाइयों के साथ' (गल. 6:9-10), 'हम भले काम करने में हियाव न छोड़ें' (2 थिस्स. 3:13), 'क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है कि तुम भले काम करने से निर्बुद्धि लोगों की अज्ञानता की बातों को बन्द कर दो' (1 पत 2:15)।

गयुस को परमेश्वर का एक प्रिय विश्वासयोग्य सेवक मानना मुझे पसन्द है जिसको प्रोत्साहन की आवश्यकता है। यूहन्ना परमेश्वर का वह उपकरण है जो टूटे व्यक्ति को सेवकाई में साहस के वचन देता है। काश आज यूहन्ना के शब्द आपके लिये भी प्रोत्साहन देनेवाले हों।

यूहन्ना हम से एक आदर्श पर चलने को कहता है। हम यहां देखते हैं कि यूहन्ना जो प्रचार करता है, उस पर चलता भी है। न केवल वह दूसरों से प्रेम करने के महत्व को बताता है वह उसको जीता है। जब वह किसी भाई को आवश्यकता में देखता है तो अपना कलम उठाकर उसे प्रोत्साहन की पत्री लिखता है।

यूहन्ना गयुस को याद दिलाता है कि वह दियुत्रिफेस के दुष्ट काम का अनुसरण न करे। यूहन्ना के अनुसार, दियुत्रिफेस परमेश्वर को नहीं जानता। यदि वह परमेश्वर को जानता, तो वह करता 'जो भला है' (पद 11)।

यूहन्ना गयुस से देमेत्रियुस के विषय पर बात कर अपनी पत्री को समाप्त करता है। वह गयुस को बताता है कि हर कोई देमेत्रियुस की प्रशंसा करता है और कि वह सत्य के अनुसार जीता है। इस स्थान पर वह देमेत्रियुस का ज़िक्र क्यों करता है? कुछ टीकाकार कहते हैं कि देमेत्रियुस वह व्यक्ति है जो गयुस को यूहन्ना की तीसरी पत्री देता है। कुछ समझते हैं कि दियुत्रिफेस को निन्दा की ज़रूरत थी कि गयुस को उसके विषय निश्चय दिया जाये। यद्यपि हम नहीं जानते कि यूहन्ना उसका ज़िक्र इस समय क्यों करता है, हम पाते हैं गयुस अकेला नहीं है दिमेत्रियुस में उसे एक और सच्चा विश्वासी मिल सकता है जिसके साथ वह संगति कर सकता है।

यूहन्ना गयुस को याद दिलाता है कि वह आकर व्यक्तिगत रूप से उससे मिलने की आशा करता है कि आपने सामने उससे बातचीत करे। दूसरे विश्वासियों की ओर से वह शुभकामनाएं भेजता है और गयुस से कहता है कि अपने मित्रों को नाम ब नाम शुभकामनाएं दे।

यह पत्री एक व्यावहारिक उदाहरण है कि किस प्रकार प्रेरित यूहन्ना उन बातों को व्यावहारिक बनाता है जब वह दूसरों को प्रेम करने को कहता है। यह हमें याद दिलाता है कि प्रभु की आज्ञाकारिता में कभी कभी दुख उठाना पड़ता है। ऐसे समय होते हैं जब हमारा विरोध होगा। मसीह की देह में हमें एक दूसरे की आवश्यकता होती है। गयुस की सेवकाई प्रेरित यूहन्ना

के लिये सच्चे आनन्द व साहस का साधन है और बदले में वह चाहता है कि एक ज़रूरतमन्द भाई के जीवन में प्रोत्साहन हो। मिलकर वे विश्वास में एक दूसरे का निर्माण करते हैं। काश, आज हमारे लिये भी यह एक सत्य बन सके।

विचार करने के लिये

- क्या आपके चारों ओर कुछ लोग हैं जिनको उनकी सेवकाइयों में प्रोत्साहन मिलना चाहिये? उनके लिये प्रोत्साहन होने के लिये आप व्यावहारिक रूप से क्या कर सकते हैं?
- क्या आपकी मुलाकात कभी दियुत्रिफेस जैसे लोगों से हुई है? क्या आपने कभी स्वयं को दियुत्रिफेस की स्थिति में पाया हैं। अहंकारी होकर दूसरों से ईर्ष्या की है जिन की सेवकाई आपसे अधिक महत्वपूर्ण दिखाई देती है? इन भावनाओं का असली कारण क्या है?
- यह प्रसंग हमें एक दूसरे के लिये आवश्यक होने के विषय क्या बताता है?

प्रार्थना के लिये

- अपनी कलीसिया में किसी ऐसे व्यक्ति की सेवकाई के लिये परमेश्वर का धन्यवाद करें जो पृष्ठभूमि में सचमुच एक आशीष रहा है।
- क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जो सताव महसूस करता है तथा सेवकाई में निरुत्साहित? उसके लिये परमेश्वर से कुछ क्षण प्रार्थना करें कि वह उसको उठाये व हियाव दे।
- परमेश्वर का धन्यवाद करें उस सहारे व प्रोत्साहन के लिये जो उसने आपको दिया, मसीह में मित्रों व साथी विश्वासियों के द्वारा।

यहूदा

16

विश्वास के लिये स्पर्धा

पढ़ें यहूदा 1-7

अपनी पत्री को आरम्भ करते हुए यहूदा अपना परिचय अपने पाठकों को देता है। वह स्वयं को साधारण सा 'यीशु मसीह का एक सेवक तथा याकूब का भाई', कहता है (पद 1)। टीकाकारों का विश्वास है जिस याकूब का यहां ज़िक्र है वह यीशु का भाई था। और यह बात यहूदा को प्रभु यीशु मसीह का भाई बताती है। यद्यपि वह स्वयं को यीशु का भाई कह सकता था, यहूदा इस बात को नहीं कहता। यीशु यहूदा के भाई से कहीं अधिक था- वह उसका उद्धारकर्त्ता था। यहूदा स्वयं को प्रभु का एक नम्र सेवक समझता था।

यहूदा अपनी पत्री उनको लिखता है जो, 'पिता परमेश्वर द्वारा बुलाये, व प्रेम किये गये हैं और यीशु मसीह के द्वारा संभाले गये हैं' (पद 1)। यह विचारना हमारे लिये महत्वपूर्ण है कि यहूदा यहां क्या कह रहा है। उसकी पत्री का सम्बोधन सभी विश्वासियों से है। वह विश्वासी की तीन प्रकार से परिभाषा देता है। यहूदा कहता है विश्वासी वह है जो 'बुलाया गया' है। यह बुलाहट साधारण तरीके से उद्धार के संदेश को सुन लेने से अधिक है। परमेश्वर का हाथ उन पर होता है जिनको उसने बुलाया है कि वे आकर व्यक्तिगत रूप से प्रभु यीशु मसीह को जानें।

जिनको परमेश्वर बुलाता है उनके जीवन के लिये उसका एक उद्देश्य होता है। उनको उद्धार के लिये बुलाया जाता है और सबके लिये भी परमेश्वर अपनी बड़ी चिन्ता के अनुसार उनको प्रशिक्षण देकर लैस करता है जिनको गर्भ में पड़ने से पहले ही चुनता है ताकि वे सेवकों के रूप में लाभदायक हों उन कामों में जिसके लिये उनको बुलाया गया है (गल. 1:15-16)। परमेश्वर का हाथ उन पर होता है जिनको वह बुलाता है इससे भी पहले कि वे जानें कि उनको बुलाया गया है।

ध्यान दें कि न केवल विश्वासी को 'बुलाया' जाता है, बल्कि उससे 'प्रेम' किया जाता है, पिता द्वारा। पिता का प्रेम अपनी संतान के लिये इतना महान था कि उसने स्वेच्छा से पुत्र को उनके लिए बलि करने भेजा ताकि उनके पाप क्षमा किये जायें और उसके साथ संगति में लाये जायें। इससे बड़ा कोई प्रेम नहीं। विश्वासी वे हैं जिनको परमेश्वर ने प्रेम किया है और जिनके लिए प्रभु यीशु मारा गया।

इससे आगे, यहूदा हमें बताता है कि प्रभु यीशु सच्चे विश्वासी को संभालता है। पौलुस रोमियों 8 में बताता है कि विश्वासी को प्रभु यीशु के प्रेम से कोई अलग नहीं कर सकता। सच्चे विश्वासियों को अनन्तकाल के लिये उद्धार में रखा जाता है जो प्रभु यीशु ने उन्हें दिया है। प्रभु यीशु उन्हें सुरक्षित रखेगा। इस विचार में एक अद्भुत निश्चय है। हम कितनी बार गिरते हैं? कितनी बार हमने अपने प्रभु को साथ नहीं लिया? इन कमियों व असफलताओं के होते, प्रभु यीशु हमें संभालता है। वह हमें कभी न छोड़ेगा न त्यागेगा।

अपने पाठकों के लिये यहूदा की इच्छा यह है कि दया, शांति व परमेश्वर का प्रेम उनका हो। यह उसकी इच्छा है कि विश्वासी हर दिन एक नई दया (पक्ष, जिसके योग्य हम नहीं) परमेश्वर की, हम अनुभव में पायें। परमेश्वर की दया उनके लिये सचमुच एक दैनिक अनुभव होता है जो विश्वास करते हैं। हम में से कोई उसका पक्ष पाने के योग्य नहीं, तौभी

उसकी दया प्रति प्रात: हम पर होती है जब हम पलंग से उठते हैं (विलापगीत 3:22-23)। वह प्रतिदिन हम पर अनुग्रह व पक्ष की, जिसके योग्य हम नहीं वर्षा करता है।

परमेश्वर की शांति व प्रेम, हमारा प्रतिदिन का अनुभव हो सकता है। यहूदा की इच्छा है कि उसके पाठक इस शांति व प्रेम का अनुभव अधिकाई से पा सकें। एक बात पक्की है, हम में से किसी ने उसके प्रेम व शांति की सीमा का अनुभव नहीं किया। परमेश्वर में शांति इतनी अधिक है कि इस जीवन में हम कभी उसका अनुभव नहीं कर सकते। यहूदा की इच्छा है कि उसके पाठक उस करूणा, शांति व परमेश्वर के प्रेम से प्रवाहित हों। हमारा परमेश्वर बहुत खर्चीला परमेश्वर है। अपने चारों ओर सृष्टि को देखें। क्षण भर के लिये सोचें सृष्टि के विस्तार के विषय जो उसने हमारे मनोरंजन के लिये रची। परमेश्वर अपनी करूणा, शांति व प्रेम का नाश नहीं करता। सीमा यह है कि हम कितना प्राप्त करना चाहते हैं।

यहूदा मूलत: इन विश्वासियों को लिखना चाहता है उस सामान्य उद्धार के विषय जिसके वे भागी हैं (पद 3)। ऐसी पत्री उठानेवाली व सकारात्मक हो सकती थी। जो उसने उनके विषय सुना, उसने उसकी पत्री के लहज़े को बदल दिया। उनको सामान्य उद्धार के विषय लिखने के बदले जो प्रभु यीशु में उनका है, वह उनको लिखकर चुनौती देता है कि विश्वास के लिये स्पर्धा करें जो उनको दिया गया है। इसका कारण यह है कि कुछ लोग उन में घुस आये हैं जो सत्य को बिगाड़ते हैं। ध्यान दें कि यहूदा उनके विषय क्या कहता है।

प्रथम, उन पर दण्ड तो बहुत पहले सुना दिया गया। पद 5-7 में इसके कई उदाहरण वह उन्हें याद दिलाता है कि किस प्रकार वे स्वर्गदूत जो मूल उद्देश्य से भटक गये, अनन्तकाल के लिये दण्ड के भागी हो गये। वह उन्हें सदोम व अमोरा नगरों के विषय भी याद दिलाता है जब वे प्रभु परमेश्वर से फिर गये। यहूदा झूठे शिक्षकों की तुलना जो उनको परेशान करते हैं, पतित स्वर्गदूतों व सदोम और अमोरा के निवासियों से करता है। उनका

दण्ड भी समान ही होगा। यह सशक्त कथन है। यहूदा इन झूठे शिक्षकों को परमेश्वर के शत्रुओं के रूप में देखता है।

दूसरे, ध्यान दें कि ये लोग 'चुपचाप विश्वासियों में घुस गये हैं' (पद 4)। हमारा शत्रु शैतान बड़ा चतुर है। उसकी इच्छा है कि विश्वासियों में झूठ के साथ प्रवेश करे। वह सार्वजनिक रूप में अपनी इच्छा की घोषणा नहीं करता। वह इच्छा के साथ नाश करने के लिये नाश करता है। हमें सदा सावधान रहना चाहिये। शैतान रुकेगा नहीं। वह अति साहसी है। वह हमारी प्रार्थना सभाओं, कलीसिया अराधनाओं में घुस जाता है। वह हमारी चर्च कमेटियों तक में घुस जाता है। वह उनका भी प्रयोग कर सकता है जो हमारी पुलपिट के पीछे खड़े होते हैं। जिनको वह साधारण लोगों के रूप में प्रयोग करता है। वे शायद अति आत्मिक भी नज़र आयें। इन मामलों में हम कैसे परखें?

हम इन झूठे शिक्षकों को कैसे पहचान सकते हैं? यहूदा हमें बताता है वे परमेश्वरहीन हैं (पद 4)। परमेश्वरहीनता को दो प्रकार से देखा जा सकता है। पहली, इसको उनकी जीवन शैली में देखा जा सकता है। पद 4 बताता है कि वे परमेश्वर के अनुग्रह को अनैतिकता की अनुमति के रूप में देखते हैं। जब कि ये लोग प्रेम व क्षमा के परमेश्वर के संदेश को देते हैं, परन्तु स्वयं पवित्रता का जीवन नहीं जीते। परमेश्वर के सच्चे सेवकों की जीवन शैली परमेश्वर की झलक को दिखाती है। झूठे शिक्षक परमेश्वर के प्रेम, क्षमा व अनुग्रह पर बल देते हैं और फिर इस शिक्षा को अपनी लालसाओं में जीने का बहाना बनाते हैं। वे बलवा करते हैं और जैसा चाहते हैं, करते हैं। हमें उनसे सावधान रहना है जो यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करते हैं, परन्तु उसके चरित्र का प्रतिबिम्ब नहीं हैं। हम झूठे शिक्षकों को उनके परमेश्वरहीन जीवन शैली के द्वारा परख सकते हैं।

दूसरे, यहूदा हमें बताता है कि ये झूठे शिक्षक 'इंकार करते हैं कि यीशु मसीह ही एकमात्र पराक्रमी परमेश्वर है।' (पद 4) हमें उनका इंकार करना है जो यीशु को एकमात्र प्रभु नहीं मानते। हमें उनका इंकार करना चाहिये

जो और देवी देवताओं के सामने घुटने टेकते हैं। ये झूठे शिक्षक उसको एकमात्र पराक्रमी नहीं मानते। वे अपने घुटने राजा के समान उनके सामने नहीं टेकते। वे उसकी आज्ञापालन नहीं करते। वे और सभों से हटकर उसको एकमात्र सत्य राजा व प्रभु मानकर उसकी सेवा नहीं करते। वे उसको अधिकार नहीं देते अपने एकमात्र प्रभु के रूप में। वे दूसरे धर्मों को भी स्वीकारने से और समाज में लोगों का पक्ष पाने के लिये काम करते हैं, परन्तु ऐसा करने के लिये उन्हें स्वीकार करना पड़ेगा कि उद्धार का मार्ग केवल एक ही है- केवल प्रभु यीशु के द्वारा। इन झूठे शिक्षकों की नियति क्या है? यहूदा विश्वासियों को बाइबल की कई घटनाएं याद दिलाता है जो प्रगट करती हैं कि झूठे शिक्षकों व नबियों का क्या होगा।

यहूदा अपने पाठकों को याद दिलाता है कि परमेश्वर किस प्रकार, अपने लोगों को मिस्र से छुड़ा कर लाया, और उनका नाश किया। जब जंगल में नाश कर दिया तो क्या वह इन झूठे शिक्षकों और नबियों को छोड़ देगा? उनकी नियति भी वही है जो परमेश्वर के उन लोगों की जो मूसा के दिनों में परमेश्वर से फिर गये। वे भी अपने पापों में नाश होंगे।

पद 6 में यहूदा अपने पाठकों को एक और उदाहरण देता है। यहां वह उन्हें स्वर्गदूतों की याद दिलाता है जो प्रभु परमेश्वर से फिर गये। वह यहां शैतान तथा उसकी दुष्टात्माओं की बात करता है जिन्होंने अपनी स्वर्गीय बुलाहट को अहंकार व घमंड में होकर छोड़ दिया। इन स्वर्गदूतों को अंधेरे में डाल दिया गया। वे उस अंधेरे में जंज़ीरों से बंधे हैं, अन्तिम न्याय के दिन तक। इसका अर्थ यह नहीं कि दुष्टात्माएं कार्यशील नहीं। पतरस हमें बताता है कि शैतान, 'दहाड़ते सिंह के समान घूमता फिरता है कि किस को देखे और निगल जाये' (1 पत. 5:8)। लोगों के असमान, शैतान व उसकी दुष्टात्माएं कभी पश्चात्ताप नहीं करेंगे, न ही पश्चात्ताप कर सकते हैं। मसीह मानव जाति के लिये मरा। वह शैतान और उसके स्वर्गदूतों के लिये नहीं मरा। उनकी नियति पर तो मुहर लग चुकी है। अभी वे अंधेरे में परमेश्वर से दूर रहते हैं और उनके लिये कभी अवसर न होगा कि सत्य के प्रकाश को देख सकें। शैतान और उसकी दुष्टत्माएं आग की झील में डाले

जायेंगे जहां उन्हें अनन्तकाल के लिये दण्ड दिया जायेगा क्योंकि उन्होंने परमेश्वर से विद्रोह किया (प्रका. वा. 20:15)। यदि परमेश्वर ने इन पतित स्वर्गदूतों को इस प्रकार दण्ड दिया, तो क्या उनको दण्ड न देगा जो सुसमाचार के सत्य को बिगाड़ते हैं और लोगों को उसके वचन के सत्य से फेरते हैं।

यहां यहूदा अन्तिम उदाहरण सदोम व अमोरा का देता है। इन नगरों के लोगों ने स्वयं को यौन अनैतिकता व बिगाड़ के हवाले किया। उन्होंने स्वयं को पवित्रता व सत्य के परमेश्वर के स्तर के प्रति चिन्तित न किया। इन झूठे शिक्षक व भविष्यद्वक्ताओं ने परमेश्वर के पवित्रता के स्तर से स्वयं को फेर दिया। (देखें पद 4) उन्होंने ऐसा जीवन जीने की चिन्ता नहीं की जिसकी आशा परमेश्वर उनसे करता है। यहूदा याद रखने को कहता है कि सदोम व अमोरा के साथ क्या हुआ। यदि परमेश्वर ने समस्त नगरों का नाश किया उनकी अनैतिकता तथा बिगाड़ के कारण, तो क्या वह उनको नाश करने से हिचकिचायेगा जो उसके लोगों को गलती की ओर ले जाते हैं और जो उसके पवित्र स्तरों के अनुसार नहीं जीते।

ये सारे उदारहण आज हमारे लिये चेतावनी हैं। ये झूठे शिक्षक यहूदा के आरम्भिक पाठकों के लिये खतरा थे कि वे परमेश्वर के कठोर दण्ड के आधीन न हो जायें। वे अपने कार्यों के परिणामों को भुगतेंगे। विश्वासियों को अनुमति नहीं कि इन झूठे भविष्यद्वक्ताओं व शिक्षकों के द्वारा भरमाये जायें जिन्होंने प्रभु यीशु का इंकार किया और परमेश्वर के वचन के स्तर के अनुसार जिये।

प्रभु यीशु का एक सेवक होना और उसको जगत के सामने प्रस्तुत करना यह एक अद्‌भुत ज़िम्मेदारी है। जिनको इस सेवकाई के लिये बुलाया गया है उसकी बुलाहट के अनुसार जीवन जियें। हमें ध्यान रखना है कि प्रभु मसीह यीशु को अपनी शिक्षा व प्रचार का केन्द्र बनायें। हमें ऐसा जीवन जीने का ध्यान करना चाहिये जो अपने वचन में परमेश्वर हमसे चाहता है। हमें न केवल परमेश्वर के प्रेरणा प्राप्त वचन के सत्य के प्रति

विश्वासयोग्य होना है, बल्कि हमारी जीवन शैली उसके वचन के स्तरों के साथ सामंजस्य रखे।

विचार करने के लिये

- क्या इन झूठे शिक्षकों व भविष्यद्वक्ताओं का हमारे देश की कलीसियाओं में कोई प्रमाण है?
- हम एक झूठे शिक्षक को कैसे पहचान सकते हैं?
- आज की अपनी कलीसियाओं में किन सत्यों के लिये हमें खड़े होना है?
- परमेश्वर के कार्य में शैतान के चुपके से घुसने का क्या प्रमाण है, जिससे आप सम्बद्ध हैं? वह किस प्रकार की गलतियों को सम्प्रेषित करने का प्रयत्न करता है?

प्रार्थना के लिये

- उनके लिये प्रार्थना में कुछ क्षण लगायें जो हमारे देश की पुलपिटों पर खड़े होते हैं परन्तु जो प्रभु यीशु मसीह को अपने उद्धारकर्त्ता व एकमात्र प्रभु के रूप में नहीं जानते।
- प्रार्थना करें कि परमेश्वर उनकी आंखों को खोले जो इन झूठे शिक्षकों को सुनते हैं ताकि जो भटक रहे हैं सत्य की सही शिक्षा के आधीन आ जायें।
- प्रार्थना करें कि हम पवित्र जीवन शैली के नवीनीकरण को उनमें देखें जो प्रभु यीशु के नाम को सुनाते हैं।

17

अधर्मियों पर हाय

पढ़ें यहूदा 8-16

यहूदा पर गत मनन में यहूदा ने अपने पाठकों को विश्वास में स्पर्धा के लिये कहा- झूठे शिक्षकों व नबियों का ध्यान करते हुए, जो उनके मध्य थे। इस विभाग में वह इन दुष्टों की दुष्टता के विषय बताना जारी रखता है। आइये विस्तार के साथ इस विभाग को देखें कि यहूदा इन झूठे शिक्षकों के विषय क्या कहता है।

अपने शरीर को प्रदूषित करते हैं (पद 8)

यहूदा झूठे शिक्षकों की बात करता है जो कलीसिया में घुस आये हैं 'स्वप्नदर्शियों' के रूप में। पवित्रशास्त्र में परमेश्वर कई बार अपने नबियों को स्वप्न दिखाता था ताकि उनके द्वारा अपनी प्रजा से सम्प्रेषण कर सके (गिन. 12:6; मत्ती 1:20)। क्या ये लोग जिनके विषय यहूदा कह रहा है, वे दावा करते हैं परमेश्वर का प्रवक्ता होने का? क्या वे दावा करते हैं परमेश्वर की ओर से लोगों के लिये स्वप्नों द्वारा प्रकाशन करने का? यहां ध्यान दें कि जब कि वे परमेश्वर की ओर से प्रकाशन पाने का दावा करते हैं, उनकी जीवन शैली उन दावों के अनुरूप नहीं होती जिनका वे दावा करते हैं। जब कि वे परमेश्वर के प्रवक्ता होने का दावा करते हैं, वे अपने ही जीवन को प्रदूषित करते हैं।

पद 4 में यहूदा हमें याद दिलाता है कि उनकी जीवन शैलियां अनैतिक हैं। वे दावा तो परमेश्वर के प्रतिनिधि होने का करते हैं, परन्तु अनैतिकता में जीते हैं। ये वे स्वप्नदर्शी हैं जो अपने शरीरों को अपवित्र करते हैं। उन पर भरोसा नहीं किया जा सकता। यह सत्य कि वे अनैतिक जीवन शैली में रहते हैं सिद्ध करता है कि वे परमेश्वर की ओर से नहीं।

अधिकार को अस्वीकारते हैं (पद 8)

ध्यान के लिये दूसरी बात यह है कि ये झूठे शिक्षक व भविष्यद्वक्ता अधिकार को स्वीकार नहीं करते। वे नहीं चाहते कि कोई उन्हें बताये कि यह बात उन्हें नहीं करनी चाहिये। वे किसी के प्रति उत्तरदायी नहीं। वे जिस प्रकार चाहते हैं जीते हैं और उन सबके विरुद्ध होते हैं जो उनकी जीवन शैली या शिक्षा का विरोध करते हैं। यदि वे परमेश्वर के सच्चे सेवक होते, तो वे मसीह की देह में निर्धारित अधिकार के आधीन होते। परन्तु वे अपने अतिरिक्त और किसी की नहीं सुनते।

स्वर्गीय प्राणियों की निन्दा करते हैं (पद 8-9)

न केवल ये झूठे शिक्षक कलीसिया में अधिकार को स्वीकार नहीं करते, वे स्वर्गीय प्राणियों की निन्दा भी करते हैं। ये स्वर्गीय प्राणी कौन हैं? संदर्भ हमें स्वर्गदूतों और दुष्टात्माओं के विषय बताता है (देखें पद 9)। यहूदा उदाहरण देता है कि पद 9 का क्या अर्थ है। यहां वह प्रधान स्वर्गदूत मीकाइल का उदाहरण देता है जिसका मूसा के मृत शरीर पर शैतान से वाद-विवाद हुआ। यही एकमात्र स्थान है जहां पवित्रशास्त्र इस घटना का वर्णन करता है। इस घटना की कहानी एक प्राचीन पुस्तक 'दि अस्मपशन ऑफ मोज़ेज़' में पढ़ी जा सकती है। यहां इस कहानी में स्वर्गदूत मीकाइल को मूसा की लाश को दफ़न करने की ज़िम्मेदारी दी गई। जब वह उसकी लाश को दफ़न करने ले जा रहा था तो शैतान उसके पास आया और उसने मूसा पर हत्यारा होने का दोष लगाया। मूसा जब मिस्त्र में था तो उसने एक मिस्त्री की हत्या की थी। शैतान ने कहा उस लाश पर उसका अधिकार है। मीकाइल ने न सामना किया, न उसने शैतान की निन्दा की परन्तु मामला प्रभु परमेश्वर पर छोड़ना बेहतर समझा। यद्यपि इस कहानी का शेष

पवित्रशास्त्र के स्तर पर नहीं देखा जा सकता, यहूदा इसका प्रयोग सत्य को बताने के लिये करता है जो वह हमें इस संदर्भ में सिखा रहा है।

मीकाइल ने शैतान की निन्दा नहीं की, परन्तु ये झूठे नबी स्वर्गीय प्राणियों की निन्दा करते हैं। हमें यह तो नहीं बताया गया कि वे क्या करते हैं। क्या हो सकता है कि वे स्वर्गदूतों व दुष्टात्माओं के अस्तित्व पर शक करते हैं? क्या वे महसूस करते हैं कि वे उनका आदर करने से ऊपर हैं? हम नहीं जानते।

यहूदा स्वर्गीय प्राणियों की सच्चाई को जानता है। उनकी शक्ति सत्य है। एक क्षण ध्यान दें कि शैतान ने अय्यूब के साथ क्या किया। याद करें कि किस प्रकार यीशु ने लोगों को शैतान के सताव से छुड़ाया। इनमें से कई लोग शारीरिक, भावनात्मक तथा आत्मिक बंधनों में इन दुष्टात्माओं से जकड़े हुए थे (मरकुस 9:25; लूका 13:11)। जब कि हम परमेश्वर की सामर्थ को समझते हैं कि वह जय देता है, तो हमें यह भी समझना चाहिये कि ये प्राणी खिलौने नहीं हैं कि उनसे खेला जाये या मुंह से निन्दा की जाये। ऐसा करना आग से खेलना है। यहां जिन झूठे भविष्यवक्ताओं की बात यहूदा करता है बहुत कम समझ रखते हैं उस आत्मिक लड़ाई के खतरे की जो उनके चारों ओर होती है। वे समझते हैं उन्हें अधिकार है कि जो चाहे कहें या करें, यहां तक कि अनजाने में उन शक्तिशाली बलों के लिये कठोर बातें बोलें।

किसी उस बात के विरोध में बोलना जिसे वे नहीं जानते (पद 10)

यहूदा हमें आगे बताता है कि वे झूठे शिक्षक जो दबे पांव उनमें घुस आये हैं वे लोग हैं जो उस किसी बात की बुराई में बोलते हैं जिसे वे जानते नहीं। यह हमने अभी देखा कि वे आत्मिक बलों के सत्य के विषय बहुत कम जानते हैं जो उनके चारों ओर हैं और इसलिये उनका अपमान करते हैं। मैं सोचता हूं इनमें से हरेक ऐसे लोगों से मिले होंगे जो किसी भी उस बात को प्रतिक्रिया देते हैं जिसको वे जानते नहीं और उसकी निन्दा करते हैं। ये वे हैं जो दूसरे विश्वासियों की आलोचना करते हैं, उनके आराधना

शैली का, उनके आत्मिक वरदानों का; क्योंकि कुछ बात उनकी समझ में नहीं आती, वे उन पर दोष लगाते हैं। ये लोग अधिकतर कड़वे व क्रोधी लोग होते हैं। यहूदा यहां स्पष्ट बोलता है।

ये झूठे शिक्षक जो उसके पाठकों के मध्य फैले हुए हैं वे 'तर्कहीन पशुओं के समान हैं।' वे परमेश्वर के प्रवक्ता होने का दावा करते हैं परन्तु उनके देवता उनके अपने विचारों से बड़े नहीं होते। वे हर उस चीज़ से इंकार करते हैं जिसे वे नहीं समझते।

कैन के तरीके पर चलते हैं (पद 11)

यहूदा कहता है, ये लोग 'कैन के मार्ग पर चलते हैं।' उत्पत्ति वर्णन करती है कैन के अपने भाई हाबिल की हत्या करने के विषय जब कि परमेश्वर ने उसकी भेंट को अस्वीकार किया और हाबिल की भेंट स्वीकार की। कैन ने क्रोध व ईर्ष्या में अपने भाई की हत्या की। वह यह विचार बर्दाश्त न कर सका कि परमेश्वर उसके भाई को ग्रहण करेगा और उसे नहीं। ये झूठे शिक्षक भी इसी प्रकार आत्म-केन्द्रित लोग हैं जिनकी एकमात्र लालसा यह है कि दूसरों से प्रशंसा व स्तुति प्राप्त करें। वे जानबूझकर दूसरों को दुःख पहुंचाते हैं ताकि अपने को ऊंचा दिखा सकें। उन्होंने कैन के बुरे कामों का अनुसरण किया है।

बिलाम जैसी गलतियों में पड़ते हैं (पद 11)

2 पतरस 2:15 में हमें बताया गया है कि बिलाम दुष्टता के आर्थिक प्रतिफल से प्रेम करता था। जब कि उसने इस्राएलियों को शाप देने से इंकार कर दिया। (गिन. 23-24) प्रका. वा. 2:14 हमें बताता है कि उसने इस्राएलियों को पाप में फंसाने के लिये एक षडयंत्र रचा। उस भोजन को खाकर जो मूर्तियो को चढ़ाया गया था और यौन अनैतिकता का (देखें गिन. 25:1-2)। इससे हम यह समझते हैं कि ये झूठे शिक्षक व भविष्यद्वक्ता परमेश्वर के लोगों को यौन अनैतिकता तथा मूर्ति पूजा में फंसाते हैं। ये सब वे अपने लाभ के लिये करते हैं। वे अनैतिक और भ्रष्ट लोग हैं, और वे दूसरों को मनाते हैं कि उनकी दुष्ट क्रियाओं का पालन करें।

कोरह के विद्रोह में नाश हुए (पद 11)

यहूदा इन झूठे शिक्षकों की तुलना कोरह से करता है। गिनती 16 में कोरह ने मूसा और हारून के अधिकार पर विरोध किया। परमेश्वर ने उसे व उसके अनुयायियों को दण्ड दिया; पृथ्वी ने फटकर उनको जीवित निगल लिया। ये झूठे शिक्षक जैसे कोरह, परमेश्वर के अधिकार से बलवा करते हैं और मसीह की देह पर अपनी इच्छा को थोपना चाहते हैं। उनका भी वही अन्त होगा- ईश्वरीय दण्ड!

प्रेम भोजों में दोषी (पद 12)

नये नियम युग के प्रेम भोज में विश्वासी लोग भाग लेते थे। इन भोजों के समय वे प्रभु भोज में भी शामिल होने लगे। इससे स्पष्ट है कि ये झूठे भविष्यद्वक्ता व शिक्षक प्रेम भोजों में भाग लेते हैं। वे कलीसिया में हैं परन्तु कलीसिया के शत्रु हैं। वे इन प्रेम भोजों में भाग लेते हैं तथा प्रभु की मेज़ में, परन्तु वे प्रभु के लिये जीते नहीं हैं। यहूदा के अनुसार इन भोजों से उनकी उपस्थिति दोषपूर्ण होती है, कलीसिया पर परमेश्वर की दृष्टि में एक धब्बा। वे इन भोजों में न बुलाये मेहमान होते हैं। उनको वहां नहीं होना चाहिये क्योंकि उनकी संगति प्रभु के साथ नहीं है, न लोगों के साथ परन्तु ध्यान दें, कि इन दुष्ट लोगों को प्रभु भोज में ज़रा भी समस्या नहीं होती। उन्हें अपनी दुष्ट जीवन शैलियों में कुछ दोष नज़र नहीं आता। उनके विवेक मर चुके हैं। वे पवित्रात्मा को रोकते हैं।

ऐसे चरवाहे जो केवल अपना पेट भरते हैं (पद 12)

'चरवाहे' का प्रयोग सामान्यता पवित्रशास्त्र में आत्मिक अगुवों के लिये होता है जिनकी मसीह की देह के प्रति ज़िम्मेदारी होती है। ये झूठे शिक्षक चरवाहे उसके लिये होते हैं कि अपने लिये उसमें से क्या प्राप्त कर सकते हैं। वे झुण्ड को अपनी लोभी लालसाओं के लिये प्रयोग करते हैं। वे परमेश्वर के लोगों की भलाई के लिये कुछ योगदान नहीं देते, परन्तु अपने लिये जो ले सकते हैं लेते हैं।

बिना जल के बादल (पद 12)

बिना जल के बादलों समान ये लोग बड़ी प्रतिज्ञाएं करते हैं परन्तु उन्हें पूरा नहीं करते। ईर्ष्या, अहंकार की हवा से उड़ते हुए परमेश्वर के लोगों के लिये कोई ताज़गी की वर्षा नहीं करते; बल्कि वे उसे सूखा व बंजर छोड़ते हैं। वे एक झूठा सुसमाचार सुनाते हैं जो मृत्यु की ओर ले जाता है।

पतझड़ के निष्फल वृक्ष (पद 12)

वे उन पतझड़ के पेड़ों के समान हैं जिनमें कोई फल नहीं। पतझड़ का पेड़ वह पेड़ होता है जिसको फल से लदा होना चाहिये। इन झूठे शिक्षकों का बाह्य रूप ऐसा होता है मानों वह उचित है, परन्तु अपनी सेवकाइयों में वे कोई फलदार नहीं होते। परमेश्वर के लोगों को देने के लिये उनके पास ऐसा कुछ नहीं होता। वे भोज की प्रतिज्ञा करते हैं पर लाते हैं अकाल।

समुद्र की प्रचण्ड हिलोरें जो अपनी लज्जा का फेन उछालते हैं (पद 13)

यहूदा इन झूठे शिक्षकों की तुलना समुद्र की प्रचण्ड हिलोरों से करता है जो अपनी लज्जा का फेन उठाती हैं। जब वे तट से टकराती हैं तो उनकी लज्जा का फेन व अधर्म उन सब पर फैलाया जाता है जो उनके निकट होते हैं। इन दुष्ट लोगों के साथ तो रहना भी अच्छा नहीं। उनका अहंकार व लज्जा उन सब पर पड़ती है जो उनसे बातें करते हैं।

ये डांवाडोल तारे हैं जिनके लिये सदा काल तक घोर अंधकार रचा गया है (पद 13)

यहूदा उनकी तुलना डांवाडोल अथवा टूटते सितारों से करता है। वे दिशा की प्रतिज्ञा करते हैं परन्तु उद्देश्यहीन हैं। वे अपने दण्ड की ओर गिर रहे हैं। उनका प्रकाश जलकर समाप्त हो रहा है। उनका भविष्य सबसे काला अंधेरा है जहां वे सदा रहेंगे। उनको सदा के लिये परमेश्वर के प्रकाश की उपस्थिति से दूर किया जायेगा।

ये तो असंतुष्ट कुड़कुड़ानेवाले हैं (पद 16)

पद 16 में यूहदा विश्वासियों को याद दिलाता है कि ये शिक्षक कुड़कुड़ानेवाले तथा गलतियां ढूंढने वाले हैं जिनके पास किसी भी विषय पर

कुछ अच्छी बात कहने के लिये नहीं है। वे कड़वे व क्रोधी लोग हैं। उनके लिये कुछ भी अच्छा नहीं। कोई भी काम उनकी दृष्टि में उनके तरीके से नहीं होता। कृपा का आत्मिक फल उनके जीवन का अंश नहीं है।

अपने मुंह से घमण्ड की बातें बोलते हैं और लाभ के लिये मुंह देखी बड़ाई किया करते हैं (पद 16)।

वे बढ़ चढ़ कर अपने विषय बोलते हैं। अपने लाभ के लिये वे लोगों को बताते हैं कि वे क्या सुनना चाहते हैं और अपनी पापमय लालसाओं की पूर्ति चाहते हैं। जैसा हमने पहले ही कहा, ये अपने में लीन आत्म-केन्द्रित लोग हैं।

दण्ड पायेंगे (पद 14-15)

यहूदा स्पष्ट बात करता है जब इन झूठे शिक्षकों के विषय बताता है। पद 14 व 15 में वह अपने पाठकों को याद दिलाता है उस न्याय दिवस की जो आ रहा है। हनोक ने इन लोगों के विषय भविष्यवाणी की। यह भविष्यवाणी परमेश्वर के प्रेरणा प्राप्त वचन में हमारे लिये लिखी नहीं गई परन्तु यहूदा पवित्रशास्त्र के अनुसार सच्चा है। प्रभु अपने हज़ारों स्वर्गदूतों के साथ आने वाला है उन अधर्मी कार्यों व कठोर बोले गये शब्दों का न्याय करने जो उसके विरुद्ध बोले गये। यहूदा कहता है, यह है नियति इन झूठे शिक्षकों व भविष्यद्वक्ताओं की जो उनकी मण्डली में आ गये।

विचार करने के लिये

- क्या कभी आपकी मुलाकात ऐसे लोगों से हुई है जिनका उपरोक्त विभाग में, वचन में जिक्र है? क्या चीज उन्हें कलीसिया में लाती है?
- क्या आपने स्वयं को कभी उन बातों की आलोचना करते पाया है जिनको आप नहीं समझे? क्या यह सही है? यह हमारे लिये क्यों एक परीक्षा है? समाधान क्या है?
- यहूदा इन लोगों की तुलना पतझड़ के फलहीन पेड़ों से करता है? क्या आपके जीवन में फल का कोई प्रमाण है? स्पष्ट करें।

- हमारे लिये क्या यह आवश्यक है कि मसीह की बड़ी देह के अधिकार के आधीन हों।

प्रार्थना के लिये

- परमेश्वर से मांगें कि आपके जीवन में धार्मिकता के फल का उत्पादन करे।
- परमेश्वर से कहें कि आत्मिक परख का वरदान अपनी कलीसिया पर उंडेले ताकि हम परख कर सकें कि कौन परमेश्वर की ओर से हैं और कौन शैतान की ओर से हैं।
- परमेश्वर का धन्यवाद हो कि हमारी कमज़ोरियों के होते, वह अपने उद्देश्य को आगे बढ़ाता है। उसका धन्यवाद करें कि हमारी तमाम कमियों पर वह प्रबल है।
- परमेश्वर से मांगें कि इन झूठे शिक्षकों को जागरुकता में लाया जाये सुसमाचार के सत्य के विषय में।

18

अपने को संभालो

पढ़ें यहूदा 17-25

यहूदा उन झूठे शिक्षकों के प्रति अपने पाठकों को चेतावनी दे रहा है जो उनके मध्य हैं। कलीसिया में का हर व्यक्ति एक सच्चा उचित मसीही नहीं है। कुछ लोग चुपचाप मण्डली में घुस आये हैं और बहुतों को गलती व अनैतिकता में घसीट रहे हैं। यही आज वर्तमान में हो रहा है। शैतान कलीसिया में घुस गया है उनके साथ जिनका काम है यीशु व उसके वचन को बिगाड़ना। तो जो युद्ध हमारे सामने है उसके लिये हम कैसे जीते हैं? इस विभाग में यहूदा विश्वासियों के लिये कई सुझाव देता है जो विश्वास के प्रति सच्चे रहना चाहते हैं जो उन तक पहुंचाया गया है।

उन बातों को याद रखना जो प्रेरित कह चुके हैं (पद 17)

यदि हमें विश्वास के लिये स्पर्धा करनी है और वह सब बनना है जो प्रभु हमें बनने को कहता है तो हमें याद रखना है कि प्रेरितों ने क्या कहा है। उन्होंने भविष्यवाणी की कि बहुत से ठट्ठा करनेवाले आयेंगे। ये लोग अपनी अधर्मी लालसाओं पर चलेंगे। शत्रु पर जय पाने का पहला कदम है उसकी उपस्थिति को पहचानना। शैतान भेष बदलने में चतुर है। अदन की वाटिका में उसके प्रवेश से लेकर सदा ही उसने अपनी पहचान को छिपाया है। वह हव्वा के पास सांप के भेष में आया। प्रेरितों के काम में उसने

हनन्याह को एक बड़ी राशि के साथ भेजा सुसमाचार के कार्य में सहायता के लिये। यहां यहूदा में हम देखते हैं कि वह चुपचाप विश्वासियों की मण्डली में घुसता है झूठे शिक्षक व भविष्यद्वक्ताओं को भेजकर (देखें पद 4)। जब हम समझ जाते हैं कि शत्रु अति चतुर है और कुछ भी कर सकता है सुसमाचार से हमें भटकाने के लिये, तो हम सावधान होंगे कि हम क्या ग्रहण करें। यहां पहली बात जो हमें समझनी है वह यह है कि यह तो पहले से बता दिया गया था कि ठट्ठा करने वाले तथा झूठे शिक्षक आयेंगे ताकि परमेश्वर की कलीसिया में घुस जायें। शत्रु कलीसिया को नाश करने पर तुला है। सावधान, कलीसिया उसकी दृष्टि में है। जब हम समझ जाते हैं कि शत्रु हमें देख रहा है, तो हम अपने शस्त्र पहन लेते हैं (इफि. 6:11-18)। जब हमें उसकी उपस्थिति का आभास होता है, तो हम चरम तक सावधान होते हैं। हम मूर्ख बन कर उस सब को ग्रहण न करें जो हम सुनते हैं। हमें अपना जीवन इस समझ के साथ जीना है कि शत्रु तैयार है कि किसी भी क्षण हमें निगल जाये। हमें विशेषकर ध्यान करना है इन अन्तिम दिनों में।

विश्वास में उन्नति करो (पद 20)

इस सत्य के प्रकाश में शत्रु कलीसिया को नाश करने पर तुला है, यहूदा अपने पाठकों को चुनौती देता है कि स्वयं का निर्माण सर्वोच्च पवित्र विश्वास में करें। उसकी लड़ाई कमज़ोरों से नहीं है। शैतान एक शक्तिशाली शत्रु है। यदि हमें उसके साथ लड़ना है, तो हमें अपने विश्वास में मज़बूत होना पड़ेगा। हम अपने पवित्र विश्वास में कभी बलवन्त न होंगे यदि हम पर्याप्त समय वचन में तथा परमेश्वर के लोगों के साथ व्यतीत नहीं करते। प्रभु के साथ हमारा खामोश समय हमारे जीवन की प्राथमिकता बन जाये। हम प्रभु को व उसके वचन को जानें यदि हमें शत्रु व उसकी तरकीबों को समझना है। इसका अर्थ होगा अपने जीवन में उन प्रभावों से छुटकारा पाना जो हमें प्रभु व उसके वचन से दूर करते हैं। यदि हमें इस युद्ध को जीतना है जो हमारे सामने है तो हमें स्वयं को प्रभु में बलवन्त करना होगा।

पवित्रात्मा में प्रार्थना करो (पद 20)

साथ ही हमारा प्रार्थना जीवन महत्वपूर्ण है। प्रार्थना द्वारा परमेश्वर का सामर्थ मिलता है। परन्तु ध्यान दें कि कोई भी प्रार्थना नहीं, जिसके विषय यहूदा कहता है। वह हमें प्रार्थना करने के लिये चुनौती देता है पवित्रात्मा में। आत्मा में यह प्रार्थना क्या है? कुछ इसकी व्याख्या भाषाएं बोलना में करेंगे। परन्तु इस व्याख्या की समस्या है कि सभी विश्वासियों के पास भाषा बोलने का वरदान नहीं होता (1 कुरि. 12:30) जब कि यह उसका ही भाग है जो यहूदा यहां कह रहा है, परन्तु इस प्रकार की प्रार्थना तक ही सीमित नहीं रहना है।

यह हमारे लिये अत्यन्त सरल है कि विश्वासियों के समान परमेश्वर के पास अपने विचारों के साथ आयें कि हम क्या प्रार्थना करें। परन्तु हमें सीखना है प्रार्थना की कला को परमेश्वर के आत्मा की अगुवाई व निर्देश में। सच्ची प्रार्थना पवित्रात्मा द्वारा प्रेरणा प्राप्त होती है। ताकि जैसे प्रार्थना करनी चाहिये वैसा करने के लिये हमें परमेश्वर के पवित्रात्मा की प्रेरणा व अगुवाई की आवश्यकता हो। कितना अन्तर हो जाता है जब हमारी प्रार्थनाएं पवित्रात्मा द्वारा प्रेरणा प्राप्त होती है। हमारी अपनी स्वाभाविक प्रार्थनाएं निष्प्राण व सूखी होती हैं। परन्तु आत्मा में प्रार्थना भावनापूर्ण और जीवन्त होती है। आत्मा हमारे द्वारा प्रार्थना करता है। वह हमारे हृदयों को गतिशील करता है और उन चीज़ों का बोझ डालता है जो परमेश्वर के हृदय का बोझ हैं (रोमि. 8:26-27; याकू. 1:5; यूह. 16:13-14)। हमें आत्मा में प्रार्थना करने की कला सीखनी है यदि हमें इस सत्य की लड़ाई को जीतना है।

अपने को परमेश्वर के प्रेम में बनाये रखें (पद 21)

आगे, यहूदा हमें बताता है कि हमें स्वयं को प्रभु के प्रेम में बनाये रखना है। जब कि यह सत्य है कि कोई भी वस्तु हमें प्रभु के प्रेम से अलग नहीं कर सकती, उस प्रेम का हमारा अनुभव पाप द्वारा ढंप सकता है। हमारे लिये यह भी काफी संभव है कि हम अपने 'पहले प्रेम' को छोड़ दें (प्रका. वा. 2:4)। यदि हम स्वयं को प्रभु के प्रेम में बनाये रखना चाहते हैं तो उस प्रेम को धीमा न पड़ने दें। प्रभु के लिये बहुत वर्षों तक जी लेने

के बाद, पौलुस को तब भी अचम्भा था पापी के लिये प्रभु यीशु के अद्भुत प्रेम पर। प्रभु यीशु मसीह का प्रेम अधिक और अधिक सत्य हमारे लिये होता जाये। क्या अपने प्रति परमेश्वर के प्रेम पर आपको अचम्भा होता है आज उससे अधिक जब आपने उसको अपना उद्धारकर्त्ता स्वीकारा था? उसके अपने प्रति प्रेम पर कभी अचम्भा करना न छोड़ें। उसको अनुमति दें कि आप को घेरे और अधिक घेरे, अपनी प्रेम पूर्ण बाहों में। इस जीवन की परीक्षाओं व दुःखों को प्रबल न होने दें शक करने के लिये कि वह आप से कितना प्रेम करता है। यदि शत्रु आपके मन में प्रभु के प्रेम के लिये शक डाल सकता है, तो शेष परीक्षाओं के लिये आप खुले होंगे। अपने को प्रभु के प्रेम में बनाये रखें।

अनन्त जीवन के लिये हमारे प्रभु की दया की प्रतीक्षा करें (पद 21)

हमें महसूस होता है कि हममें से किसी की भी वह दौड़ पूरी नहीं हुई जो हमारे सामने है। जबकि हमारी नियति स्वर्ग है तथा अनन्त जीवन, तो उस अनन्त जीवन का मार्ग हमें कई घाटियों व गहरी नदियों में से ले जा सकता है। चाहे मार्ग कितना भी ढलान वाला या घाटी में जल कितना भी गहरा क्यों न हो, हम जानते हैं कि प्रभु यीशु ने हमसे इस अनन्त जीवन में ले जाने की प्रतिज्ञा की है। वह हमें कभी त्यागेगा नहीं। वह हमें कभी छोड़ेगा नहीं। हमें उस पर भरोसा करना है। कोई उसे हमसे छीन नहीं सकता। काश उसकी करूणा व कृपा का निश्चय हमें कठिनाई व परीक्षा के समय प्रोत्साहित करे।

जो शक करते हैं उनके प्रति दयालु बनो (पद 22)

जब कि प्रभु यीशु ने अपनी करूणा की प्रतिज्ञा की है (जिस पक्ष के हम अयोग्य हैं) काश दूसरों के प्रति हमारे जीवनों में वह प्रमाणित हो, विशेषकर उनके लिये जो विश्वास में कमज़ोर हैं। शत्रु पर प्रबल होना केवल लम्बे मारकों के लिये नहीं है। एक दल के समान उसमें हम भी हैं। शक करनेवालों को उनके विश्वास से सशक्त व प्रोत्साहित करने के लिये उन तक पहुंचें। उन्हें हमारी और हमें उनकी आवश्यकता है।

दूसरों को आग में से झपट लो (पद 23)

ऐसे भी हैं जो झुण्ड से अलग खतरनाक रीति से भटक रहे हैं। उनमें से कुछ अपने उद्धारकर्त्ता के प्रति विद्रोह में हैं। दूसरे अनजाने में गलती में पड़ गये जो उन्हें उनके आत्मिक नाश तक पहुंचायेगा। हमें इन लोगों तक पहुंचना है और चेतावनी देनी है और वह सब करना है ताकि वे सही मार्ग पर आ सकें। अगली बार हम हो सकते हैं जिसको आग में से झपट कर निकालना हो।

भयपूर्ण दया दिखायें (पद 23)

जब हम मसीह के नाम से दूसरों तक पहुंचते हैं, तो भयपूर्ण दया दिखायें। यहां यहूदा किस भय के बारे में बात कर रहा है। क्या यह परमेश्वर के लिये गहरा आदर है? क्या हमें अपने जीवन में प्रभु का गहरा भय रखना है? क्या वह हमें बता रहा है कि हमारी प्रेरणा अपने सर्वशक्तिमान व पराक्रमी परमेश्वर के आदर के लिये हो? उसके सम्मान के लिये हमारी चिन्ता ऐसी हो कि हम उन तक पहुंचने के लिये कुछ भी करने को तैयार हों जो उस मार्ग पर नीचे जा रहे हैं जो प्रभु यीशु के नाम के लिये आदर का कारण नहीं होता। यदि हम लड़ाई जीतना चाहते हैं और विश्वास के लिये स्पर्धा करते हैं, तो हमारा हृदय ऐसा होना चाहिये जो परमेश्वर का भय माने और गम्भीरतापूर्वक उसके आदर की लालसा रखें।

उस वस्त्र से भी घृणा करो जो शरीर के द्वारा कलंकित हो गया है (पद 23)

न केवल हमें एक गहरे भय की आवश्यकता है और अपने परमेश्वर के लिये आदर की परन्तु हमें उस घृणा को भी विकसित करना है संसार के कलंक के लिये। हम प्रभु के लिये नहीं जी सकते यदि उन बातों से घृणा नहीं कर सकते जिनसे वह घृणा करता है। हम दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकते। पाप और इस संसार की चीज़ों में हमारा प्रेम प्रभु के साथ हमारे चलने को रोकते हैं। इन वस्तुओं को इस प्रकार देखें जैसे परमेश्वर उन्हें देखता है। हमें उन बातों से प्रेम करना सीखना है जिनसे परमेश्वर प्रेम करता है और घृणा करें जिनसे परमेश्वर घृणा करता है। पाप हमारे लिये

घृणित हो, और पाप की सूरत से भी हमें घृणा हो। पाप व कलंक से यह घृणा आ सकती है, यदि हम परमेश्वर के आत्मा को अनुमति दें कि हमारे जीवन में मण्डराये और सेवा करे। यह आ सकती है जबकि हम अपने सर्वोच्च पवित्र विश्वास में बढ़ें अपने उद्धारकर्त्ता के साथ समय बिताकर और आत्मा को अपने जीवन को बदलने की अनुमति देकर। याद रखें कि वह आपको गिरने से बचाने योग्य है (पद 24)।

अन्त में यहूदा हमें याद दिलाता है कि हमारा उद्धारकर्त्ता हमें गिरने से बचाने की पर्याप्त योग्यता रखता है। यह सच है कि शत्रु अति सामर्थी है, परन्तु हमारा उद्धारकर्त्ता और भी बलवन्त है। यदि हम उस पर भरोसा रखें तो वह हमें संभालता है। हमें गिरने की आवश्यकता नहीं। वह हमें ऊपर उठायेगा, यदि उस पर भरोसा रखें। वह किसी भी परीक्षा या जांच से बड़ा है जिसे शत्रु हमारे मार्ग में भेज सकता है।

यहूदा हमें याद दिलाता है यीशु हमें पिता की तेजोमय उपस्थिति में निर्दोष करके खड़ा करेगा। यह कैसे संभव है? यह संभव है उस क्षमा के द्वारा जो वह देता है। जब हम उसके स्तर से कम रह जाते हैं, हम उसके पास आ सकते हैं और अपने पापों से क्षमा पा सकते हैं। प्रभु यीशु की क्षमा के कारण, हम परमेश्वर के सामने निर्दोष खड़े हो सकते हैं। यहां ध्यान दें कि यह प्रभु यीशु का महान आनन्द है कि वह यह हमारे लिये करे। वह हमें बड़े आनन्द के साथ पिता के सामने निर्दोष खड़ा करता है। प्रभु पाप को क्षमा करने से अधिक किसी और चीज़ से आनन्दित नहीं होता। स्वर्ग में बड़ा आनन्द मनाया जाता है एक पापी के क्षमादान पर (लूका 15:7)। जब हम गिरते हैं, तो क्षमा के लिये हम उसके पास आयें। वह उन सबको क्षमा करने में आनन्दित होता है जो कम रह जाते हैं। यह जानना कितना अद्भुत है कि वह हमें क्षमा करने को इतना इच्छुक है जब हम उसके पास आते हैं।

यहूदा इस पत्री को समाप्त करता है प्रभु यीशु की स्तुति और धन्यवाद के साथ; उस जय के प्रकाश में जो मसीह में हमारा है, और पत्री को समाप्त

करने का यह कितना अच्छा तरीका है- 'उस अद्वैत परमेश्वर हमारे उद्धारकर्त्ता की महिमा, और गौरव और पराक्रम और अधिकार हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा' (पद 25)। उस सबके कारण जो प्रभु यीशु ने किया महिमा, गौरव व सामर्थ व अधिकार इस संसार के त्रिएक परमेश्वर तक पहुंचे। यीशु ने परमेश्वर को हम पर प्रगट किया। अनन्तकाल तक प्रभु यीशु के कारण, मानवीय होंठ उसकी स्तुति गायेंगे और उसके नाम को महिमा देंगे।

विचार करने के लिये

- इस विभाग में आप विशेषकर क्या चुनौती पाते हैं? क्या कुछ है जिसको आपको अपने जीवन में व्यावहारिक रूप देना होगा? यहूदा जो हमें कहता है उसे दोहरायें. अपने आपको विश्वास में रखने के बारे में और उन कुछ सत्यों को चुनें जिनको और अधिक पूर्णता के साथ आपको जीवन पर लागू करना है।
- यहां आप क्या प्रोत्साहन पाते हैं जो आपकी सहायता करे अपने आत्मिक जीवन में रूकावटों का सामना करने के लिये?
- क्या आत्मिक जीवन सरल होगा? वे कुछ रुकावटें क्या हैं जिनका सामना करने की आप आशा रखते हैं? यहां यहूदा क्या कहता है जो आपकी सहायता करे उन रुकावटों को हटाने में?

प्रार्थना के लिये

- कुछ क्षण प्रभु की स्तुति करें उस जय के लिये जो वह इस प्रसंग में प्रतिज्ञा करता है।
- क्या आप उस किसी को जानते हैं जो विश्वास से भटक गया हो? प्रभु से कहें कि आपको दिखाये कि इस व्यक्ति के लिये आप क्या कर सकते हैं कि उसे आग में से झपट लें।

- परमेश्वर से मांगें कि आपको एक बड़ा बोझ दे कि उसकी महिमा को जगत में प्रगट करें। उससे क्षमा मांगें उन समयों के लिये जिन में आप विफल रहे आगे बढ़ने से, जब उसके नाम व उसके वचन का अपमान हो रहा था।

- उसमें से एक सिद्धान्त को चुनें जिसका यहूदा इस प्रसंग में वर्णन करता है और प्रभु से मांगें कि आपकी सहायता करे कि उसको गहरे तौर पर अपने जीवन पर आप लागू करें।